

DURGA SAH MUNICIPAL LIBRARY
NAINI TAL
दुर्गासाह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल
Class no.
Book no.
Reg. no.

निराश प्रणयी

[पुश्किन के उपन्यास का हिन्दी अनुवाद]

अनुवादक :

श्री बलभद्र ठाकुर

प्रकाशक :

सन्मार्ग प्रकाशन

लाजपतराय मार्केट, दिल्ली।

प्रकाशक :

सन्मार्ग प्रकाशन

लाजपतराय मार्केट

दिल्ली

मूल्य :

दो रुपया

मुद्रक :

हकूमतलाल

विश्वभारती प्रेस

पहाड़गंज, दिल्ली।

(१)

अभी पतझड़ का मौसम शुरू ही था। एक दिन किरिलपेत्रविच् ने शिकार पर अनेक आयोजन किया। कुत्ता-घरों के लड़कों व शिकारियों को दूसरे दिन पाँच बजे सवेरे ही तैयार रहने का आदेश दे दिया गया। रसोई का सारा सामान और तम्बू उस स्थान को पहले ही भेज दिया गया जहाँ आज किरिले पेत्रविच् को जीमना था।

मुसाहबों के साथ आज वह कुत्ता-घर देखने चला। पाँच सौ से अधिक शिकारी कुत्ते वहाँ बड़े आराम की जिंदगी बसर करते। शायद अपनी बोली में मालिक की उदारता का गुणगान भी करते। तिमोश्का की देख-रेख में बीमार कुत्तों के लिये अस्पताल भी चला करता। निमोश्का ही उन कुत्तों का डाक्टर था। और इन सबसे अलग एक ऐसा भी स्थान था जहाँ कुत्तियाँ अपने बच्चों को दूध पिलातीं।

अपने सुन्दर कुत्ता-घरों पर किरिल पेत्रविच् को कम गर्व न था। अपने मित्रों के सामने उनके बारे में यह डींग हाकने से शायद ही कभी बाज आता यद्यपि उनमें से हर व्यक्ति उन्हें बीसियों बार देख चुका होता।

तिमोश्का व अपने प्रधान शिकारी के साथ आज वह टहलता जा रहा था। उसके आगे-पीछे मेहमान भी थे। किसी कुत्ता-घर के आगे जरा रुक जाता; बीमार कुत्तों के बारे में पूछ-ताछ करता, कम-बेश कड़ाई दिखाता, नौकरों को डाँटता-फटकारता और जिन कुत्तों को जानता उन्हें नाम लेकर पुकारता और पुचकारता भी।

किरिल पेत्रविच् के मुसाहब उसके कुत्ता-घरों की तारीफ़ करना अपना परम कर्तव्य समझते। केवल दुब्रोफ़्स्की ही बगैर कुछ बोले नाक-भौं सिकोड़ा करता। वह था अत्यंत भावुक शिकारी पर उसके पास थे केवल दो शिकारी कुत्ते और बरजोई नस्ल की एक कुतिया। अतः ऐसे शानदार कुत्ता-घर देख उसके मन में ईर्ष्या के भाव आये बिना न रह पाते।

किरिल पेत्रविच् ने उनसे पूछा—"तुम नाक-भौं क्यों सिकोड़ते हो भाई? क्या मेरे कुत्ता-घर तुम्हें पसंद नहीं?"

दुब्रोफ़्स्की ने उदास चेहरे से जवाब दिया—"कुत्ता-घर बहुत अच्छे हैं। मेरी समझ में तुम्हारे कुत्ते-जितने आराम में तुम्हारे नौकर भी नहीं रहते!"

इस पर शिकारियों में से एक गरम हो उठा। बोला—"हमें अपने लिये कोई शिकायत नहीं। भगवान् और मालिक का हम धन्यवाद करते हैं। लेकिन यह बिल्कुल सच है कि अनेक भद्र लोग इन कुत्ता-घरों से अपना घर बदलना चाहेंगे। यहाँ उन्हें अधिक आराम की जगह मिलेगी, बढ़िया भोजन भी मिलेगा।

अपने गुलाम की इस व्यंगभरी उक्ति पर किरिल पेत्रविच् ठठाकर हँस पड़ा। दूसरे मुसाहबों ने भी साथ दिया, यद्यपि वे जानते थे कि यह उक्ति उनपर भी लागू हो सकती है।

दुब्रोफ्स्की का चेहरा किंतु उतर गया। वह एक शब्द भी न बोला।

उसी क्षण कुछेक सद्योजात श्वान-शावक एक टोकरी में भरकर किरिल पेत्रविच् के सामने लाये गये। उसका ध्यान उधर लग गया। उनमें से दो को चुन शेष को पानी में डुबो देने का आदेश दे दिया। इसी बीच अन्द्रेई गव्रिलोविच् दुब्रोफ्स्की चुपके चुपके-से खिसक गया।

किरिल पेत्रविच् मेहमानों के साथ घर वापस आकर भोजन के लिये बैठा। अब उसे पता चला कि दुब्रोफ्स्की नहीं है। नौकरों ने बताया—"वे घर चले गये।"

किरिल पेत्रविच् ने उन्हें हुक्म दिया—"जल्दी उसका पीछा करो! उसे लौटा ले आओ!"

बगैर दुब्रोफ्स्की के वह कभी शिकार पर नहीं जाता था। कुत्तों के गुण-दोष परखने में दुब्रोफ्स्की की बुद्धि बड़ी ही तेज थी।

शिकारियों के आपसी झगड़े निबटाने में वह बेजोड़ मध्यस्थ माना जाता ।

जिस नौकर को उसका पीछा करने को भेजा गया था वह उसके बैरंग वापस आ गया । मुसाहबों की टोली उस वक्त भी उसके इन्तजार में आसन पर बैठी थी ।

नौकर ने बताया—" अंद्रेई गव्रिलोविच ने आज्ञा मानने या लौटने से साफ इनकार कर दिया ।"

किरिल पेत्रविच् पर रूसी ब्रांडी का नशा सवार था। सुनते ही आपे से बाहर हो गया । उसी नौकर के द्वारा अंद्रेइ गव्रिलो-विच् को कहला भेजा—"यदि वह हमारे साथ यहाँ रात बिताने को तुरंत वापस नहीं आ जाता, तो कह देना कि मेरा-उसका सम्बन्ध अब से खतम !"

नौकर ने फिर घोड़ा दौड़ाया । किरिल पेत्रविच् आसन से उठ खड़ा हुआ । मुसाहबों को विदाकर स्वयं शयनागार में चला गया ।

भोर होते ही उसने सबसे पहले पूछा—"अंद्रेई गव्रिलोविच् आया ?"

जवाब में उसे तीन ओर से मोड़ी हुई एक चिट्ठी दी गई किरिल पेत्रविच् ने सेक्रेटरी को आदेश दिया जोर से पढ़कर सुनाओ । उसने पढ़ा—

"प्रिय महाशय,

मैं तब तक आप के यहाँ आने में असमर्थ हूँ जब तक कि

आप अपने शिकारी परमोश्का को मेरे पास माफी माँगने भेज नहीं देते। यह बिल्कुल मेरी इच्छा पर निर्भर है कि मैं उसे दंड दूँ या क्षमा कर दूँ। न मैं आप के गुलाम का मजाक सुनने को तैयार हूँ न आप के परिहास, क्योंकि मैं भंड नहीं, कुलीन हूँ।

आपका आज्ञाकारी

अन्द्रेई दुब्रोफ्स्की।"

किरिल पेत्रविच् इसकी अद्भुत शैली और उद्दण्डता पर नहीं बल्कि इसमें लिखी बात पर नाराज हो पड़ा नंगे पाँव बिछौने से चिल्लाते हुए बोला—"क्या उससे माफी माँगने के लिये उसके पास मैं अपना नौकर भेजूँ? और यह उसकी इच्छा पर निर्भर है कि वह उसे दंड दे या क्षमा कर दे? वह समझ क्या रहा है आखिर क्या सच नहीं कि यह मुझपर वार है? मैं उसे इसका मजा चखाऊँगा! बता दूँगा कि किरिल पेत्रविच् से भिड़ने का क्या नतीजा होता है!"

उसने कपड़े पहने और पूरी शान-शौकत के साथ शिकार के लिये चल पड़ा। पर शिाकर आज जमा नहीं। सारे दिन की दौड़-धूप के बाद सिर्फ एक खरगोश उन्हें दिखाई पड़ा। और सो भी गायब हो गया। तंबू की दावत भी फीकी ही रही। किरिल पेत्रविच् को बिल्कुल रुची नहीं। उसने रसोइये को पीटना शुरू किया। मेहमानों पर बरस पड़ा। और लौटते समय जान-बूझकर अपने दल के साथ दुब्रोफ्स्की के खेतों को रौंदता आया।

उनके दिन बीत गये, पर दोनों पड़ोसियों की दुश्मनी बनी ही रही। दुब्रोफ्स्की किरिल पेत्रविच् के घर फिर लौटकर नहीं गया। पर उसके बिना किरिल पेत्रविच् का दिल नहीं लगा। उसके उद्देश से अनेक कटु शब्दों का प्रयोग कर-कर के अपनी परेशानी उसने और बढ़ा ली। स्थानीय भले लोगों द्वारा वे सारी बातें दुब्रोफ्स्की के कानों तक नमक मिर्च के साथ पहुँच ही गईं। फिर एक नई घटना ने सुलह की अन्तिम आशा पर भी पानी फेर दिया।

एक दिन दुब्रोफ्स्की अपने गाँव का चक्कर लगा रहा था कि अचानक देवदारु के वन में कुल्हाड़ी चलने की आवाज सुनाई दी, और मिनट भर बाद ही वृक्ष के गिरने की भी। वह चट उस ओर दौड़ा। जाकर देखता है कि किरिल पेत्रविच के नौकर चुप-चाप उसके जंगल से लकड़ी चुराये लिये जा रहे हैं। उसे देखते ही वे भाग निकले। दुब्रोफस्की और उसके कोचवान ने उनमें से दो को पकड़ लिया। उनके हाथ बाँध उन्हें घर ले आया, और साथ ही शत्रु के तीन घोड़े भी। दुब्रोफस्की का पारा गरम हो उठा। किरिल पेत्रविच के आदमी छटे बदमाश थे। लेकिन अब तक उसकी जमीनदारी में बदमाशी करने की हिम्मत नहीं पड़ी थी, क्योंकि अपने मालिक के साथ उसकी दोस्ती का उन्हें ख्याल

था। दुब्रोफस्की ने देखा की आपसी मन-मुटावा का अब ये लाभ उठा रहे हैं, तब उसने युद्ध के समस्त नियम ताक पर रख इन बन्दियों को वृक्ष की टहनियों से स्वयं दंडित करने का निर्णय किया और घोड़ों को अपने खेत में काम पर भेज दिया।

उसी दिन इस घटना की खबर किरिल पेत्रविच तक पहुँच गई। वह गुस्से में पागल हो उठा। पहले उसने किस्तेन्योफ़्का गाँव पर अपने गुलामों को लेकर हमला करने को सोचा। यह दुब्रोफस्की का गाँव था। गाँव में आग लगाकर मालिक को उसके घर में ही घेर लेने का निश्चय किया। ऐसे अभियान उसके लिए नये नहीं थे। किन्तु बहुत जल्द उसका विचार बदल गया। अपनी बैठक में चहल कदमी कर ही रहा था कि इसी समय खिड़की के बाहर उसने देखा, एक त्रोइका [1] उसके फाटक के आगे आ खड़ी हुई। चमड़े की टोपी और ऊनी कोट पहने एक नाटे कद का आदमी उसमें से निकल कर मैनेजर के कमरे की ओर चल पड़ा। त्रयेकुरोफ जिला-अदालत के अफसर को पहचान गया। उसका नाम शबाश्किन था। उसने उसे बुला भेजा। एक मिनट बाद बड़े अदब से झुककर सलाम बजाता शबाश्किन सामने आ खड़ा हुआ, और आदेश का इन्तजार करने लगा।

"न-म-स्ते............हाँ भई, तुम्हारा नाम क्या है? कैसे आये?"—किरिल पेत्रविच् ने पूछा।

"मैं शहर को जा रहा था सरकार! देम्यानोफ से मिल लिया

---

[1] तीन घोड़ों वाली गाड़ी

कि हुजूर का कोई हुक्म तो नहीं?"—शबाश्किन ने जवाब दिया।

"तुम ठीक समय पर आये······क्या है तुम्हारा नाम? मैं भूल गया। तुमसे कुछ कहना है। वोद्का का घूँट चढ़ाओ और सुनो!"

इस मित्रतापूर्ण स्वागत पर वकील को बड़ा आश्चर्य और आनन्द हुआ। उसने वोद्का का घूँट इनकार कर दी और बड़ी सावधानी से किरिल पेत्रविच् को सुनने लगा।

उसने कहा—"मेरे एक पड़ोसी है, एक छोटा-सा जमीनदार, लेकिन बड़ा गुस्ताख! मैं उसकी जमीनदारी छीनना चाहता हूँ तुम्हारी क्या राय है?"

"सरकार, अगर कोई दस्तावेज वगैरह, या······"

"वाहियात! दस्तावेज लेकर क्या करोगे? उससे निबटने के लिए तो राजाज्ञाएँ मौजूद हैं! बात दरअसल यह है कि कानून की परवाह किये बगैर उसकी जमीनदारी हड़प लेनी है, और उसे राह का भिखारी बना देना है। जरा ठहरो! वह जमीनदारी किसी समय हमारी थी। स्पित्सुन नामक किसी आदमी से खरीदी गई थी, और बाद को दुब्रोफ़्स्की के बाप के हाथ बेच दी गई। क्या हम इस नुक्ते का इस्तेमाल नहीं कर सकते?"

"नहीं सरकार! मुश्किल है। शायद बिक्री कायम है।"

"अरे भाई! जरा अच्छी तरह सोचो! कोई रास्ता निकालो।

"मिसाल के तौर पर, अगर हुजूर किसी उपाय से अपने पड़ोसी के उन कागजों को हथियाने की कोशिश करें जिनके बल पर वह जमीनदारी का मालिक बना बैठा है, तब जरूर......"

"हाँ, सो तो मैं भी जानता हूँ। लेकिन मुसीबत तो यह है कि आग लग जाने के कारण उसके सारे कागज जल गये।"

"क्या फरमाया हुजूर ? उसके सब कागज जल गये ? तब और हमें चाहिये ही क्या ? ऐसी हालत में आप कानूनी नुक्तों पर ही डटे रहें, और यकीन रखें कि सारा काम आपकी मर्जी के मुताबिक ही होगा।"

"तो, तुम्हारी यही राय है ? अच्छा, तो देखो, मैं सब कुछ तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ, और विश्वास रखो, मैं तुम्हें खुश कर दूँगा !"

बिल्कुल नीचे तक झुककर सलाम बजा शबाश्किन कमरे से बाहर हो गया और उसी दिन से काम में लग गया। उसकी तत्परता के फलस्वरूप ठीक एक पखवाड़े के बाद दुब्रोफस्की को शहर से एक कागज मिला जिसमें उससे कहा गया था कि माननीय जनरल त्रयेकुरोफ (किरिल पेत्रविच) ने दावा दायर किया है कि किस्तेन्योफका गांव पर दुब्रोफस्की का कोई हक नहीं, अतः वह जल्द-से-जल्द आवश्यक सफाई पेश करे।

इस अप्रत्याशित घटना से अंद्रेई गव्रिलोविच को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उसी दिन जवाब में एक कड़ा पत्र लिखकर

जताया कि "किस्तेन्योफका गाँव उसे अपने स्वर्गीय पिता से उत्तराधिकार के रूप में मिला है। उत्तराधिकार के नियमानुसार वह उसका मालिक है। इसमें त्रयकुरोफ को टाँग अड़ाने का कोई अधिकार नहीं। किसी भी बाहरी आदमी का इस संपत्ति पर दावा करना धोखा और फरेब के सिवा और कुछ नहीं।"

इस पत्र का शबाश्किन पर बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ा। एक तो उसे यह पता चल गया कि दुब्रोफस्की को कानूनी कारोबार का कतई अनुभव नहीं, और दूसरे, इस प्रकार के असावधान और तुनक-मिजाज आदमी को बिल्कुल बुरी स्थिति में डाल देना जरा भी कठिन नहीं।

जब अंद्रेइ गव्रिलोविच ने ठंडे दिल से इस मामले पर सोचा और विचारा, तो उसे मालूम पड़ा कि इस प्रश्न का विस्तार से उत्तर देना चाहिये। उसने एक वक्तव्य भी तैयार किया, जो बहुत कुछ उपयुक्त होते हुए भी पर्याप्त न था।

दुब्रोफस्की को कानूनी कार्रवाई का कोई अनुभव न था। उसने सामान्य व्यवहारिक बुद्धि का अनुसरण किया, जिसे शायद ही ठीक कहा जा सकता है, और जिससे पथ-प्रदर्शन में कोई मदद नहीं मिलती।

मुकदमा जारी रहा। अंद्रेइ गव्रिलोविच को अपने मामले के औचित्य पर पूरा विश्वास था। अतः वह निश्चिन्त रहा। घूस-रिश्वत में पैसे खरचने की न तो उसकी इच्छा थी, न उसकी वैसी स्थिति ही थी। वह सदा वकीलों के "बाजारू विवेक" का मखौल

उड़ाता, किन्तु उसने कभी यह सोचा भी न था कि उसे भी कानूनी हथकंड़े का शिकार होना पड़ेगा।

त्रयेकुरोफ़ मुकदमा जीतने के बारे में सोचने से बिल्कुल निश्चिंत था। शबाश्किन उसकी तरफ से काम कर रहा था। उसका नाम लेकर, धमकाकर, जजों को घूस देकर, और हर संभव तरीके से कानूनी नुक्तों की गलत व्याख्या करके वह अन्धेर गर्दी मचाये था। तथापि ६ फ़रवरी सन् १८···को अदालत की ओर से दुब्रोफस्की को इस आशय का एक आदेश-पत्र मिला कि वह अदालत में हाजिर होकर अपने अर्थात् लेफ्टिनेंट दुब्रोफस्की और जनरल त्रयेकुरोफ के बीच जमीनदारी के लिए चल रहे झगड़े का फैसला सुन जाय, और उस निर्णय-पर अपनी सहमति या असहमति का हस्ताक्षर कर जाय।

दुब्रोफस्की उसी दिन शहर को चल दिया। रास्ते में त्रयेकुरोफ़ से उसकी मुलाकात भी हुई, दोनों ने एक-दूसरे पर अपनी गर्व भरी दृष्टि भी डाली, और दुब्रोफस्की ने अपने प्रतिद्वन्द्वी के चेहरे पर ईर्ष्या भरी मुस्कुराहट को दौड़ते भी देखा।

नगर में पहुँचकर अंद्रेइ गव्रिलोविच एक परिचित व्यापारी के घर ठहरा। उसी के घर रात बिताई, और सवेरे जिला-अदालत पहुँचा। किसी ने उसपर ध्यान न दिया उसके बाद किरिलपेत्रविच पहुँचा। अपनी-अपनी कलम अपने कानों पर रखके क्लर्क लोग उठ खड़े हुए। वकीलों का समुदाय बड़े अदब से मिला। उसके

3285

ओहदे, उसकी उम्र और मोटे-ताजे शरीर का ख्याल करके उसके आगे एक आराम कुर्सी बढ़ा दी गई। वह बैठ गया। अंद्रेइ गव्रिलोविच, लेकिन खुले दरवाजे पर दीवाल के सहारे पीठ के बल पर खड़ा रहा। कमरे में गम्भीर शान्ति विराज रही थी। सेक्रेटरी बड़ी ऊँची आवाज में अदालत का फैसला पढ़ कर सुनाने लगा।

सेक्रेटरी का पढ़ना समाप्त हुआ। शबाश्किन खड़ा हो गया और बड़े अदब से झुककर त्रयेकुरोफ से उसपर हस्ताक्षर करने की प्रार्थना की। विजयी त्रयेकुरोफ ने उसके हाथ से कलम लेकर फैसले के नीचे लिख दिया कि वह इस फैसले से पूर्णतः सहमत है।

अब दुब्रोफस्की की पारी थी। सेक्रेटरी ने फैसले का कागज उसके हाथ धरा दिया, लेकिन वह निस्पंद खड़ा रहा। सिर किन्तु हिल रहा था। सेक्रेटरी ने पुनः एक बार उससे हस्ताक्षर करने को कहा, और याद दिलाया कि या तो वह उस फैसले पर पूर्णरूप से संतोष प्रकट करे या स्पष्ट शब्दों में असंतोष। यदि उसे अपने हक या अधिकार के औचित्य पर दृढ़ विश्वास है, और यदि वह निश्चित अवधि के भीतर अदालत के फैसले के विरुद्ध अपील करने की इच्छा रखता है, तो उसे यह करना ही पड़ेगा।

दुब्रोफस्की कुछ न बोला !……अचानक उसने सिर उठाया। आँखें उसकी जल उठीं। बड़ी दृढ़ता से आगे कदम बढ़ा सेक्रेटरी

को उसने इतने जोर का धक्का दे मारा कि वह नीचे गिरा। दावात उठाकर बड़े जोर से शबाश्किन के ऊपर दे मारी। सारा कमरा भीन हो उठा। दुब्रोफस्की बड़े जोर से चिल्लाया—"ऐ! भगवान् के गिर्जे के लिये कोई आदर नहीं! ऐ सुअर के बच्चो! जाओ जहन्नुम!"

इसके बाद किरिल पेत्रविच की ओर मुड़कर वह बोला—"जनरल! ऐसा कभी नहीं सुना! तुम्हारे शिकारी भगवान् के गिर्जे में कुत्ते ले जा रहे हैं। गिर्जे के अन्दर कुत्ते दौड़ रहे हैं! क्या इसे मैं तुम्हें दे दूँ?"

शोर-गुल सुनकर पहरेदार दौड़े आये। बड़ी कठिनाईसे दुब्रोफस्की पर काबू पा सके और उसे बाहर ले जाकर उसकी गाड़ी में बिठा आये।

इसके बाद सरकारी कर्मचारियों से घिरा त्रयेकुरोफ बाहर निकला। दुब्रोफस्की के आकस्मिक पागलपन से उसे बड़ी चोट पहुँची। इससे उसकी जीत का मजा किरकिरा हो गया। वकीलों को उससे शाबाशी की बड़ी आशा थी, किन्तु किसी से बगैर कुछ कहे सीधे वह घर को चला आया। छिपे पश्चाताप से हृदय उसका जल रहा था। इस प्रतिशोध से संतोष उसे मिल नहीं रहा था।

इस बीच दुब्रोफस्की ने बिछौना पकड़ लिया। जिले के डाक्टर ने जो सौभाग्य से अपने काम में बड़ा दक्ष था, उसके बदन से खून निकाला। खून चूसने वाले कीड़ों का इस्तेमाल किया। एक

स्पेनिश रुधिर-शोषक मक्खिका का भी प्रयोग किया । संध्या होते होते उसकी तबीयत बहुत कुछ ठीक हो गई। दूसरे दिन उसे किस्तेन्योफका गाँव में पहूँचा दिया गया, जो अब उसका नहीं रह गया था।

(३)

कुछ महीने बीत चले, किन्तु दुब्रोफूस्की बेचारा अब भी मुसीबत का शिकार बना रहा। यह सच है कि पागलपन के दौरे से वह मुक्त था, किंतु शक्ति उसकी क्षीण होती जा रही थी। अपने काम-धंधे उसने त्याग दिये। कमरे से शायद ही कभी बाहर निकलता, और एक साथ कई दिनों तक विचारों में डूबा रहता। येगरोव्ना नामक एक साध्वी महिला, जो किसी समय उसके पुत्र की भी धाय थी, इस समय उसकी भी धाय बन गई। वह बच्चे की भाँति उसकी देख-रेख करती, उसे भोजन की याद दिलाती सोने की ताकीद करती, खाना खिलाती और बिछौने पर सुला देती। अंद्रेई गव्रिलोविच् सिर्फ उसी का कहना मानता, और दूसरे किसी से कोई मतलब न रखता। अपने काम-काज और जमीनदारी के प्रबन्ध के सम्बन्ध में सोचने योग्य उसकी मानसिक स्थिति नहीं थी। अंततः येगरोव्ना ने यह सारी परिस्थिति उसके पुत्र दुब्रोफूस्की के आगे रखने का निर्णय किया। उसका पुत्र एक पैदल गारद का अफसर था और पीतरबुर्ग में रहा करता था। हिसाब

बही से एक पन्ना फाड़कर रसोइये हरितन से उसने एक पत्र लिखवाया। उस गाँव में पढ़-लिख सकने वाला यही एक आदमी था। उसी दिन उस पत्र को डाक में डालने के लिये शहर भेजा गया।

अब कथा के वास्तविक नायक से पाठकों का परिचय कराने का समय आ गया है। व्लादीमीर दुब्रोफ्स्की सैनिक विद्यालय में शिक्षित होकर गारद के कर्नल पद पर बहाल हुआ। उसकी पद-प्रतिष्ठा कायम रखने के लिये उसके पिता ने कुछ उठा न रखा। उस युवा को अपने घर से आशा से अधिक पैसे मिला करते। वह लापरवाह और महत्वाकांक्षी था। फिजूल खर्च भी बन गया था। ताश खेलता, कर्ज लेता। भविष्य की कोई चिंता नहीं। और अक्सर निकट या दूर भविष्य में किसी धनी महिला से शादी करने के सपने देखा करता।

एक दिन उसके साथी अफसर उसके कमरे में बैठे रंगीन धूमनलिका मुँह से लगाय धुआँ खींच रहे थे। उसी समय उसके नौकर ग्रीशा ने आकर उसे एक चिट्ठी दी। सील-मुहर और पतेका हस्ताक्षर देख उस युवा का ध्यान आकृष्ट हुआ। झट उसने चिट्ठी खोली, और पढ़ने लगा:—

हमारे प्यारे मालिक व्लादीमीर अद्रेयेविच्

मैं तुम्हारी पुरानी धाय तुम्हारे पिता के स्वास्थ्य के बारे में तुम्हें सूचित करना चाहती हूँ। उनकी हालत बहुत बुरी है। जब

सब वे ऊट पटाँग बोला करते हैं, और दिन भर एक बेवकूफ बच्चे की तरह बैठे रहते हैं। मेरे नन्हें! जीवन-मरण तो भगवान् के हाथ है, लेकिन तुम हमारे पास आ जाओ! तुम्हारे लिये घोड़े स्टेशन पर भेज देंगे। सुनने में आया है, जिला अदालत हमें किरिल पेत्रविच त्रयेकुरोफ के हाथ सौंपने जा रही है। उसका कहना है हम उसी के है। लेकिन हम तो सदा से तुम्हारे रहे हैं। पहले कभी ऐसी बात सुनने में नहीं आई। तुम पीतर बुर्ग में रहते हो। हम सबके माई-बाप 'जार' से इस बारे में निवेदन कर सकते हो। वे जरूर हमारी रक्षा करेंगे। पिछले पखवाड़े से बारिस हो रही है। संत निकोला दिवस के तुरन्त बाद ही गड़ेरिया रोधा मर गया। मैं अपने पुत्र ग्रीशा को आशीर्वाद भेजती हूँ। वह तुम्हारी सेवा में तत्पर तो है?

तुम्हारी भक्तिमती सेविका—
धाय येगरोव्ना बुज़ुरेफ।"

इस अस्पष्ट पत्र को व्लादीमीर दुब्रोफ्स्की ने बड़ी गहरी भावुकता के साथ बार-बार पढ़ा। बचपन में ही वह माँ से हाथ धो बैठा था, और आठ साल की उम्र से ही पीतर बुर्ग में रहने के कारण अपने पिता के बारे में भी उसकी जानकारी नहीं के बराबर थी। तथापि पिता के प्रति उसके हृदय में भावुकता से भरा स्नेह विद्यमान था। यद्यपि पारिवारिक जीवन के शाँतिमय आनन्द का उपभोग उसने कभी नहीं किया, तथापि इस जीवन के प्रति उसे मोह अवश्य था।

अपने पिता से विछोह की भावना से वह बड़ा दुःखी हुआ। अपनी धात्री का पत्र पढ़कर उस बूढ़े की दशा के बारे में जैसा कुछ वह सोच सका, उससे हृदय उसका भीत हो उठा। उसने देखा, उसका पिता एक गँवई गाँव में एक मूर्ख बूढ़ी धाय और बेवकूफ नौकरों के हाथ में अनाथ की तरह पड़ा है। दुर्भाग्य के साथ शारीरिक तथा मानसिक यातना अनुक्षण उसकी प्रतीक्षा कर रही है। इस जघन्य अवहेलना के लिये ब्लादीमीर ने अपने आपको धिक्कारा। महीनों से पिता के बारे में उसे कोई खबर न थी, और न खबर लेने की उसने कोई चेष्टा की। उसने सोचा था, वह कहीं किसी जगह जमीनदारी के काम में व्यस्त होंगे। अब उसने घर जाने का निर्णय किया। और साथ ही यह भी फैसला किया कि यदि पिता की बीमारी के कारण घर पर रहना उसका अनिवार्य हो गया तो वह सेना की नौकरी से इस्तीफा दे देगा।

उसके मन की विकलता का ख्याल करके उसके मित्र चले गये। एकांत पाकर ब्लादीमीर ने छुट्टी के लिये एक अर्जी लिखी। अपनी सिगार जलाकर गम्भीर चिंता में वह मग्न हो गया। अर्जी उसने उसी दिन भेज दी। दो दिन बाद अपने अनुगत भृत्य ग्रीशा के साथ कोच पर सवार हो वह घर को रवाना हो गया।

वह पड़ाव अब करीब होता आ रहा था, जहाँ से ब्लादीमीर

को अपने गाँव जाना होगा। अशुभ आशंकाओं ने उसके दिल में घर कर लिया था। उसे भय हो रहा था, उसका पिता मर गया होगा। वह सोच रहा था, देहात का निरानंद निवास उसकी प्रतीक्षा कर रहा है—एक गँवई गांव, पड़ोसियों से हीन। गरीबी और जिम्मेदारी बाँह फैलाये स्वागत को खड़ी थी, जिनसे उसका बिल्कुल परिचय न था।

पड़ाव पर पहुंचकर पड़ाव-मुंशी के पास जाकर उसने पूछा—"किराये पर घोड़े मिल सकेंगे?"

वह कहाँ जाना चाहता है वह जानने पर पड़ाव-मुंशी ने बताया—"किस्तेन्योफ्का के घोड़े आज चार दिन से आपके इन्तजार में खड़े हैं।"

बूढ़ा कोचवान अन्नन वहाँ चट हाजिर हो गया। वह बचपन में व्लादीमीर को छोटे बछेड़े पर बिठा के अस्तबल के चारों ओर घुमाया करता। व्लादीमीर को देखते ही उसकी आँखों में आंसू आ गये। उसने भूमि से शिर सटाकर नमस्कार किया और बताया कि बूढ़े मालिक अब भी जीवित हैं। चट उसने गाड़ी में घोड़े जोत दिये। व्लादीमीर उसी क्षण चल देने को बेचैन था, अतः खाने का प्रस्ताव उसने ठुकरा दिया। अन्नन ने छोटी कच्ची सड़क पर गाड़ी चला दी, और दोनों में बातचीत शुरू हो गयी।

"हाँ भई अन्नन, मेहरबानी करके जरा यह तो बताओ कि मेरे पिता जी और त्रयेकुरोफ में यह कैसा मुकदमा चल रहा है?"

"भगवान जानें बाबूजी ! जान पड़ता है—हमारे मालिक से किरिल पेत्रविच् का झगड़ा हो गया, और इसीलिये वह अदालत को चले गये, हालाँ कि अक्सर वह खुद अदालत बन जाते हैं। हम नौकरों का यह काम नहीं कि बड़ों के बारे में राय जाहिर करें। मगर सचमुच किरिल पेत्रविच् से झगड़ा मोल लेकर आपके पिताजी ने अच्छा नहीं किया। पत्थर को लात मारने से क्या फायदा ?"

"तब तो यही जान पड़ता है कि यह किरिल पेत्रविच् तुम लोगों के साथ जो चाहे कर ले ?"

"जरूर बाबूजी ! गवरनर से उसकी साँठ-गाँठ है। असेसर को वह कुछ समझता ही नहीं। लोग कहते हैं, पुलिस-कप्तान उसका नौकर है। बड़े आदमी हाथ जोड़े उसका मुँह जोहते हैं। और जैसा कि कहावत है—जहाज का इन्तजाम करो, सुअर के बच्चे आ ही जायेंगे।"

"क्या यह सच है कि वह हमारी जमीनदारी हमसे छीन रहा है ?"

"सुना तो ऐसा ही है बाबूजी ! बड़ी आफत है। हमारे मुखिया के घर में उस दिन ईसाइयत की विधि हो रही थी। उसमें किरिल पेत्रविच् के गाँव का कब्र-खोदक भी शामिल हुआ था। उसी ने बताया—'तुम्हारे अच्छे दिन अब लद गये। बहुत जल्द किरिल पेत्रविच् तुम लोगों को अपने अधीन कर लेगा!' और

निकिता लोहार ने उससे कहा—'हाँ भई सवेलिच् ! हमारे मेजबान को मत दुखा, मेहमानों को उदास मत कर ! किरिल पेत्रविच् अपनी जगह है और अंद्रेई ग्रविलोविच् अपनी जगह। और हम सब भगवान के और जारके हैं।' मगर तुम दूसरों का मुंह तो नहीं बन्द कर सकते ?"

"तो तुम नहीं चाहते कि किरिल पेत्रविच् तुम पर कब्जा करे ?"

"किरिल पेत्रविच् ? भगवान हमें बचावें ! भगवान हमारी रक्षा करें ! उसके अपने गुलाम अपनी किस्मत को रो रहे हैं ! अगर उसने दूसरे के आदमियों पर कब्जा जमाया, तो उन्हें वह सिर्फ लूटेगा ही नहीं, बल्कि चमड़ी उतार लेगा। नहीं नहीं ! भगवान अंद्रई गव्रिलोविच् को लंबी उमर दें। लेकिन यदि भगवान ने उन्हें बुला ही लिया, तो मेरे प्यारे, सिवा तुम्हारे हम किसी और को अपना मालिक होते नहीं देखना चाहते ! तुम हमें छोड़ना मत, और हम तुम्हारे साथ डटे रहेंगे।"

इन शब्दों के साथ अन्तन ने अपनी चाबुक उठाई, लगाम ढीली की, और घोड़े बड़ी तेजी से चल पड़े।

बूढ़े कोचवान की भक्ति देख दुब्रोफ्स्की का हृदय पसीज गया। वह चुप हो गया और विचारों में डूब गया। इस प्रकार घंटा भर से अधिक बीत गया। सहसा ग्रीशा ने चिल्लाकर उसका ध्यान भंग किया—"वह देखो पकोफ्स्कये का गाँव।"

दुब्रोफ्स्की ने सिर ऊंचा किया। एक चौड़ी झील के किनारे से उसकी गाड़ी जा रही थी। उसी झील से एक नदी निकलकर छोटी पहाड़ियों के बीच चक्कर काटती दूर जाकर अदृश्य हो गई थी। वृक्षों की घनी हरियाली के ऊपर एक पहाड़ी पर एक हरी छत और ईंटों के मकान का गुंबद दिखाई दे रहा था। उसी पर एक गिर्जाघर भी था, जिस पर पाँच गुबंदों के साथ एक पुराना घंटा-गुंबद भी दिखाई पड़ रहा था। किसानों की झोंपड़ियाँ, उनके कुएं और बाड़ियाँ, चारों ओर यत्र-तत्र बिखरी हुई।

दुब्रोफ्स्की ने जगह पहचान ली। उसे याद आ गया कि वह इसी पहाड़ी पर नन्हीं बालिका माशा त्रयेकुरोफ के साथ खेला करता था। माशा उससे दो साल छोटी थी, और उसी समय भावी सौंदर्य के चिन्ह उसके चेहरे पर नाच रहे थे। उसने उसके बारे में अन्नन से पूछना चाहा, किंतु शरम महसूस हुई। वह पूछ न सका।

जब वे उस मकान के निकट से गुजर रहे थे, बगीचे के वृक्षों के बीच उसने किसी महिला की पोशाक लहराते देखी। उसी समय अन्नन ने घोड़ों को चाबुक लगाई। जो महत्वाकांक्षा शहर और गाँव के कोचवानों में समान रूप से पाई जाती है, उसी से प्रेरित होकर एक साँस में ही पुल पारकर बगीचे से आगे वह बढ़ गया। उस गाँव को पीछे छोड़ते हुए वे एक पहाड़ी की ओर बढ़े। व्ला-दीमीर को अब देवदारू वन दिखाई दिया। जंगल की बाईं ओर

खुले मैदान में एक छोटा सा भूरे रंग का मकान और उस पर भूरे रंग की छत! उसकी छाती जोर-जोर से धड़कने लगी। किस्तेनयोफ् का और उसके पिता का शान शौकत हीन भवन उसके सामने खड़ा था।

दस मिनट बाद वह उस भवन के आँगन में पहुँचा। अनिर्वचनीय भावुकता के साथ उसने दृष्टि दौड़ाई। आज बारह वर्ष बाद वह जन्म भूमिका दर्शन कर रहा था। चहार-दीवारी से सटाकर जो देवदारू—तरु पंक्ति उसके बचपन में लगाई गई थी, वह बढ़कर शाखा-प्रशाखाओं से युक्त विशाल वृक्षों की अवली में बदल गई थी। जिस आँगन में किसी समय फूलों के गमले तीन धारियों में सजा के रखे जाते थे, और उनके मध्य बड़े यत्न से चौड़े पथ का निर्माण किया गया था, अब उसमें लंबी-लंबी घास उग आई थी। वह चरागाह बन गया था। उस वक्त भी एक घोड़ा उसमें चर रहा था। कुत्तों ने भौंकना शुरू किया, किन्तु अन्तन को पहचान वे चुप हो गये। अपनी झबरीदार पूछें हिलाने लगे। नौकर-चाकर अपनी झोपड़ियों से दौड़ पड़े, आनन्द के गम्भीर कलरव के साथ अपने मालिक को घेरकर खड़े हो गये। उत्कंठित भीड़ में से बड़ी कठिनाई से रास्ता बनाता दूब्रोफ्स्की पुरानी पौढ़ियों की ओर दौड़ पड़ा। येगरोव्ना उससे दालान में मिली और रोती हुई उसके गले से लिपट गई।

उस भली बुढ़िया को छाती से लगा दुब्रोफ्स्की बोला—

"मेरी प्यारी धाई! तुम्हारा क्या हाल है? तुम कैसी हो? पिता जी का क्या हाल है? वे कहाँ हैं?"

उसी क्षण एक लम्बा बूढ़ा आदमी गाउन और रात की टोपी पहने कमरे में आ पहूँचा। शरीर से दुर्बल, चेहरा रक्तहीन, चलने में बड़ी कठिनाई। वह धीमे स्वर में बोला — "कहाँ है वलोद्या?"

और ब्लादीमीर ने बड़े आवेश के साथ पिता को छाती से लगा लिया। बूढ़ा आनन्द का धक्का सम्हाल न सका। कमजोरी महसूस करने लगा। उसके पाँव लड़खड़ाने लगे। वह गिर पड़ता यदि उसका पुत्र उसे थामे न होता।

येगरोव्ना बोली—"आप उठकर क्यों आ गये? ... खड़ा होना मुश्किल है; फिर भी वैसा ही करने की कोशिश करेंगे, जैसा दूसरों को करते देखेंगे!"

बेचारे बूढ़े को बिछौने पर ले जाया गया। वह अपने पुत्र से बातें करना चाहता था, किन्तु मस्तिष्क उसका क्षुब्ध हो उठा। बातें उसकी ऊट पटांग होने लगीं। वह चुप हो गया, और धीरे धीरे निद्रा की गोद में समा गया। उसकी दशा देख ब्लादीमीर को बड़ा दुख हुआ। अपना सामान-असबाब उसने पिता के कमरे में मँगवाकर सबको वहाँ से चले जाने का हुकम दिया। नौकरों ने आदेश का पालन किया। अब उनका ध्यान ग्रीशा की ओर गया। वे उसे कमरे में ले गये। उसकी बड़ी आव भगत

की। सुन्दर भोजन और आतिथ्य से उसे संतुष्ट किया। प्रश्नों और अभिवादनों की उस पर झड़ी लगा दी।

(४)

घर आने के कुछ दिन बाद युवा दुब्रोफ़्स्की ने जमीनदारी संबंधी बातों की छान-बीन करनी चाहिये, लेकिन उसका पिता आवश्यक सूचना देने की स्थिति में न था। अंद्रेई गब्रिलोविच् के कोई एजेन्ट भी न था। कागज पत्र ढूंढ़ते समय सिर्फ वकील का लिखा एक पत्र और उसके जवाब में लिखे गये मसविदे की अस्पष्ट रूपरेखा उसे प्राप्त हुई। मुकद्मा सम्बन्धी पूरी जानकारी के लिये इतना पर्याप्त न था। अपने पक्ष के औचित्य पर विश्वास करके इस सम्बन्धी घटना की गति-विधि की प्रतीक्षा करने का उसने निर्णय किया।

इधर अंद्रेई गब्रिलोविच् की दशा दिन-पर-दिन बिगड़ती ही जा रही थी। ब्लादीमीर समझ गया कि अंत अब करीब है। अपना सारा समय पिता की सेवा में लगाने का उसने निश्चय किया। पिता उसका बिल्कुल पंगु हो चुका था।

इस बीच अपील का समय बीत गया। कोई प्रबन्ध हो न सका। अब किस्तेन्योफ्का त्रयेकुरोफ का हो गया। शाबाश्किन अपनी श्रद्धा-भक्ति प्रगट करने और बधाई पेश करने उसके

सामने उपस्थित हुआ। उसने पूछा—"उस नई जमीनदारी पर कब्जा जमाया जायगा सरकार? खुद जाकर या अपने किसी प्रतिनिधि वकील के द्वारा?"

किरिल पेत्रविच् का मन क्षुब्ध हो उठा। वह आप में नहीं था। प्रतिशोध की भावना ने उसे बहुत दूर ले जाकर पटक दिया था। उसका अंतःकरण उसे धिक्कार रहा था उसे पता लग गया था कि उसके प्रतिद्वंद्वी, उसके यौवन के पुराने मित्र की क्या दशा थी। विजय ने उसे आनंद नहीं दिया। शबाश्किन को उसने कड़ी निगाह से देखा। गालियाँ देना चाहता था पर कोई गाली ढूंढे पा न सका। अंत में गुस्सा भरे स्वर में बोला—"भाग यहाँ से। तुझसे बातें करने को मेरे पास वक्त नहीं!"

शबाश्किन ने जब देखा कि उसका यह गुस्सा मजाक नहीं तो सलाम बजाके भीगी बिल्ली की भाँति चट वहाँ से गायब हो गया। अब अकेले में किरिल पेत्रविच् चहल कदमी करने लगा। मुँह की सीटी बजाने लगा—विजय-बिजली का निर्घोष! उसकी मनोदशा क्षुब्ध होने का यह सदा का चिन्ह था।

अंत में गाड़ी तैयार करने का उसने आदेश दिया। एक गरम कोट पहन कर अकेला ही चल पड़ा। कोचवान तक को साथ नहीं लिया।

बहुत जल्द अंद्रेइ गव्रिलोविच् का घर उसे दिखाई दिया। परस्पर-विरोधी भावों से हृदय उसका आंदोलित हो उठा। प्रति

क्रोध और अधिकार की भावनाने कुछ सीमा तक उसकी उत्तम भावनाओं पर काबु पाने की चेष्टा की, पर अंत में उसे हारना पड़ा। उसने निर्णय कर लिया कि अपने पुराने पड़ोसी से वह सुलह कर लेगा, झगड़े का नामो निशान मिटा देगा। और उस की जमीनदारी उसे वापस कर देगा। इस सद्भावना से प्रेरित होकर किरिल पत्रे विच्‌ने अपने पड़ोसी के घर की ओर गाड़ी की गति तेज कर दी, और सीधे उसके आँगन में जा पहुँचा।

उस वक्त वह रुग्ण व्यक्ति अपनी रुग्ण-शय्या के पास की खिड़की के पास बैठा था। उसने किरिल पत्रे विच्‌ को पहचान लिया। उसके चहेरे पर हिंसा भरी उत्तेजना की छाया दौड़ने लगी। उसके पीले गालों पर लाली आ गई। आँखें लाल हो उठीं। अस्पष्ट स्वर में वह कुछ बोला भी। उसका पुत्र उसी कमरे में कागज-पत्र ढूँढने में लगा था। उसने शिर उठाया और पिता की दशा देख आशंकित हो उठा। भय और क्रोध के भाव जताता हुआ उसका वृद्ध पिता दरवाजे की ओर इशारा कर रहा था। उसी क्षण येगरोव्ना की गम्भीर-पदध्वनि उसके कानों में पड़ी, और वह सामने आकर बोली—मालिक ! मालिक ! किरिल पत्रे विच्‌ आया है ! दरवाजे के आगे खड़ा है !" और दूसरे ही क्षण वह एकाएक चीत्कार कर उठी—"हे भगवान ! यह क्या हो गया ? उसे क्या हो गया ?"

बीमार बूढ़े ने खड़े होने की इच्छा से तड़ फड़ अपने गाउन

का छोर पकड़ लिया। अपने को जरा ऊपर उठाया फिर लुढक कर नीचे गिर पड़ा। उसका पुत्र उसकी तरफ दौड़ा। बूढ़ा बेहोश पड़ा था। साँस का कहीं पता नहीं। उसे मूर्छा आ गई थी।

"जल्दी करो! शहर जाकर डाक्टर ले आओ! जल्दी करो।" —व्लादीमीर चिल्लाया।

"किरिल पत्रेविच् आपको बुला रहा है।"—कमरे में प्रवेश करते हुए एक नौकर ने कहा।

व्लादीमीर ने उसकी ओर गुर्रा कर देखा। बोला—"किरिल पत्रेविच् से कह दो कि वह चला जाय! कह दो उससे!"

अपने मालिक का आदेश पालन करने के लिए नौकर बेचारा खुशी से नाचता हुआ दौड़ पड़ा। निराशा के मारे येगरोव्ना की ठोडी हथेली पर आ गई। वह चिल्ला पड़ी—"बबुआ! तुमने तो अपना काम तमाम कर लिया! किरिल पत्रेविच् हमें जिंदा नहीं छोड़ेगा!"

व्लादीमीर क्रुद्ध होकर बोला—"चुप रहो धाई! जल्दी करो अन्तन को डाक्टर बुलाने भेजो।"

येगरोव्ना बाहर चली गई। अब उस बड़े कमरे में कोई न रहा। किरिल पेत्रविच को देखने के लिए सभी नौकर आँगन को दौड़ पड़े थे। बाहर आकर पीढ़ियों पर योगरोव्ना खड़ी हो गई। उसने ग्रीशा को अपने युवा मालिक का उत्तर देते सुना। सुनते ही उसका चेहरा अन्धेरी रात-सा काला बन गया। उसके ओठों

पर घृणाभरी मुस्कुराहट दौड़ गई। नौकरों पर गुर्राती निगाह उसने डाली और धीरे से गाड़ी चला दी। उसने उस खिड़की की ओर भी दृष्टि दौड़ाई, जहाँ क्षणभर पहले अन्द्रेइ गब्रिलोविच बैठा था लेकिन अब उसका पता न था ।

बूढ़ी धाय पौढ़ियों पर खड़ी रही। अपने नन्हे मालिक का आदेश भूल गई। अभी-घटी घटना के बारे में शोर-गुल के साथ नौकरों में आलोचना छिड़ गई थी। अचानक व्लादीमीर उसके पास आ पहुँचा और तीखे स्वर में बोला—"अब डाक्टर की जरूरत नहीं। पिता जी चल बसे ।"

खलबली मच गई। सभी नौकर अपने पुराने मालिक के कमरे की ओर दौड़ पड़े। मालिक आराम-कुर्सी पर बैठा था, जहाँ व्लादीमीर ने ले जाकर उसे रख दिया। दाहिना हाथ उसका नीचे की ओर लटक रहा था। शिर उसका झुका हुआ था। शरीर में प्राण-वायु का कोई चिह्न नहीं। वह अब तक ठंढा नहीं हुआ था, किन्तु मौत ने उसे विरूप बना दिया था।

येगरोव्ना ने मातम मनाना शुरू किया। नौकरों ने शव को घेर लिया। उन्होंने उसे धोकर सन् १७६७ में बनी वर्दी में सजा दिया और उसे उसी मेज पर रख दिया, जिसके सामने वर्षों से अपने मालिक से मिलने का इन्तजार में बैठा करते थे।

तीन दिन बाद अरथी का जलूस निकला। उस वृद्ध का शरीर कफ़न से ढंका हुआ मेज पर पड़ा था। चारों ओर मोमब-त्तियाँ जल रही थीं बैठकखाना नौकरों से भरा था। वे सब अरथी के साथ जाने को तैयार थे। व्लादीमीर और कुछ दूसरोंने अरथी को कंधे लगाया। पादरी आगे आगे चला, पीछे से पुरोहित। वे अरथी संस्कार की स्तुतियाँ पढ़ते जा रहे थे। किस्तेन्योफ्का के स्वामी ने अपने घर की देहली अन्तिम बार पार की।

अरथी जंगल से हो के चली। दूसरे छोर पर गिर्जा घर था। ठंढ का दिन था, पर सूरज चमक रहा था। पतझड़ का मौसम था। वृत्तों से पत्ते गिर रहे थे। जंगल पार होते ही लकड़ी का गिरजाघर दिखाई दिया। संतरे के पुराने वृत्तों से गिर्जे का प्रांगण परिवेष्टित था। व्लादीमीर की माँ का शव वहीं विश्राम कर रहा था। उसी के मकबरे की बगल में एक दिन पूर्व एक नई कब्रखोदी गई थी। किस्तेन्योफ्का के किसानों से गिर्जा भर गया अपने मालिक के प्रति अन्तिम सम्मान प्रदर्शित करने आये थे। सबसे आगे युवा दुब्रोफ़स्क एक कोने में खड़ा था। न उसकी आँखों में आँसू थे, न मुख में प्रार्थना के शब्द। किन्तु उसके चेहरे पर भयावनी छाया खेल रही थी।

उस करुण शव-संस्कार का अन्त हुआ। सबसे पहले व्लादी-

मीर ने शव का अन्तिम चुम्बन किया। उसके बाद घर के दूसरे लोगों ने। स्त्रियाँ जोर-जोर से रोने लगीं। किसानों ने जब तक बहते हुए आँसुओं को हाथ से पोंछा। व्लादीमीर और पूर्वोक्त तीन नौकर अरथी को आँगन में ले गये। सारा गाँव उसके पीछे चला। शवाधानी कब्र में रखी गई। सभी उपस्थित व्यक्तियों ने एक-एक मुट्ठी बालू कब्र में डाला। कब्र भर गई। सबों ने शिर झुकाया और घर को चल पड़े। व्लादीमीर बड़ी तेजी से चला। सब पीछे रह गये। आगे जाकर वह किस्तेन्योफ्का के जंगल में अदृश्य हो गया।

येगरोव्ना ने अपनी ओर से पादरी तथा अन्य पुरोहितों को भोजन के लिए निमन्त्रित किया। उसने बताया कि नन्हें मालिक उस वक्त मौजूद रहना नहीं चाहते। पादरी अन्नन उसकी पत्नी तथा अन्य पुरोधागण पैदल ही घर की ओर चल पड़े। रास्ते में येगरोव्ना के साथ वे मृत व्यक्ति के गुणों का बखान करते जा रहे थे। उसके नये उत्तराधिकारी के सम्भावित भविष्य की आलोचना भी करते जा रहे थे। क्योंकि त्रयेकुरोफ का दुब्रोफ्स्की के घर आगमन, और दुब्रोफ्स्की द्वारा किये गये उसके स्वागत की खबर पहले ही पड़ोस में फैल चुकी थी। और स्थानीय कूटनीतिज्ञों ने उसका महत्वपूर्ण परिणाम भी निश्चित कर लिया था।

पादरी की पत्नी बोली—"जो होनहार है होके रहेगा, मगर हमें बड़ा दुःख होगा अगर व्लादीमीर अंद्रेयेविच् हमारा मालिक

नहीं रहा। यह इन्कार नहीं किया जा सकता कि वह अच्छा आदमी है।"

येगरोव्ना बीच में ही बोल पड़ी—"मगर दूसरा हमारा मालिक बनेगा कौन ? किरिल पेत्रविच् की मर्जी है गुस्सा होते रहे, लेकिन अब उसे सच्चे मर्द से निबटना पड़ेगा। मेरा नन्हा, हमारा नया मालिक अपने पैरों पर खड़ा रह सकता है। उसके बड़े बड़े दोस्त हैं। किरिल पेत्रविच भी अक्खड़ है। लेकिन उसका होश गुम हो गया जब मेरे ग्रीशा ने उसे दुत्कारते हुए कहा—"निकल यहाँ से बूढ़े कुत्ते! भाग यहाँ से!"

पुरोहित बोला—"बाप रे! अरी येगरोव्ना! कैसे ग्रीशा को यह बात कहने की हिम्मत पड़ी ? मैं तो किरिल पेत्रविच् का चेहरा देख कर ही काँपने लगता हूँ! मेरी पीठ अपने आप झुककर सिकुड़ जाती है।"

पादरी ने कहा—"बिल्कुल व्यर्थ का घमंड! जैसे आज लोग अंद्रेइ गब्रिलोविच के अमर संस्मरण का गान कर रहे हैं, इसी प्रकार किसी दिन किरिल पेत्रविच् का करेंगे। शायद उसकी अरथी का जलूस शानदार होगा। लोग भी बहुतेरे शामिल होंगे। लेकिन भगवान के आगे सब एक जैसे!"

येगरोव्ना बोली—"पादरी जी, हम भी अड़ोस-पड़ोस के गाँवों को बुलाना चाहते थे, व्लादीमीर को यह भाया नहीं। हमारे पास सब कुछ है डरने की बात नहीं। अच्छी तरह परोसी

जायगी……लेकिन अब कोई दूसरा चारा नहीं। जब कि हमारे यहाँ दूसरे आदमी नहीं हैं, तो मेरे मेहमानो! मैं आपकी शक्ति भर खातिर करूँगी।"

शानदार स्वादिष्ट भोजन की आशा ने मेहमानों की गति में तेजी ला दी। वे सुरक्षित रूप से घर पर पहुँचे, जहाँ पहले से ही मेज बिछी थी, और वोद्का परोसी जा चुकी थी।

इस बीच व्लादीमीर वृक्षों की ओर घनी झाड़ियों में टहल रहा था, ताकि अपना शोक भूल जाए। रास्ता का ख्याल किये बिना ही चल रहा था, झुरमुटों में फँस रहा था, और बदन उसका क्षत-विक्षत होता जा रहा था। उसके पाँव दलदल में फँस जाते, किन्तु उसे कुछ पता ही नहीं। अन्त में एक खड्ड के निकट वह पहुँचा। चतुर्दिक् जंगल से वह जगह घीरी थी। एक जलस्रोत वृक्षों के बीच से धीरे धीरे बह रहा था। पतझड़ के कारण वृक्ष अधनंगे हो रहे थे। व्लादीमीर खड़ा हो गया। हरी शीतल घासों पर बैठ गया। उत्तरोत्तर उसके मन में निराशा की भावनाएँ जड़ जमाने लगीं……बड़ी व्यथा के साथ सोच रहा था, संसार में अब वह अकेला है। भीषण तूफानी बादलों से उसका भाग्याकाश आछन्न है त्रयेकुरोफ के साथ झगड़ने से नई विपत्तियाँ अनिवार्य हैं। उसकी छोटी जायदाद उससे छिन जाने का भय है ऐसी दशा में वह बिल्कुल कंगाल बन जायगा…वह उसी जगह चुपचाप देर तक बैठा रहा (उस जल-स्रोत की धीमी धारा तथा

उसके साथ बहते पत्रों को गौर से देखता रहा। इसमें उसे जीवन का जीता-जागता प्रतिबिंब दिखाई दिया—सत्य और सुन्दर प्रतिबिंब! देखा कि संध्या हो रही है। वह खड़ा हुआ, और घर का रास्ता ढूँढ़ने लगा। उस अपरिचित जंगल में कुछ देर भटकने के बाद एक रास्ते पर वह आ पहुँचा, जिसने सीधे उसे उसके घर के फाटक पर पहुंचा दिया।

पादरी अपने दल के साथ उसी की ओर आ रहा था। दुब्रोफ्स्की ने इसे असगुन समझा। अनजाने वह एक तरफ मुड़ गया, और वृक्षों के पीछे जा छिपा। पादरी अपनी मंडली के साथ गरमागरम बहस में मस्त था, अतः उसका ध्यान उसकी ओर नहीं गया।

पादरी अपनी पत्नी से कह रहा था—"हमें डरने की कोई जरूरत नहीं। नतीजा कुछ भी हो तुमसे कोई मतलब नहीं।"

उसकी पत्नी ने क्या उत्तर दिया, व्लादीमीर सुन न सका।

घर के निकट पहुंचते ही उसने कई आदमी देखे। किसानों और घर के गुलामों की भीड़ आँगन में इकट्ठी थी। दूर से ही व्लादीमीर असाधारण शोर-गुल और कोलाहल सुनता आ रहा था। गोदाम के पास दो त्राइकाएँ खड़ी थीं। सामने की पौढ़ियों पर सरकारी वर्दी पहने कुछ अपरिचित व्यक्ति खड़े-खड़े आपस में बातें कर रहे थे अन्तन को अपनी ओर दौड़ते देख क्रुद्ध स्वर में उसने पूछा—इसका मतलब क्या है? वे कौन खड़े हैं? वे क्या चाहते हैं?"

इस बूढ़े ने चुपके से जवाब दिया—"हाय, हाय! बाबू जी, ये पुलिस के आदमी है! वे तुमसे हम सबों को छीनकर त्रयेकुरोफ के हवाले कर रहे हैं!"

व्लादीमीर का शिर नीचा हो गया। अपने अभागे मालिक को घेरकर उसके घर के गुलाम खड़े हो गये। उसका हाथ चूम-चूमकर सबके सब चिल्ला उठे—"आप हमारे माई-बाप हैं! आपको छोड़ और किसी को हम मालिक बनाना नहीं चाहते। हमें वचन दें बाबूजी! फिर उनसे हम निबट लेंगे आपके लिए हम जान तक कुरबान करने को तैयार हैं।"

निराशामयी उत्तेजना के साथ व्लादीमीर ने उनकी ओर देखा। बोला..."शान्त रहो! मैं अभी अफसरों से बात करता हूँ।"

भीड़ में से एक एक ने चिल्ला कर कहा—"जरूर बात करें बाबू जी! इन हरामजादों की अकल रास्ते पर लायें!"

व्लादीमीर अफसरों के निकट पहुँचा! शबाश्किन शिर पर हैट लगाये, कमर पर हाथ रखे रोब के साथ चारों ओर घूम रहा था। एक पचाससाला हट्टा-कट्टा लम्बा जवान पुलिस कप्तान था। मुँह उसका लाल था। मूँछें लहरा रही थीं दुब्रोफस्की को देखते गला साफ करके रूखे स्वर में वह बोला:—

"हाँ, मैं आपसे उन्हीं बातों को दुहराना चाहता हूँ, जो पहले कही जा चुकी हैं। जिला-अदालत के फैसले के अनुसार आजसे

आप अपने को किरिल पेत्रविच् त्रयेकुरोफ के अधीन समझें। उसके प्रतिनिधि मि० शबाश्किन यहां मौजूद हैं। ये आपको जैसा जो भी आदेश दें उसका पालन करें।···और तुम औरतों से यही कहना है कि इन्हें प्यार करो, इनकी इज्जत करो! ये तुम्हें बहुत चाहते हैं।"

इस मजाक पर पुलिस-कप्तान ठठाकर हँस पड़ा। शबाश्किन् और दूसरों ने भी उसकी नकल की। मारे क्रोध से व्लादीमीर की छाती उबलने लगी। उसने उपेक्षा भरे स्वर में उस आनन्दी पुलिस-कप्तान से पूछा—"माफ कीजिए, मैं पूछना चाहता हूँ कि इसका मानी क्या है?"

उस घमंडी अफसर ने जवाब दिया—"हाँ जनाब, इसके मानी हैं, कि हम इस जमींदारी का कब्जा किरिल पेत्रविच त्रये-कुरोफ को दिलाने और दूसरे आदमी को यहाँ से निकालने आये हैं।"

"लेकिन मेरी समझ से तो आपको मुझसे बातें करनी चाहिए थीं, न कि मेरे नौकरों से। और मालिक से कह देना चाहिए था कि जमीनदारी अब उसकी नहीं रही।···"

शबाश्किन ने अपमान भरी निगाह से घूरते हुए कहा—"पहला मालिक गब्रिल दुब्रोफस्की का लड़का अंद्रेई तो भगवान की दया से स्वर्ग सिधार गया। और तुम कौन हो? हम तुम्हें नहीं जानते, और न जानना चाहते हैं!"

भीड़ में से किसी ने कहा—"बाबूजी ! ये हमारे छोटे मालिक श्रीमान व्लादीमीर अंद्रेयेविच हैं।"

पुलिस-कप्तान आँखें तरेरकर बोला—"यह कौन है जो बोलने की हिम्मत कर रहा है ? मालिक कैसा ? व्लादीमीर अंद्रेयेविच कौन होता है ? तुम्हारे मालिक हैं किरिल पेत्रविच त्रयेकुरोफ...सुनते हो बेवकूफो ?"

उसी आवाज ने उत्तर दिया—"नहीं साहब !"

पुलिस-कप्तान चिल्लाया—"क्या ये बगावत करेंगे ? हाँ जी जेठ-रैयत ! इधर तो आओ !"

जेठरैयत आगे आया।

"पता तो लगाओ कौन आदमी मुझ से बोलने की हिम्मत करता है ! मैं उसे मजा चखाऊँ !"

जेठरैयत ने भीड़ की ओर मुड़के पूछा कि बोलने वाला कौन है, लेकिन सभी चुप रहे ! तुरन्त इसके बाद सबसे पीछे के लोगों में एक धीमी आवाज शुरू हुई और वह कोलाहल में परिणित हो गई। मिनट भर के भीतर ही एक भयानक हो-हल्ला शुरू हो गया। पुलिस-कप्तान ने अपना स्वर धीमा करके उन्हें समझाने की सोची।.........किसान चिल्ला उठे—"उसकी परवाह मत करो; इन्हें पकड़ लो बच्चो !"

भीड़ आगे बढ़ी। शवाश्किन और उसके साथियों ने झटपट कमरे के अन्दर घुसकर भीतर से किवाड़ बन्द कर लिया। वही

आवाज पुनः चिल्लाई—"आगे बढ़ो बच्चो !"

और भीड़ दरवाजे पर धक्के देने लगी।

अब दुब्रोफ़स्की चिल्लाया—"रुक जाओ मूर्खो ! तुम लोग क्या कर रहे हो ? तुम लोग अपना और मेरा दोनों का सत्यानाश कर रहे हो ! घर लौट जाओ ! मुझे शान्ति लेने दो ! डरो मत, जार बड़े दयालु हैं ! मैं उनके पास अपील करूंगा ! वे अन्याय नहीं करेंगे। हम सब उन्हीं के बच्चे हैं ! लेकिन यदि तुम लोग इस प्रकार डाकुओं जैसा व्यवहार करोगे, तो से वे म। मदद करेंगे ?"

युवा दुब्रोफ़्स्की का वक्तव्य, उसकी गम्भीर वाणी, और प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व सबने मिलकर अभिलषित प्रभाव उत्पन्न किया। भीड़ शान्ति होकर तितर-बितर हो गई। आँगन खाली हो गया। सरकारी कर्मचारी कमरे में दुबके पड़े रहे। उदास चेहरे से व्लादीमीर ने पौड़ियों पर पैर रखा। शबाश्किन दरवाजा खोल बाहर आया, और बड़े अदब से सिर झुका अपनी रक्षा के लिये दुब्रोफस्की को धन्यवाद देने लगा।

व्लादीमीरने बड़ी घृणा के साथ धन्यवाद की शब्दावली सुनी और कोई जवाब नहीं दिया।

शबाश्किन् बोलता गया—"हमने फैसला किया है कि अगर आपका हुक्म हो, तो रात यहीं बितायें। अँधेरा हो चुका है। डर है कि रास्ते में आपके किसान कहीं हम पर हमला न कर दें।

मेहरबानी करें। उनसे कह दें कि बैठकखाने में हमारे लिये थोड़ा घास-पात फैला दें। सवेरा होते ही हम घर को चल देंगे।"

दुब्रोफस्की ने रुखाई से जवाब दिया—"तुम्हारी जो मर्जी हो करो! मैं अब यहाँ का मालिक नहीं हूँ!"—कहकर अपने पिता के कमरे में चला गया और अन्दर से किवाड़ बन्द कर लिया।

(६)

व्लादीमीर अपने तईं सोचने लगा—"सारा समाप्त! आज ही सबेरे मेरे एक घर था, सामान-असबाब था। और कल मुझे वह घर छोड़ना पड़ेगा जहाँ मैं पैदा हुआ था। वह भूमि जहाँ मेरे पिता विश्राम ले रहे हैं, उस घृणित मनुष्य के हाथ चली जायगी जो उनकी मृत्यु का कारण है। जिसने मुझे राह का भिखारी बना दिया है।"

व्लादीमीर दाँत पीसने लगा। उसकी आँखें अपनी माँ के टंगे चित्र-पर जा लगीं। चित्र में उसकी माँ प्रातःकालीन शुभ्र परिधान पहने सीमंत में गुलाब फूल लगाये, छोटे खम्भे के सहारे झुकी हुई दिखाई गई थी। व्लादीमीर ने सोचा—"यह चित्र भी मेरे शत्रु के हाथ जा पड़ेगा! इसे वे टूटी-फूटी कुर्सियों के साथ रद्दी खाने में फेंक देंगे, या हॉल में टाँग देंगे। और त्रयेकुरोफ़ के शिकारी देख-देखकर हँसेंगे, और छींटे कसेंगे। और वह शय-

नागार !' जिसमें मेरे पिता की मृत्यु हुई है, मैनेजर को दिया जायगा। या उन औरतों को जिन्हें वह छिपा के रखता है ! नहीं-नहीं ! शोक-संस्मरणों से भरा यह घर उसके हाथ नहीं लग सकता जहाँ से वह मुझे निकाल रहा है !"

व्लादीमीर ने दाँत पीसा। भयानक विचार उसके मस्तिष्क में उठ खड़े हुए। वह उन सरकारी कर्मचारियों को बोलते सुन रहा था। वे बड़े मजे में अपने पैर जमा चुके थे और 'यह-लाओ वह-लाओ' की फरमाइश कर रहे थे। इस प्रकार उसकी शोक-संतप्त भावनाओं पर बुरी तरह आघात कर रहे थे। अंत में सारा वातावरण निस्तब्ध !

व्लादीमीर संदूक और दराज खोलकर अपने पिता के कागज-पत्र छाँटने लगा। वे अधिकतर हिसाब कारोबार-सम्बन्धी कागज-पत्र थे। वह बगैर पढ़े ही उन्हें फाड़कर फेंकता जा रहा था। उन्हीं कागजों मे उसे एक पुलिंदा मिला जिसपर लिखा था—'मेरी पत्नी के पत्र'। बड़ी गहरी भावुकता के साथ व्लादीमीर उन्हें पढ़ने लगा। वे सब तुर्की-युद्ध के समय के लिखे पत्र थे। और किरतेन्योफूका से सैनिक शिविर को भेजे गये थे। पत्नी ने पति को अपने एकाकी जीवन और घर के काम-धंधों के बारे में लिखा था। प्रेमपूर्ण उपालम्भ के साथ वह वियोग का रोना रोई थी, और अपनी एकांत अनुगता प्रियतमा को आलिंगित करने के लिये घर आने को पति से अनुरोध किया था। एक पत्र में उसने

नन्हे व्लादीमीर के स्वास्थ्य के बारे में बेचैनी प्रगट की थी, और एक दूसरे पत्र में उसके सुखी एवं शानदार भविष्य का चित्र खींचा था। वह पढ़ता गया। उसका चित्त परिवारिक आनंद की दुनिया में सैर करने लगा। वह संसार को भूल गया। उसे यह भी ध्यान नहीं रहा कि समय कितना बीत गया। दीवाल से टँगी घड़ी में ग्यारह बजने का शब्द हुआ। उन पत्रों का पाकट में रखकर एक मोमबत्ती उसने जलाई। कमरे से बाहर आया। बैठक खाने के फ़र्श पर सरकारी कर्मचारी सोये पड़े थे। शीशे के खाली गिलास मेजपर पड़े थे और सारा कमरा गुड़ की शराब की उत्कट दुर्गन्धि से भर गया था। घृणा भरे दिल से उनके निकट से व्लादीमीर गुजरा और दरवाजे पर आया। अँधेरा था। रोशनी देख कोई एक आदमी कोने में खिसक गया। मोमबत्ती लिये व्लादीमीर उसकी ओर मुड़ा और अर्हिप लोहार को पहचान गया।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?" उसने आश्चर्य के साथपूछा।

"मैं चाहता था·········मैं यह देखने आया था कि सब ठीक ठाक तो है।"—धीमे और हिचकते स्वर में अर्हिप् ने कहा।

"और यह कुल्हाड़ी किस लिए ?"

"किस लिये ? आजकल बगैर कुल्हाड़ी के कोई घर से क्या बाहर हो सकता है ? ये वकील लोग बड़े हरामजादे होते हैं। ये किसी भी समय······"

"तुम शराब के नशे में हो। कुल्हाड़ी फेंको और जाकर सो जाओ!"

"शराब के नशे में? बाबूजी भगवान् मेरे साक्षी हैं! मैंने एक बूँद भी नहीं.........ऐसे वक्त में कहीं ऐसा भी हो सकता है? ऐसा तो कभी नहीं सुना कि वकील आकर हम पर कब्जा जमा ले, और हमारे मालिक को उसके निजके घर से निकाल दे.........ये साले खूँखार वहाँ खर्राटे ले रहे हैं! खतम करो सालों को! बस!"

दुब्रोफस्की गुर्राया। थोड़ी देर रुक के फिर वह बोला—"देखो अर्हिप, ऐसा काम न कर बैठना! इसमें वकीलों का दोष नहीं है। लालटेन जलाकर मेरे पीछे आओ!"

अर्हिप ने मालिक के हाथ से मोमबत्ती ले ली। स्टोव के पीछे उसे लालटेन मिल गई। उसने लालटेन जलाई और दोनों धीरे-धीरे पौढ़ियों से उतर कर नीचे आँगन में आ गये! चौकीदार ने घंटी बजाई। कुत्ते ने भौंकना शुरू किया।

"पहरे पर कौन है?"—दुब्रोफस्की ने पूछा।

हम हैं बाबूजी, वसिलिस्सा और लुकेरिया।"—एक ऊँची आवाज ने जवाब दिया।

दुब्रोफस्की ने कहा—"घर जाओ! तुम लोगों के अब रहने की जरूरत नहीं।"

अर्हिप ने भी कहा—"तुम लोगों ने बड़ा काम किया है।"

"धन्यवाद बाबूजी !"—कहकर दोनों औरतें घर को चल दीं।

दुब्रोफस्की आगे बढ़ा। दो आदमी उसके सामने आये। उन्होंने उसे आवाज दी। वह अन्तन और ग्रीशा की आवाज पहचान गया।

"तुम लोग सोये क्यों नहीं ?"—उसने उनसे पूछा।

"कैसे हम लोग सोयें ? क्या जीवन में हमें यही देखना था ?······

दुब्रोफुस्की ने उसे रोककर कहा—"चुप रहो ! येगरोठना कहाँ है ?"

ग्रीशा ने जवाब दिया—"अपने घर में। अपने ऊपर वाले कमरे में।"

"जाकर उसे बुला लाओ ! अपने सभी आदमियों को घर से बाहर निकाल लाओ, जिसमें कि इन वकीलों को छोड़ एक भी जीव उसमें बाकी न बचे।···और तुम भैया अन्तन ! एक गाड़ी तैयार रखो !"

ग्रीशा चला गया और मिनटभर बाद अपनी माँ के साथ लौट आया। उस वृद्धा ने अपने कपड़े अलग नहीं किये थे। उन कर्मचारियों के सिया उस रात उस घर में कोई नहीं सोया।

दुब्राफस्की ने पूछा—"तुम सब यहाँ आ गये न ? कोई अंदर रह तो नहीं गया ?"

ग्रीशा ने जवाब दिया—"वकीलों के सिवा और कोई नहीं रहा बाबूजी।"

दुब्रोफस्की ने कहा—"मुझे थोड़ी सी घास या तिनके का एक गट्ठा दो।

आदमी घोड़शाले की ओर दौड़ पड़े और घास के पुलिंदे लेकर वापस आये।

"पौढ़ियों के नीचे इन्हें रख दो! ठीक है। अब मुझे जरासी आग तो देदो बच्चो!"

अर्हिप ने लालटेन खोल दी। दुब्रोफस्की ने एक तिनका जलाया।

फिर दुब्रोफस्की ने अर्हिप से कहा—"एक मिनट रुको! मेरा ख्याल है कि जल्द-बाजी में मैं घर का दरवाजा बन्द करता आया हूँ। दौड़कर जाओ, और चट से उसे खोल तो आओ।"

अर्हिप दौड़ा हुआ दरवाजे के पास पहुंचा। भीतर का किवाड़ खुला था। अर्हिप ने उसे बन्द कर दिया और भनभनाया—"इसे खोल दूँ! ऐसा भी कहीं होता है? और दुब्रोफस्की के पास लौट आया।

दुब्रोफस्की ने वह जलता तिनका घास के ढेर में छोड़ दिया। आग जल उठी। उठती लपटों से सारा आँगन प्रकाशित से उठा।

अब येगरोव्ना दर्द भरे स्वर में चिल्ला उठी—"अरे बाप रे! व्लादीमीर! यह तुम क्या कर रहे हो?"

दुब्रोफ्स्की ने कहा—"चुप रहो !...हाँ भाई बच्चो ! नमस्ते ! अब मैं जा रहा हूं जहाँ भगवान ले जायँ। अब अपने नये मालिक के साथ तुम लोग सुख से रहो !"

वहाँ खड़े आदमी एक स्वर से चिल्ला उठे—"प्यारे मालिक ! आप हमारे माई-बाप हैं ! आपको छोड़ने के बजाय हम मरजाना पसन्द करेंगे ! हम भी आपके साथ चलेंगे !"

घोड़ों से जुती गाड़ी तैयार खड़ी थी। दुब्रोफ्स्की और ग्रीशा गाड़ी में जा बैठे। अन्तन ने घोड़ों को चाबुक लगाई और वे चल निकले।

एक क्षण में आग की लपटें सारे घर में फैल गई। कड़-कड़ करके चौखट-सहित किवाड़ गिरने लगे। जलती धरनें गिरने लगीं। लाल-रंग के धुएं छत के ऊपर से उठने लगे। 'बचाओ, बचाओ' की दर्दभरी चीख और चिल्लाहट सुनाई पड़ने लगी।

"उहूँ ! ऐसा हो नहीं सकता !"—क्रूर मुस्कराहट के साथ आग की लपटों को निरखते हुए आर्हिप ने कहा।

येगरोव्ना बोली—"आर्हिप भैया ! उन हरामजादों को बचाओ ! भगवान तुम्हारा भला करेंगे !"

"मैं नहीं बचाता !" —उस लोहार ने जवाब दिया।

उसी समय अभागे सरकारी कर्मचारी खिड़की के सामने प्रगट हुए। खिड़की के दोहरे फ्रेम को तोड़ने की कोशिश करने लगे। लेकिन-छत धड़ाम से नीचे गिरी, और साथ ही वह चीख

और चिल्लाहट भी बंद होगई !

शीघ्र ही घरके सारे नौकर आँगन में दौड़ पड़े। औरतें चिल्लाने लगीं। अपने माल-असबाब बचाने की चेष्टा करने लगीं। बच्चे आग की लपटों को देख खुशी से किलकारियाँ भरने लगे। लपटें दूर-दूर तक फैलने लगीं। सारी झोपड़ियाँ उनकी लपटों में आ गईं।

अहिंप ने कहा—बस अब ठीक है ! जैसा होना चाहिये! आहा! कैसा सुन्दर जल रहा है ! मुझे उमीद है—त्रयकुरोफ के गाँव से यह अच्छी तरह दिखाई दे रहा होगा !"

उसी समय किसी नई चीज ने उसका ध्यान आकृष्ट किया। घासकी जलती टाल के छप्पर पर एक बिल्ली दौड़ रही थी। कूदने को कोई रास्ता उसे दिखाई नहीं दे रहा था। सब ओर से लपटें लपलपा रही थीं। बेचारा जीव मदद के लिये करुणा भरे स्वरमें म्याऊँ-म्याऊँ कर रहा था। छोटे बच्चे उसकी दशा पर खिलखिला रहे थे।

अहिंप गुस्सा भरे स्वर में फटकारते हुये उनसे बोला—"नन्हें पिशाचो ! क्यों तुम लोग हँस रहे हो ? तुम्हें क्या भगवान का भय नहीं ? भगवान का प्यारा मरा जा रहा है,—और तुम लोग खुश हो रहे हो मूर्खो !" —और उस जलते छप्पर पर सीढ़ी लगाकर बिल्ली को बचाने के उद्देश से ऊपर चढ़ गया। बिल्ली उसका आशय समझ गई, और बड़ी कृतज्ञता से उसकी आस्तीन से लिपट गई।

अर्हिप् स्वयं अध जला हो कर उस बोझ को लेकर नीचे उतरा, और उस लज्जित भीड़ को संबोधित करके बोला—अच्छा बच्चो नमस्कार ! अब यहाँ मेरे रहने की जरूरत नहीं रही ! तुम लोग खुश रहो। मेरे अपराधों को भूल जाना !"

अर्हिप् चला गया। आग कुछ देर जलती रही। फिर अन्त में शाँत हुई। अँधेरे में लाल चिनगारियों की ढेरें चमकने लगीं और किस्तेन्योफ्का के जले निवासी उनके बीच भटकने लगे।

(७)

दूसरे दिन आग लगने की खबर चारों ओर फैल गई। हर जगह इसी की चर्चा थी। तरह तरह के अनुमान और अटकल का बाजार गर्म था। एक ने कहा, शव संस्कार के उपलक्ष में शराब पीकर नशे की मस्ती में दुब्रोफेस्की के नौकरों ने आग लगादी होगी। दूसरे ने कहा, सरकारी कर्मचारियों ने नये घर में शराब की बोतलें खूब उड़ेली होंगी, और नशे में आकर आग लगा दी होगी। कुछेक ने वास्तविक स्थिति का अनुमान भी लगाया। उनका मत था, क्रोध और निराशा में पागल होकर दुब्रोफेस्की ने स्वयं यह भयानक कांड रचा होगा बहुतों का यह विश्वास था कि वह और उसके नौकर भी उसी में जल मरे हैं।

दूसरे दिन त्रयेकुरोफ घटना-स्थल पर पहुँचा वास्तविकता

की छान-बीन उसने शुरू की। उसे मालूम हुआ कि पुलिस-कप्तान, जिला-अदालत का असेसर, दो क्लर्क, व्लादीमीर दुब्रोफ्स्की, उसकी धाई येगरोव्ना, उसका नौकर ग्रेगरी, कोचवान अनंन और लोहार अर्हिप कहीं-न-कहीं गायब हैं। सभी नौकरों ने इस बात की ताईद की, कि छत के गिरने से सरकारी कर्मचारी भीतर ही जल मरे। उनकी जली हुई हड्डियाँ भी मिलीं। वासिलिस्सा और लुकेरिया ने बताया कि आग लगने के कुछ मिनट पहले उन्होंने दुब्रोफ्स्की और अर्हिप लोहार को देखा था। सबकी गवाही के अनुसार अर्हिप लोहार अब भी जीवित था। यद्यपि आग लगाने जिम्मेदारी केवल उसी पर नहीं थी, फिर भी मुख्य जिम्मेदार वही था। गहरा संदेह दुब्रोफ्स्की पर था। किरिल पेत्रविच्‌ने दुर्घटना का विस्तृत विवरण गवर्नर के पास भेजकर अदालत में पुनः अपील की।

इसके तुरन्त बाद की ताजी घटनाओं ने लोगों की काना-फूसी और रहस्यमयता को उत्तेजित किया। डाकुओं का एक दल प्रकट हुआ। आस-पास के इलाके में आतंक का साम्राज्य फैल गया। जिला अधिकारियों ने इसके विरुद्ध जो कदम उठाया वह असफल हुआ? बड़ी तेजी से भयानक डकैतियों का ताँता लगता गया। घर या बाहर कहीं भी सुरक्षित नहीं। सारे प्रांत में दिन-दहाड़े त्रोइका पर सवार हो डाकुओं का दल घूमा करता, राहगीरों और डाक को रोक लेता, गाँव में घुसकर जमीनदारों

के घर लूट लेता और अंत में आग लगा देता। डाकुओं का सरदार अपनी बुद्धिमत्ता, साहस और एक प्रकार की उदारता के लिये प्रसिद्ध हो गया। हर जवान पर दुब्रोफ्स्की का नाम था। सबको विश्वास हो गया कि सिवा उसके इन साहसी डाकुओं का नेता और कोई नहीं। आश्चर्य यह था कि त्रयेकुरोफ की जमीनदारी अछूती थी। उसके एक भी खलिहान में डाकुओं ने कदम न रक्खा। उसकी एक भी गाड़ी रोकी नहीं गई। इसपर अपने स्वभाव जात घमंड के अनुसार त्रयेकुराफ डींग हाँका करता कि इसका मुख्य कारण सारे प्राँत में फैला उसका दबदबा है। और यह भी कारण है कि उसने अपने गाँव में पुलिस का बड़ा सुन्दर प्रबन्ध कर रक्खा है। पहले तो उसकी धारणा पर पड़ोसियों ने उसकी खिल्ली उड़ाई। क्योंकि उन्हें आशा थी कि किसी दिन ये अनाहूत अतिथि त्रयकुरोफ के घर भी अवश्य पहुंचेंगे, जहाँ लूटने के लिये काफी माल मौजूद है। किंतु अन्त में त्रयकुरोफ के साथ उन्हें सहमत होना पड़ा, और यह स्वीकार करना पड़ा कि डाकू भी उसकी इज्जत करते हैं। त्रयकुरोफ विजयी हुआ। हर ताजी डकैती की खबर सुनकर वह गवर्नर, पुलिस के कप्तानों तथा कम्पनी के कमाँडरों को कोसा करता, जिन्हें हर बार अँगूठे दिखाके दुब्रोफ्स्की चम्पत हो जाता।

इसी बीच त्रयेकुरेफ के गिर्जे का उत्सव पहली अक्तूबर को होने वाला था, सो निकट पहुंच गया। किंतु परवर्ती घटनाओं

को विवृत करने से पहले हम पाठकों के समक्ष उन चरित्रों को चित्रित करना चाहते हैं जो नये हैं। और कम से कम कथा के आरम्भ में जिनका संक्षिप्त उल्लेख किया जा चुका है।

(८)

हमारे पाठक शायद पहले ही समझ गये होंगे कि हमारे इस कथानक की नायिका किरिल पेत्रविच् की कन्या है, जिसके सम्बन्ध में अब तक केवल कुछ शब्द मात्र कहे गये हैं। जिस समय का यह वर्णन है उस समय उसकी उम्र सतरह साल की थी। उसके अंग-अंग से सौंदर्य छिटक रहा था। उसका पिता उसे बहुत प्यार करता, किंतु उसका व्यवहार उसके प्रति निरंकुश था। जब तब उसकी छोटी से छोटी सनक को तुष्ट करने की वह चेष्टा करता, और कभी कभी कठोर एवं क्रूर व्यवहारों से उसे आतंकित कर छोड़ता। अपने प्रति उसके प्रेम का उसे विश्वास हो गया था, अतः वह कभी भी उसका विश्वास प्राप्त न कर सका। उसकी पुत्री उससे अपने विचारों एवं भावनाओं को छिपाने की आदी बन गई थी। क्योंकि उसे कभी निश्चय न हो सका कि उसका पिता उन भावनाओं को किस रूप में ग्रहण करेगा। उसके कोई सखी न थी, और एकाकीपन में ही वह पली थी। पड़ोस की स्त्रियाँ या कन्याएँ किरिल पेत्रविच् के घर बहुत कम आती-

जातीं। अपने मनोरंजन एवं वार्तालाप में उसे महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों की आवश्यकता होती। हमारी सर्व सौंदर्यमयी नवयौवना कथा-नायिका किरिल पेत्रविच् के घर निमंत्रित अतिथियों की गोष्ठी में बहुत कम शामिल होती। एक बहुत बड़ा पुस्तकालय उसके आधीन था, जो १८ वीं सदी के फ्रांसीसी लेखकों की किताबों से भरा पड़ा था। उसका पिता 'पक्का पाकशास्त्री' नामक पुस्तक के सिवा और कभी कुछ पढ़ता ही न था। अतः वह किताबों के चुनाव के बारे में अपनी राय नहीं दे सकता था। हर तरह की पुस्तकें देखने के बाद माशाने स्वभावतः उपन्यासों को ही अपना पाठ्य-विषय बनाया। इस प्रकार वह अपनी शिक्षा पूरी कर रही थी, जो मदाम मीमी की अध्यापिकात्व में आरम्भ हुई थीं। किरिल पेत्रविच् को उस महिला में बड़ा विश्वास था। उसके प्रति काफी सद्भाव भी दिखाता। अंत में जब पारस्परिक मैत्री का परिणाम अत्यन्त प्रस्फुट हो गया, तब उसने चुपके से उसे दूसरी जमींनदारी पर भेज दिया।

मदाम भी बड़ी मधुर स्मृति छोड़ गई थी। एक सहृदय बालिका थी वह। किरिल पेत्रविच् के प्रति अपने प्रभाव का कभी दुरुपयोग नहीं किया। इस मामले में वह अन्य चहेतियों से भिन्न थी, जो निरंतर एक के बाद दूसरी का स्थान ग्रहण करती रहतीं। किरिल पेत्रविच् भी अन्य प्रेमिकाओं की अपेक्षा उस पर अधिक आसक्त लगता। एक काली आँखों वाला चंचल नौसाला लड़का

उसके घर में पुत्रवत पाला जा रहा था। इस लड़के का चेहरा मदाम मीमी के चेहरे से मिलता-जुलता था। यद्यपि दर्जनों छोटे बच्चे, जिनमें किरिल पेत्रविच् का निजी प्रतिबिंब विद्यमान था, नंगे-पाँव नंगे-बदन उसकी खिड़कियों के सामने दौड़ा करते, लेकिन उनकी गणना घर के गुलामों में होती। अपने नन्हे सशा के लिये किरिल पेत्रविच् ने मास्को से एक फ्राँसीसी शिक्षक को बुलवा भेजा। जिन घटनाओं का अभी वर्णन किया जा रहा है, उसी समय शिक्षक भी पक्रोफ् स्कये गाँव में पहुँचा।

उसका सुन्दर चेहरा और सादा व्यवहार किरिल पेत्रविच् को पसन्द आया। शिक्षक ने अपना प्रमाण-पत्र पेश किया। त्रयेकुरोफ के एक रिश्तेदार से एक पत्र भी लेता आया था। उसके घर में वह चार साल अध्यापकी कर चुका था। किरिल पेत्रविच् ने सारे चीजें देखीं। सिर्फ एक ही बात उसे पसन्द न आई। वह थी उस फ्रांसीसी की युवावस्था। यह सुन्दर दोष उसे इसलिये नापसंद नहीं था कि अनुभव और धैर्य के साथ इसका मेल नहीं, क्योंकि अध्यापकों के दयनीय पेशे में इसकी बड़ी आवश्यकता होती है, बल्कि अपने निजी कारण से उस युवा के सामने उस कारण को उसी क्षण पेश करने का उसने निर्णय भी कर लिया। माशा को उसने बुला भेजा। (किरिल पेत्रविच् फ्रेंच नहीं जानता था। माशा ने उसके लिये दो भाषिये का काम किया।)

"इधर तो आओ माशा! इस मोस्सो [1] को बता दो कि सब

---

[1] फ्राँसीसी

बात ठीक है। उसे मैं नौकर रख लूँगा। सिर्फ मेरी नौकरानियों से प्रेम करने का साहस वह न करे। नहीं तो छोकड़े को मजा चखा दूँगा। ···अनुवाद करके उसे समझाओ तो माशा।"

माशा के चेहरे पर लाली दौड़ गई। अध्यापक की ओर मुड़के उससे फ्रेंच में बोली —"आपकी शालीनता और सदाचार पर मेरे पिता जी को विश्वास है।"

फ्रांसीसी मस्तक नवा के बोला—"मैं आप लोगों का सम्मान-भाजन बनने की आशा करता हूँ, चाहे आप लोग अपनी कृपा से मुझे वंचित ही क्यों न कर दें।"

माशा ने उसके प्रत्युत्तर का अनुवाद किया।

किरिल पेत्रविच् ने कहा—"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा! उसका काम सशा की देखरेख करना और व्याकरण तथा भूगोल पढ़ाना है··· । इसका अनुवाद कर दो।"

माशा ने अनुवाद में पिता के उच्छृंखल उच्चारण को कोमल कर दिया। किरिल पेत्रविच् ने फ्राँसीसी को उसके बासे पर भेज दिया, जहाँ उसे रहने को कमरा मिला था।

माशा सामंती वातावरण में पली थी। अतः उस फ्रांसीसी पर इंच मात्र भी ध्यान न दे सकी। वह अध्यापकों को एक तरह के नौकर या शिल्पी से अधिक नहीं समझती, और एक नौकर या शिल्पी उसकी दृष्टि में मनुष्य न थे। मोस्ये देफोर्गे पर उसका जो प्रभाव पड़ा वह लक्ष्य न कर सकी। उसके चित्त की चंचलता,

चेहरे पर उत्तेजना के भाव, स्वर में परिवर्तन कुछ भी उसने लक्ष्य नहीं किया। इसके बाद कुछ दिनों तक अक्सर उसे देखा करती; लेकिन कोई खास ध्यान न देती। लेकिन एक अतर्कित घटना ने उसके प्रति उसके दिल में एक नया भाव उत्पन्न कर दिया।

किरिल पेत्रविच् ने भालू के बहुत से बच्चे पाल रक्खे थे। उसके मन बहलाव के साधनों में यह भी एक मुख्य वस्तु थी। शैशव में उन बच्चों को प्रतिदिन बैठक में ले आया जाता। किरिल पेत्रविच् घंटों उनके साथ खेलता। कुत्ते के बच्चों और बिल्लियों से उन्हें लड़ाता। जब वे बड़े हो जाते, जंजीरों में बाँधकर उनकी सच्ची लड़ाई का इन्तजार किया जाता। जब-तब किसी भालू को महल की खिड़की के सामने लाया जाता। शराब का काँटेदार खाली पीपा उसके आगे लुढ़का दिया जाता। भालू उसे सूँघता; फिर आहिस्ता से छूता, अपनी अँगुलियाँ उसमें घुसेड़ता, फिर गुस्से में आकर बड़े जोर से धकेल देता। तब उसकी पीड़ा बहुत बढ़ जाती। क्रोध में पागल होकर बड़े जोर की आवाज करता हुआ फिर उसकी ओर दौड़ता। वह तब तक बारम्बार वैसा ही करता, जब तक कि उसके निष्फल क्रोध के लक्ष्य उस वस्तु को वहाँ से हटा नहीं लिया जाता। कभी एक गाड़ी में दो भालू जाने दिये जाते। इच्छा या अनिच्छा से दर्शकों को उस पर बिठा दिया जाता। गाड़ी दौड़ा दी जाती। और वह अनिश्चित दिशा को चल पड़ती। लेकिन किरिल

पेत्रविच् जिस मजाक को सबसे अधिक पसन्द करता वह यह था :—

एक सुनसान कमरे में किसी भूखे भालू को दीवाल की कड़ी रस्सी में बाँध दिया जाता। रस्सी की लम्बाई कमरे की लम्बाई जितनी होती। इस प्रकार उस खूँख्वार जानवर के हमले से केवल सामने का कोना सुरक्षित रह पाता। कमरे के दरवाजे पर एक ऐसे आदमी को ले आया जाता, जिसके दिल में जरा भी संदेह न होता। कमरे के अंदर उसे इस प्रकार धकेल दिया जाता, मानो यह आप-घटी दुर्घटना हो। दरवाजा बन्द कर दिया जाता। वह अभागा उस जटाधारी संत के सामने अकेले छोड़ दिया जाता। उसके कोट का दामन चीथड़ा-चीथड़ा हो जाता, बाहों पर पंजों की चोट होती, तब कहीं उस बेचारे को उस सुरक्षित कोने का पता चलता। कभी-कभी तीन-तीन घंटे खड़े रहना पड़ता। बेचारा अपने को दीवाल से बिल्कुल सटाता जाता। और वह भयानक जानवर उससे केवल दो पग पर रह जाता। वहाँ से छलांग मारता, पिछले पाँव के सहारे उठ खड़ा होता, फुँकारता और अपने शिकार तक पहुंचने की चेष्टा करता। ऐसे थे सुन्दर मनोरंजन रूस के एक दिहाती जमींनदार के।

उस गृह-शिक्षक के आने के कुछ दिन बाद त्रयेकुरोफ ने सोचा और निर्णय किया कि उस भालू के कमरे में इस शिक्षक को भी सबक सिखाया जाय। एक दिन सबेरे उसने उसे बुलवाया! एक

अंधेरे रास्ते से उसे आगे ले चला। सहसा बगल का दरवाजा खुला। दो नौकरों ने फ्रांसीसी को कमरे में धकेल दिया और पीछे से दरवाजा बन्द कर दिया। बेचारा शिक्षक हक्का-बक्का रह गया। अपने आपको सम्हालते ही उसने दीवाल से बँधे एक भालू को देखा। वह बर्बर जंतु दूर से ही फों-फों करने लगा, नासा रंध्रों से साँसें छोड़ने लगा। एकाएक पिछले पैरों पर खड़े हो अपने शिकार की ओर सीधे बढ़ा।··· फ्रांसीसी डरा नहीं, भागा नहीं, बल्कि हमले की प्रतीक्षा करने लगा। भालू निकट आ गया। देफोर्गे ने पाकेट से एक छोटी सी पिस्तौल निकाली; और उस हिंस्र पशु के कान में घुसेड़कर नली दबा दी। भालू गिर पड़ा। सब लोग दौड़ पड़े। दरवाजा खोल दिया गया और किरिल पेत्रविच् कमरे में प्रविष्ट हुआ। अपने मजाक के परिणाम पर उसे आश्चर्य हो रहा था।

किरिल पेत्रविच् ने मामले की तह तक पहुँचने का संकल्प किया। किसने देफोर्गे को इस मजाक के बारे में सचेत किया? क्योंकर वह भरी पिस्तौल पाकेट के छिपाके ले गया? माशा बुलाई गई। दौड़ी आई और पिता के प्रश्नों का फ्राँसीसी के आगे उसने अनुवाद कर दिया।

देफोर्गे ने जवाब दिया—"मुझे भालू के बारे में कोई जानकारी न थी। लेकिन मैं पिस्तौल हमेशा पास रखता हूँ। क्योंकि जो अपमान का व्यवहार हमारे पेशेवालों के साथ किया जाता है

उसे मैं कतई बर्दाश्त करना नहीं चाहता।"

माशा ने आश्चर्य भरी निगाह उसपर डाली, और उसके शब्दों का किरिल पेत्रविच् के आगे अनुवाद कर दिया।

किरिल पेत्रविच् ने कोई जवाब नहीं दिया। भालू के हटाने और उसका चमड़ा निकालने का आदेश देकर अनुचरों से बोला "यह अच्छा आदमी है! डरा नहीं! मेरी बात से भी नहीं!"

तब से वह देफोर्गे को चाहने लगा। फिर कभी उसकी परीक्षा लेने की बात उसने नहीं सोची।

किन्तु इस घटना ने मरिया किरिलोव्ना के दिल पर और भी प्रभाव डाला। उसके सामने मृत भालू का शरीर पड़ा था, और देफोर्गे बड़ी शान्ति के साथ उससे बातें कर रहा था। इस दृश्य ने उसकी विचार-शक्ति को उत्तेजित कर दिया। उसने देखा, साहस और आत्म-सम्मान की भावना किसी एक वर्ग की बपौती नहीं। उस दिन से गृह-शिक्षक का वह सम्मान करने लगी। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, अधिकाधिक उसकी ओर आकृष्ट होती गई। दोनों का सम्बन्ध घनिष्ठ होता गया। माशा का स्वर बड़ा सुन्दर था। उसके स्वरों से अपने आप संगीत की ध्वनि झंकृत होती रहती। देफोर्गे ने उसे संगीत सिखा देने का स्वयं प्रस्ताव किया। इसके बाद आप बड़ी आसानी से समझ सकते हैं कि अनजाने ही माशा उसे प्यार करने लगी।

उत्सव आरम्भ होने के ठीक पहले दर्शकों की टोलियाँ पहुँचने लगीं। कुछ हवेली में ठहरे, कुछ अतिथि शाला में। कुछ जेठ-रैयत के घर जा डटे, कुछ पादरी के घर, और कुछ लोग धनी किसानों के घर। मेहमानों के घोड़ों से घुड़सालें भर गईं। रंग-बिरंगी गाड़ियों से गाड़ी खाना और सारा खलिहान भर गया। तिल धरने की जगह न रही। नौ बजा। सामूहिक प्रार्थना की घंटी बज उठी। ईंटों से बने उस नये गिर्जाघर की ओर सब चल पड़े।

किरिल पेत्रविच् ने इस गिर्जे को बनवाया था। प्रतिवर्ष उसके साज-शृंगार में कुछ वृद्धि अवश्य करता। सामूहिक प्रार्थना में संभ्राँतों की संख्या इतनी अधिक हो गई कि गिर्जे के भीतर किसानों के लिए जगह न रह गई। उन्हें दालान या बाहर में खड़े होना पड़ा। प्रार्थना अभी शुरू नहीं हुई थी। पादरी किरिलपेत्र-विच् के इन्तजार में था। छः घोड़ों वाली गाड़ी पर सवार होकर किरिल पेत्रविच् पहुँचा और मरिया किरिलोव्ना के साथ बड़ी गंभीरता से कदम रखता हुआ अपनी जगह आ पहुँचा। उपस्थित नर-नारियों के नेत्र मरिया पर जा गड़े। कुछ लोग उसके सौंदर्य की प्रशंसा करने लगे; और दूसरे उसकी पोशाक निरखने लगे।

प्रार्थना शुरू हुई। गवैयों ने गाना शुरू किया। किरिल पेत्र-

ीन था। न वह दायें ताक रहा था न बायें।
ित स्वर में उसने भी अपना स्वर मिलाया।
निर्माता के नाम पर पादरी ने स्तुति-पाठ आरम्भ किया, तो उसने अभिमान भरी नम्रता के साथ अपना मस्तक नवा दिया।

प्रार्थना समाप्त हुई। क्रास को चूमने के लिए सबसे पहले किरिल पेत्रविच् आगे बढ़ा, उसके पीछे दूसरे लोग। पड़ोसियों ने पास आकर भक्ति-भाव दर्शाया। महिलाओं ने माशा को घेर लिया। गिर्जे से विदा होते समय किरिल पेत्रविच् ने सबको भोजन के लिए निमंत्रित किया, और गाड़ी में बैठकर घर को रवाना हो गया। और लोग उसके पीछे चले।

सारा कमरा मेहमानों से भर गया। प्रतिक्षण नये मेहमान उपस्थित होने लगे, और बड़ी कठिनाई से अपने आतिथ्यक (मेजबान) के निकट पहुँच पाते। हीरे-मोतियों तथा पुराने ढंग की बहुमूल्य पोशाकों में सजी महिलाएँ अर्ध वृत्ताकार होके शान्ति के साथ बैठी थीं। पुरुष वर्ग वोद्का तथा नमकीन चटपटी को घेरे बैठा हुआ था। बड़े जोर से आपसी वार्तालाप छिड़ा हुआ था। अस्सी व्यक्तियों के लिए भोजन-शाला में भोजन परोसा जा रहा था। मेजपोश बिछाने और की शराब की बोतलें रखने में नौकर-चाकर मशगूल थे। शोर-गुल भी मचा रहे थे। अन्त में नौकरों के सरदार ने घोषित किया, भोजन तैयार है। किरिल पेत्रविच् ने

आकर सबसे प्रथम आसन ग्रहण किया। उसके पीछे महिलाएँ आईं, और मर्यादा के अनुसार सम्मान के साथ बैठ गईं। और नवयुवतियाँ डरपोक हरिणियों की भाँति परस्पर सटके बैठ गईं, और उनके सामने पुरुषों ने आसन जमाया। और मेज के अन्तिम छोर पर अपने नन्हे सशा के साथ गृह-शिक्षक ने आसन लगाया।

पद-मर्यादा का ध्यान रखकर मेहमानों के आगे खाना परोसा जा रहा था। जिनके ओहदे का नौकरों को पता न था, वहाँ वे रजक-न्याय [1] का पालन कर रहे थे। अपने काम में शायद ही उनसे गलती होती। तश्तरियों की खनखनाहट और चम्मचों की झनझनाहट बातचीत की भनभनाहट में मिलकर अद्भुत कोलाहल की सृष्टि कर रहे थे। किरिल पेत्रविच् आनन्दी मुद्रा के साथ मेज के चारों ओर पहले नजर दौड़ा रहा था। वह अतिथि-सेवी मेजबान का पूरा आनन्द ले रहा था। उसी समय एक छः घोड़ों वाली गाड़ी आँगन में आ पहुँची।

"वह कौन आया?"—त्रयेकुरोफ ने पूछा।

"अंतन पफ़्नुतेयेविच्!"—एक साथ बहुतों ने जवाब दिया।

दरवाजा खुला और अन्तन पफ़्नुतेयेविच् नामक एक पचास साला हट्ठा-कट्ठा आदमी भोजनशाला में प्रविष्ट हुआ। चेहरा उसका खुदखुदा था। तेहरी ठुड्डी चेहरे को सजीव बना रही थी। वह सिर नवा रहा था, मुस्करा रहा था, माफियाँ माँग रहा था।

---

[1] धोबी के हाथ में जो कपड़ा पड़ जाय उसी को पहले धोता है।

किरिल पेत्रविच् ने आदेश दिया—"एक और मेज यहाँ लादो।"......"स्वागतम् अंतन पफ्नुतेयेविच्! यहाँ बैठो, और बताओ कि प्रार्थना में शामिल क्यों नहीं हुए? भोजन में इतनी देर क्यों? यह तुम्हारे जैसा काम नहीं हुआ। तुम तो एक धार्मिक आदमी हो। दर्शन-मेला पसंद करते हो।"

अपने कोट के बटन से रूमाल को बाँधते हुए उसने जवाब दिया—"मुझे बड़ा दुख है, बड़ा दुख है किरिल पेत्रविच् साहब! आज तड़के ही मैं घर से निकला, लेकिन सात मील जाते-जाते अगले पहिये की टायर फट गई। अब मैं क्या करूँ? लेकिन सौभाग्य से पास में ही एक गाँव था। किसी तरह गाड़ी को लुढ़-काते उस गाँव में पहुँचा। किसी तरह लोहार ने टायर में चिपी लगा दी। इसमें तीन घंटे लग गये। कोई दूसरा चारा ही नहीं था। सीधे किस्तेन्योफ्का के जंगल में से होकर आने का साहस न हुआ, चक्कर काटकर आ रहा था।"

किरिल पेत्रविच् बीच में हो बोला—"ओ! तुममें हिम्मत नहीं है। तुम्हें भय किस बात का है?"

"मुझे भय किस बात का है? दुब्रोफ्स्की का भय है। किसी भी दिन उसके हाथ पड़ सकता हूँ! अपना काम करना वह जानता । उसके हाथ से कोई नहीं बच सकता। और मेरी तो वह गहरी खबर लेगा! सूद-दरसूद के साथ!"

"तुम्हारी ओर उसका इतना झुकाव क्यों है भैया?"

"अपने बाप अंद्रई गव्रिलोविच् को लेकर। आप क्या भूल गये कि मैंने ही तो आपकी खातिर—अर्थात् न्याय और विवेक की दुहाई देकर मैंने गवाही दी कि दुब्रोफस्की का किस्तेन्योफका पर कोई हक नहीं, बल्कि केवल आपकी कृपा से वहाँ का मालिक बन है। उस मृत व्यक्तिने—भगवान् उसका भला करे—मुझसे बदला लेने की प्रतिज्ञा की थी, और अब शायद बेटा बाप की प्रतिज्ञा पूरी करके छोड़ेगा। अब तक तो भगवान् ने मेरी रक्षा की है। केवल मेरा खलिहान ही उसने लूटा है, किसी दिन घर भी लूटेगा।

इसपर किरिल पेत्रविच् ने व्यंग किया—"और घर में उन्हें मजा मारने का मौका भी मिलेगा। मुझे उम्मीद है कि वह लाल तिजोरी अब बिल्कुल भर गई होगी।"

"बिल्कुल नहीं किरिल पेत्रविच् साहब! एक समय वह भरी अवश्य थी, लेकिन अब तो बिल्कुल खाली है।"

"झूठ मत मत बोलो अंतन पफ्नुतेयेविच्! मैं तुम्हें जानता हूँ! तुम खर्च करने वाले आदमी नहीं हो। एक सुअर के बच्चे की की तरह रहते हो, कभी किसी को खिलाते नहीं, अपने किसानों को खूब चूसते हो, तुम तो हमेशा बचाने की फिक्र में रहते हो।"

अंतन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—"आप तो मजाक कर रहे हैं किरिल पेत्रविच् साहब! लेकिन मेरा तो सत्यानाश हो गया मैं सच बता रहा हूँ।"—और अपने मेजबान के सभ्यता पूर्ण

मजाक का स्वाद दूर करने के लिए एक स्वादिष्ट समोसे का टुकड़ा उसने उठा लिया।

किरिल पेत्रविच् ने उसकी जान छोड़ दी। अब वह एक नये पुलिस-कप्तान की ओर मुड़ा। पहले-पहल कप्तान उसके घर आया था। गृह-शिक्षक के निकट मेज पर बैठा था।

"हाँ भई पुलिस-कप्तान, दुब्रोफ्स्की के पकड़ने में क्या काफ़ी देर लगेगी?"

पुलिस-कप्तान घबड़ा गया। सिर झुकाये मुस्कराता और हकलाता हुआ बोला—"उसे पकड़ने में हम सारी ताकत लगा देंगे सरकार!"

"हूँ! सारी ताकत लगा देंगे! तुम तो बहुत दिनों से सारी ताकत लगाते आ रहे हो, लेकिन नतीजा कुछ निकला नहीं। और तुम उसे पकड़ने ही क्यों लगे? दुब्रोफ्स्की की डकैती तो मानो पुलिस-कप्तानों के लिए ईश्वरीय वरदान है। पता लगाने जाओगे, जाँच-पड़ताल करोगे, और सफर का खर्चा लोगे—तुम्हारे पाकेट में पैसा ही पैसा! तो फिर तुम क्यों अपने उपकर्ता का अन्त करने लगे? क्या यह सच नहीं है बाबू साहब?"

"सोलह आने सच है सरकार!"—पुलिस कप्तान ने बड़ी घबड़ाहट के साथ जवाब दिया।

सभी मेहमान हँस पड़े।

किरिल पेत्रविच ने कहा—"मैं इस नौजवान की सचाई को

पसन्द करता हूँ। अब देखता हूँ कि पुलिस की मदद का इन्तजार किये बिना ही मुझे स्वयं इस मामले को सुलभाना होगा। लेकिन अपने पुराने कप्तान की मृत्यु का मुझे बड़ा अफसोस है। यदि वह जला न दिया गया होता, इस जिले में बहुत कम उपद्रव होता। दुब्रोफस्की के बारे में क्या खबर है? अभी हाल में कहीं किसी ने देखा उसे?"

एक गंभीर स्त्री-स्वर ने जवाब दिया—मैंने अपने घर में उसे देखा। गत मंगलवार को मेरे साथ वह जीम भी गया है।"

सारी आँखें अन्ना सविश्ना ग्लोबोफ की ओर मुड़ गई। वह अपेक्षाकृत सुन्दर चेहरे वाली एक विधवा नारी थी। अपने दया पूर्ण चहकते स्वभाव के कारण सबकी प्रिय थी। बड़ी उत्सुकता से सब उसकी बात सुनने की प्रतीक्षा करने लगे। उसने कहना आरम्भ किया :—

"तीन हफ्ते हुए मैंने अपने एक कारकुन को चिट्ठी के हाथ डाकखाने भेजा था। चिट्ठी मेरे पुत्र वन्यूशा के लिये थी। अपने पुत्र को मैं फिजूल खर्च बनाना नहीं चाहती। चाहने पर भी पास में साधन नहीं। लेकिन एक गारद का अफसर! कुछ न-कुछ शान-शौकत चाहिये ही। इसलिये यथासाध्य अपनी आय का एक अँश वन्यूशा को भेजा करती हूँ। मैंने उसको दो हजार रूबल भेजे। दुब्रोफ्स्की के बारे में कई वार सोचा भी, लेकिन देखा कि पाँच ही मील तो यहाँ से शहर पड़ता है। भगवान की इच्छा

होगी तो सब ठीक हो जायगा ! फिर देखती हूँ, शाम को मेरा कारकुन मुरझाया चेहरा लिये पैदल वापस आगया है। उसके कपड़े चीथड़े-चीथड़े हो गये हैं। मैं भौंचक्की रह गई ! मैंने पूछा —'मामला क्या है ? तुम्हें हो क्या गया है ?' और वह बोला—अन्ना सविश्नाजी ! डाकुओं ने मुझे लूट लिया और अधमरा बना छोड़ा। दुब्रोफ्स्की स्वयं वहाँ मौजूद था। मुझे फाँसी देना चाहता था। लेकिन उसे दया आगई। मुझे छोड़ दिया। लेकिन जो कुछ पास था सब लूट लिया। गाड़ी के साथ घोड़े भी छीन लिये।' मेरा तो होश हवा होगया ! हे भगवान ! अब मेरे वन्यूशा का क्या होगा ? अब तो कोई उपाय नहीं रहा। मैंने एक दूसरी चिट्ठी लिखी। सारी कहानी लिख भेजी। और बगैर एक पैसा भेजे ही अपना आशीर्वाद भेज दिया।

एक या दो हफ्ते बीत चले। अचानक एक गाड़ी मेरे घरके सामने आ खड़ी हुई। एक अपरिचित जनरल ने मुझसे मिलना चाहा। मैंने स्वागतम् कहा। काले केश और काली चमड़ी का एक आदमी मेरे सामन आया। उसकी दाढ़ी-मूँछें कुलनेफ की प्रतिमा की याद दिला रही थीं। मेरे पति के मित्र और सहयोगी के रूप में उसने अपना परिचय दिया। उसने बताया कि इस रास्ते से गुजरते हुये अपने मित्र की विधवा पत्नी से मिलने का लोभ वह संवरण न कर सका। वह जानता था मैं जीवित हूँ। उस समय जो कुछ खाद्य-सामिग्री मेरे पास थी,

मैंने उसके आगे रखदी। इधर-उधर की बातें होती रहीं। अंत में दुब्रोफ्स्की की चर्चा चल पड़ी। मैंने अपनी मुसीबत की गाथा उससे कह सुनाई। जनरल की भौंएँ तन गईं वह बोला—'यह एक अजीब बात है! मैंने सुना है कि दुब्रोफ्स्की हर आदमी पर हमला नहीं करता, बल्कि केवल उनपर जो धनी के रूप में प्रसिद्ध हैं तिस पर भी वह पूरा-पूरा नहीं लूटता, आधा पैसा उनके पास छोड़ देता है। लेकिन उसके विरुद्ध हत्या की शिकायत तो अब तक किसी ने भी नहीं की। लगता ऐसा है कि दाल में कुछ काला है। कृपया अपने कारकुन को बुलाइये तो।' मैंने मैनेजर को बुला भेजा। वह आया। जनरल को देखते ही हक्का-बक्का बन गया! जनरल ने पूछा—'हाँ भैया! मुझे बताओ तो दुब्रोफ्स्की ने कैसे तुम्हें लूटा और फाँसी पर लटकाना चाहा?' मैनेजर थर-थर काँपने लगा। जनरल के पैरों पर गिर पड़ा—'मुझे बड़ा दुख है हुजूर! मुझ से गलती हो गई···मैंने झूठ कहा।' जनरल ने जबाब दिया—'अगर ऐसी बात है, तो अपनी मालकिन को बताओ कि क्या हुआ था! मैं सुनना चाहता हूँ।' कारकुन ने अक्ल दुरुस्त करने की चेष्टा की, लेकिन असफल रहा। जनरल ने कहा —'अच्छा अपनी मालकिन को यह तो बताओ कि दुब्रोफ्स्की को तुमने कहाँ देखा?'—देवदारू के दो वृक्षों के निकट "हुजूर, दो वृक्षों के निकट।

'और उसने तुमसे क्या कहा?'—'उसने मुझसे पूछा कि मैं किसका नौकर हूँ, कहाँ जा रहा हूँ, किस काम से जा रहा हूँ।''—

'फिर इसके बाद ?'—'और इसके बाद चिट्ठी और पैसे माँगे, और मैंने दे दिये ।'—'और उसने ?'—'और उसने ··· मुझे बड़ा दुख है सरकार !"—'अच्छा तो उसने क्या किया ?'—उसने पत्र और पैसे लौटा दिये और कहा—मजे में चले जाओ, और डाकखाने को दे आओ !'—'तब ?'—'मुझे बड़ा दुख है सरकार !' तब जनरल ने फटकारते हुए कहा—'तुझे अभी मजा चखाता हूँ भैया! ···और आप श्रीमती जी, इस लोहे के संदूक की तलाशी लीजिये ! और इसे मेरे सुपुर्द कर दीजिये ! मैं इसे सबक सिखाऊँगा। मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि दुब्रोफ्स्की स्वयं गारद का अफसर रह चुका है। वह कभी अपने साथी अफसर से अनुचित फायदा उठाना न । मैं समझ गई वह जनरल कौन था। उससे बहस करना मैंने ठीक नहीं समझा। कोचवान ने मेरे उस कारकुन को अपने कोच-बॉक्स से बाँध दिया। पैसे मेरे मिल गये। जनरल ने मेरे साथ भोजन किया और कारकुन को अपने साथ लिये उसी क्षण बिदा हो गया । दूसरे दिन मेरा वह कारकुन नंगे-बदन ओक-वृक्ष से बँधा हुआ पाया गया।"

सबों ने बड़ी शान्ति के साथ अन्ना शाविश्ना की कहानी सुनी, खासकर युवती महिलाओं ने। बहुतों के दिलों में दुब्रोफ्स्की के लिये छिपी सहानुभूति भी उत्पन्न हो गई। महिलाओं को उसमें एक भावुक नायक दिखाई दिया, खासकर मरिया किरिलोव्ना को

जो सदा स्वप्न के ससांर में विचरा करती।

किरिल पेत्रविच् ने पूछा—"अन्ना सविश्ना! आप क्या समझ रही हैं कि दुब्रोफ्स्की आपसे मिलने आया था? आप बिल्कुल भ्रम में हैं। मुझे पता नहीं कि आपका वह मेहमान कौन था, लेकिन इतना निश्चित है कि दुब्रोफ्स्की नहीं था।"

"आप कैसे समझते हैं कि दुब्रोफ्स्की नहीं था? सिवा उसके दिन-दहाड़े सड़क पर आकर राहगीरों की तलाशी लेगा कौन?"

"मैं यह नहीं बता सकता, लेकिन वह दुब्रोफ्स्की नहीं था। उसका बचपन मुझे याद है। पता नहीं कि उसके बाल कैसे काले हो गये? बचपन में उसके बाल सुन्दर सुनहले और घुँघराले थे। हाँ, इतना मुझे निश्चित पता है कि दुब्रोफ्स्की मेरी माशा से पाँच साल बड़ा है, और इसका मतलब यह है कि इस समय वह पैंतीस साल का न होकर तेईस साल का है।"

अब पुलिस कप्तान ने घोषित किया—"आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं सरकार! मेरे पाकेट में ब्लादीमीर दुब्रोफ्स्की के हुलिये का विवरण मौजूद है! उस विवरण में यह निश्चित रूप से कहा गया है कि वह तेईस साल का है।"

किरिल पेत्रविच् ने कहा—"ओहो! तो उसे पढ़ सुनाओ, हम भी सुनें। वह कैसा है यह जानना बुरा न होगा। संभव है उससे मुठ-भेड़ हो जाय। तब वह भाग नहीं सकेगा।"

पुलिस कप्तान अपने पाकेट से कागज का एक मैला टुकड़ा

निकाल बड़ी गंभीरता से उसे खोलकर सुरीले स्वर में पढ़ने लगा:—

"व्लादीमीर दुब्रोफ़्स्की के हुलिये का विवरण जो उसके नौकरों के बयान से प्रमाणित है—उम्र तेईस साल, कद मझोला, चमड़ा साफ, दाढ़ी का नाम नहीं, कुछ लाली लिये भूरी आँखें, भूरे बाल, सीधी नाक। खास चिन्ह उसके चहरे पर कोई नहीं।

"कुल इतना ही ?"—किरिल पेत्रविच् ने पूछा।

"कुल इतना ही।"—कागज के टुकडे को मोड़ते हुए पुलिस-कप्तान ने जवाब दिया।

"मैं आपको बधाई देता हूँ साहब! बड़ा बढ़िया रिकार्ड आपके पास है! इस विवरण के जरिये दुब्रोफ़्स्की का पता लगाने में आपको जरा भी कठिनाई न होगी। जैसे बहुतेरे आदमियों के मझोले कद, भूरे बाल, लाली लिये भूरी आँखें और सीधी नाक न होती हों! मैं भी शर्त लगाके कह सकता हूँ कि दुब्रोफ़्स्की के साथ तुम स्वयं तीन घन्टे तक बातें करते रहकर भी उसे पहचान न पाओगे। तुम सरकारी नौकर सब लाल-बुझक्कड़ होते हो।"

नम्रता के साथ उस रिकार्ड को पाकेट में रखकर पुलिस-कप्तान चुप-चाप भूने हंस और गोबी को उदरसात् करने में लग गया। इस बीच नौकर एक से अधिक बार मेजों का चक्कर लगा चुके थे। मेहमानों की शराब की प्यालियाँ भर चुके थे। इसके बाद काकेशिया और क्रीमिया की शराबों की कई बोतलें खोली गईं।

उनका बड़े प्रेम से स्वागत किया गया। गालों पर लाली दौड़ने लगी। वार्तालाप में कोलाहल, मनोरंजन और असंवद्धता की मात्रा बढ़ने लगी।

किरिल पेत्रविच् ने कहा—"अफसोस! अब हमें तरस अलेक्सेयेविच् जैसा पुलिस-कप्तान नहीं मिलेगा! वह गड़रिया नहीं था। अपना काम करना जानता था। बड़े दुःख की बात है कि वह जला डाला गया। नहीं तो डाकुओं के दल का एक आदमी भी उसके हाथ से न बच पाता। सबको पकड़ लेता। स्वयं दुब्रोफ्स्की भी उसके चंगुल से नहीं निकल पाता। तरस अलेक्सेयेविच् उनसे घूस-रिश्वत लेकर भी उन्हें पाक-साफ निकलने नहीं देता। उसका ऐसा तरीका था! अब कोई दूसरा उपाय नहीं। मालूम पड़ता है मुझे स्वयं इसमें पड़ना होगा। अपने आदमियों को लेकर उन डाकुओं का पीछा करना होगा। शुरू में बीसेक आदमी भेजूँगा, डाकुओं के अड्डे उस जंगल से साफ करने के लिये। वे कायर नहीं। उनमें हर आदमी अकेले ही भालू को खत्म कर डालता है। इस बात की संभावना नहीं कि डाकुओं को देखते ही वे दुम दबाकर भाग निकलें।"

भालू का उल्लेख होने से अंतन पफ्नुतेयेविच् को अपनी आप-बीती याद आ गई। कई मजाकों का वह स्वयं शिकार बन चुका था। उसने पूछा—"आपका वह भालू अब कैसा है किरिल पेत्रविच् साहब?"

किरिल पेत्रविच् ने उत्तर दिया—"मिशा स्वर्ग सिधार गया। अपने शत्रु के हाथ उसकी बड़ी सम्मानपूर्ण मृत्यु हुई! उसका विजेता यहाँ बैठा है।"—कहकर देफोर्गे की ओर उसने इशारा किया।..."मेरे फ्राँसीसी महात्मा की एक प्रतिमा बनवाकर अपने पास रखो! उसने तुम्हारा बदला ले लिया...अगर मैं ऐसा कहूं... क्या तुम्हें याद नहीं?"

अंतन ने शिर खुजलाते हुए उत्तर दिया—"हां, याद तो आ रहा है! हाँ अब याद आ गया! मिशा मर गया? सुनकर बड़ा दुख हुआ! सचमुच बड़ा दुख हो रहा है! वह बड़ा आनंदी जीव था! बड़ा चालाक था? उसके जैसा आपको दूसरा नहीं मिलेग।। मगर मोस्सो[1] ने मार क्यों डाला?"

बड़ी खुशी से किरिल पेत्रविच् ने फ्राँसीसी की वीरता की गाथा सुनाना शुरू किया। क्योंकि उसमें यह खास गुण था कि जो कोई भी अच्छी चीज किसी-न-किसी रूप में उससे सम्बंध रखती, उस पर वह गर्व किये बिना न रहता। भालू की मृत्यु की कथा उसके अतिथि बड़े ध्यान से सुनने लगे। बीच-बीच में अपनी अचरज भरी निगाहें देफोर्गे पर वे डालते जाते। देफोर्गे चुपचाप अपनी जगह बैठा था। बीच-बीच में अपने चंचल चेले को फटकार भी रहा था। इस बात का उसे पता भी न था कि इस समय उसी की बहादुरी का वर्णन हो रहा है।

---

[1] फ्राँसीसी

तीन घंटे तक भोजन समारोह जारी रहा। अब समाप्त हुआ। मेजबान ने अपना रूमाल मेज पर रख दिया। सभी उठ खड़े हुए और बैठकखाने को चल पड़े। वहाँ कॉफी और ताश के पत्ते उनका इन्तजार कर रहे थे। भोजन के समय आरम्भ हुआ शराब का दंगल अब भी जारी रहने वाला था।

(१०)

शाम के लगभग सात बजे कुछ मेहमानों ने जाने का विचार किया। किन्तु नशे में मस्त किरिल पेत्रविच् ने फाटक बंद करने का आदेश दिया और घोषित किया कि सबेरा होने तक किसी को वह जाने नहीं देगा। शीघ्र ही बैंड बाजे का निर्घोष सुनाई देने लगा। बड़े हॉल का दरवाजा खुल गया और नाच शुरू हो गया। त्रयेकुरोफ अपने मित्रों के साथ एक कोने में बैठ गया। शराब की प्यालियाँ-पर-प्यालियाँ उड़ेलने लगा। युवा नर-नारियों की आनंद क्रीड़ा वह देखने लगा।

एक तरफ बूढ़ी महिलाएं बैठी ताश खेल रही थीं। वहाँ पुरुषों की कमी थी। नाच के योग्य सभी पुरुष नाचने में भर्ती हो चुके थे। उनमें गृह-शिक्षक सबसे अधिक चमक रहा था। वह सबसे अधिक नाचा। सभी नवयुवतियाँ उसी के साथ नाचना पसन्द करतीं। उनका कहना था कि उसके साथ गति को संतुलित रखने में बड़ी आसानी होती है। मरिया किरिलोव्ना के साथ वह कई

बार नाचा और नौजवान स्त्रियां व्यंग भरी आँखों से उन्हें देख रही थीं। अन्ततः आधी रात के करीब त्रयेकुरोफ को थकावट महसूस हुई। नाच को रोकते हुए उसने रात्रि-भोजन का आदेश दिया और स्वयं सोने चला गया।

किरिल पेत्रविच् की अनुपस्थिति में वह गोष्ठी अधिक आनंद-मयी और उन्मुक्त बन गई। पुरुष महिलाओं के निकट अपना आसन जमाने लगे। लड़कियाँ हँसने और आस-पास के लोगों से काना-फूसी करने लगीं मेज के आर-पार महिलाएँ बड़े जोर से वार्तालाप का आनंद लेने लगीं। पुरुष शराब के नशे की मस्ती में बहस करने लगे, हँसने लगे। संक्षेप में, उस रात्रि की वह भोजन-गोष्ठी नितांत आनंददायक रही, और अनेक मीठी संस्मृतियों की छाप छोड़ गई।

केवल एक आदमी इस सार्वजनीन आनंद उत्सव में भाग न ले सका। अंतन पफ्नुतेयेविच् उदास चेहरा लिये चुपचाप बैठा रहा। खोया-खोया सा खाता रहा। मामूली बात पर भी वह नाराज हो जाता। डाकुओं के सम्बंध की बातचीत ने उसका चित्त विक्षुब्ध कर दिया था। बहुत जल्द हमें पता चल जायगा कि उसका भय-भीत होना अकारण न था।

भगवान की सौगन्द खाकर लाल तिजोरी खाली होने की बात कहकर अंतन पफ्नुतेयेविच् न कोई पाप किया न झूठ बोला। वास्तव में वह लाल तिजोरी खाली हो गई थी। किसी समय

उसमें जो पैसे रखे थे वहाँ से हटाकर एक चमड़े के बेग में रख दिये गये जिसे हमेशा वह कमीज के अंदर गर्दन में डाले रहता। आशंका उसके भय और अविश्वास को उत्तेजित करती रहती। एक अनजाने कमरे में रात बिताने को वह बाध्य हुआ था। उसे भय था कि वहाँ चोर बड़ी आसानी से घुस सकेंगे। एक विश्वस्त साथी की खोज में वह अगल-बगल झांक रहा था। अंत में देफोर्गे को उसने चुना। उसका गठीला बदन और भालू से निपटने में उसका साहस इस चुनाव में कारण था। बेचारा अंतन उस घटना को बिना भय के याद नहीं कर सकता। जब सब मेज से उठ गये, अंतन उस युवा फ्राँसीसी के निकट जा पहुँचा और आरम्भ में जरा खखारकर गला साफ करके उससे बोला:—

"हाँ जी, हाँ जी मोस्ये! मैं आज की रात आपके कमरे में बिता सकता हूँ? क्योंकि आपको पता होगा।"

"क्या चाहते हैं मोस्ये?"—देफोर्गे न विनम्र होकर फ्रेंच भाषा में पूछा।

"यह भी एक परेशानी है कि तुमने अब तक रूसी नहीं सीखी मोस्ये! ···मैं सोचता हूँ मेरी जगह तुम बैठते (फ्रेंच)—क्या तुम समझते हो?"

"बहुत खुशी से (फ्रेंच)। अच्छा तो आज्ञा दीजिये!"—देफोर्गे ने जवाब दिया।

उसके फ्रेंच भाषा के ज्ञान से अत्यंत संतुष्ट होकर अंतन पफ्नुतेयेविच् आवश्यक प्रबन्ध करने चला गया।

परस्पर अभिवादन करके मेहमान-लोग अपने-अपने कमरे में चले। अन्तन पफनुतेयेविच् गृह-शिक्षक के कमरे में चला। रात अँधेरी थी। गृह-शिक्षक ने लालटेन से रास्ता में उजाला कर दिया। पूरे विश्वास के साथ अन्तन उसके पीछे-पीछे चला। वह जा रहा था, अपनी छाती से चिपकाये बेग का स्पर्श कर रहा था। वह जानना चाहता था कि पैसा अभी उसी के पास है।

जब वे कमरे में पहुँचे, गृह शिक्षक ने मोमबत्ती जलाई। वे कपड़े बदलने लगे। इस बीच अन्तन कमरे के सब तरफ जा-जाकर दरवाजों और जंगलों की जाँच करने लगा। वहाँ की असंतोष-जनक वस्तु स्थिति पर वह शिर भी हिलाने लगा। दरवाजों पर ताले नहीं थे; केवल चिटकिनी थी। जंगलों में दोहरे फ्रेम नहीं थे। देफोर्गे से उसने इसकी शिकायत करनी चाही, किन्तु उसका फ्रेंच भाषा का ज्ञान बहुत सीमित था। इतनी जटिल व्याख्या के लिये वह पर्याप्त न था। फ्रांसीसी उसे समझ न सका, और अन्तन पफनुतेयेविच् को शिकायत करने का विचार छोड़ देना पड़ा। उनके बिछौने आमने-सामने थे। दोनों लेट गये और फ्रांसीसी ने मोमबत्ती बुझा दी।

फ्रेन्च व्याकरण के अनुसार 'बुझाने' क्रिया पद के रूप चलाने की चेष्टा करते हुए अन्तन पफनुतेयेविच् चिल्लाया—"क्यों तुम

बुझा रहे हो ? क्यों तुम बुझा रहे हो ? मैं अन्धेरे में नहीं सो सकता।"

उसके चीत्कार का स्पष्ट अभिप्राय न समझते हुए देफोर्गे ने उसके लिये शुभ-रात्रि की कामना की।

अन्तन पफनुतेयेविच् कंबल में अपने को लपेटते हुए बड़बड़ाने लगा—"अभागा बेदीन ! देखो तो, क्यों इसने मोमबत्ती बुझा दी ! इसके शिर पर गाज गिरे ! मुझसे तो बगैर रोशनी के सोया नहीं जाता ! मोस्सो ! ओ मोस्सो ! अरे मैं तुम्हीं से कह रहा हूँ लोस्मो ! (फ्रेंच)"

किंतु फ्राँसीसी ने कोई जवाब नहीं दिया। बहुत जल्द खर्राटे भरने लगा।

अंतन पफ्नुतेयेविच् ने सोचा—"बदमाश खर्राटे लेरहा है, लेकिन मेरे सोने का कोई सुयोग नहीं। खुले दरवाजे से किसी भी क्षण चोर अंदर आ जायेंगे, या खिड़की से आ जायेंगे। तोप की आवाज भी इस हरामजादे को जगा नहीं सकती !...मोस्सो ! ओ मोस्सो !...जहनुम में जा साले !"१

अंतन चुप हो गया। थकावट और शराब की मस्ती ने धीरे धीरे उसका भय कम कर दिया। ऊँघने लगा और शीघ्र ही गहरी नींद में निमग्न हो गया।

उसके भाग्य में अद्भुत जागरण बदा था। नींद में ही उसे मालूम पड़ा कि कोई उसकी कमीज की कालर धीरे-धीरे हिला

रहा है। अंतन की आँखें खुलीं और पतझड़ के प्रातःकालीन धुमिल आलोक में देफोर्गे को उसने देखा। फ्राँसीसी एक हाथ में में पिस्तौल लिये दूसरे हाथ से वह बहुमूल्य बेग खोल रहा था। अंतन मारे भय के पानी-पानी हो गया।

"क्या है? यह क्या कर रहे हो; मोस्सो? यह कैसा काम है, मोस्सो?"—लड़खड़ाती फ्रेंच भाषा में वह बोला।

"चुप! चुप रहो! नहीं तो जान से हाथ धोना पड़ेगा! मैं दुब्रोफ्स्की हूँ!"—गृह-शिक्षक ने विशुद्ध रूसी भाषा में जवाब दिया।

(११)

अब हम अपनी कहानी की घटनाओं से सम्बन्धित उन परिस्थियों की व्याख्या करना चाहते हैं, जिनके विवृत करने का समय अभी हमें नहीं मिला है।

पड़ाव-मुंशी का उल्लेख पहले एक बार हो चुका है। उसी के घर के एक कोने में एक यात्री बैठा था। उसके चेहरे पर विनम्र और निस्पृह भाव विद्यमान होना उसकी नीच जात और विदेशीपन को बता रहा था। अर्थात् एक आदमी जिसका पड़ाव पर कोई अधिकार नहीं। उसकी छोटी-सी गाड़ी आँगन में पड़ी तेल का इंतजार कर रही थी। उस पर एक छोटा सा सूटकेस था,

जिसका अल्प परिमाण उसके साधन की हीनता बता रहा था। उस यात्री ने न चाय के लिये आदेश दिया न कॉफी के लिये। मुँह की सीटी बजाता खिड़की के बाहर ताकता रहा। और उसकी सीटी से पिछले कमरे में बैठी पड़ाव-मुँशी की पत्नी परेशान हो रही थी।

मुँशी की पत्नी दबी जबान में बोली—"दूर हो कलमुँहा, सीटी बजा-बजाके कान खाये जा रहा है! कैसी है इसकी आदत! हरामजादे बेदीन पर गाज गिरे!"

"क्यों? इससे हमारा क्या बिगड़ता है? उसे सीटी बजाने दो।" मुँशी ने कहा।

"हमारा क्या बिगड़ता है! क्या तुम्हें वह कहावत याद नहीं?" उसकी पत्नी क्रुद्ध स्वर में बोली।

"कैसी कहावत? यही न कि मुँह की सीटी बजाने से लक्ष्मी भाग जाती है? यह बिल्कुल वाहियात है पहोमोव्ना! हमारे लिये सीटी का बजाना-न बजाना बराबर है। हमारे पास लक्ष्मी आई ही कब जो भाग जायगी?"

"उसे यहाँ से विदा करो सिदोरिच्! नाहक रोक रखने से फायदा क्या? घोड़े उसे दे दो, और जहन्नुम में जान दो।"

"वह इन्तजार कर सकता है पहोमोव्ना! केवल तीन ही त्रोइकाएँ अभी तैयार हैं। चौथी आराम कर रही है। किसी भी दम अच्छे यात्री आ धमकेंगे। इस फ्राँसीसी की खातिर में अपनी पीठ फोड़वाना नहीं चाहता। हः! मैं सोच ही रहा था!

वह देखो किसी की गाड़ी इसी ओर आ रही है। उफ्! कितनी तेज आ रही है! मुझे भय है कहीं कोई जनरल न हो?"

एक गाड़ी पौढ़ियों तक आके खड़ी हो गई। कोच-बक्स पर से नौकर कूदकर नीचे आया। गाड़ी का दरवाजा उसने खोल दिया, और एक मिनट के अन्दर ही फौजी पोशाक और सफेद टोपी पहने एक नौजवान पड़ाव-मुँशी के घर में प्रविष्ट हुआ। उसके पीछे हाथ में बक्सा लिये नौकर प्रविष्ट हुआ। बक्से को उसने खिड़की की ताक पर रख दिया।

"घोड़े!"—अफसर ने रौब के साथ कहा।

"हाँ बाबू जी! अपना पास जरा दिखलायेंगे सरकार?"—मुँशी ने जवाब दिया।

"मेरे पास पास-वास नहीं! मैं खास रास्ते से नहीं जा रहा। ··· क्या तुम मुझे जानते नहीं?"

पड़ाव-मुँशी घबड़ा गया। चट कमरे से बाहर आकर कोचवान को जल्द गाड़ी तैयार करने की ताकीद कर दी। वह नौजवान कमरे के भीतर चहल कदमी करते हुए पिछवाड़े के कमरे में जाकर मुंशी की पत्नी से चुपके से पूछा—"यह दूसरा यात्री कौन है?"

"भगवान जानें कौन है! कोई फ्राँसीसी है। घोड़े के लिये बैठा है। और पाँच घंटे से मुँह की सीटी बजाये जा रहा है। मेरा तो नाक में दम कर दिया है! बज्र गिरे उस पर!"

नवयुवक ने उस यात्री से फ्रेंच में बोलना शुरू किया।

"तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"सबसे नजदीक के शहर में। और वहाँ से जिले के एक जमीनदर के यहाँ। चिट्ठी-पत्री करके जमीनदार ने मुझे गृह-शिक्षक नियुक्त किया है। सोचा था कि आज ही वहां पहुँच जाऊँगा, लेकिन लगता है कि मुंशी जी ने कुछ और ही फैसला कर रक्खा है। इस देश में घोड़े पा जाना आसान नहीं है बाबू जी !"

"किस जमीनदार ने तुम्हें नियुक्त किया है ?"—अफसर ने पूछा।

"त्रयेकुरोफ ने।" —फ्राँसीसी ने जवाब दिया।

"त्रयकुरोफ ने ? यह त्रयेकुरोफ कौन है ?

"क्या कहूँ महाशय ! उसके बारे में तो अच्छी बातें नहीं सुनी हैं। कहते हैं, वह बड़ा घमंडी है, गरम-मिजाज है, अपने नौकरों के प्रति उसका व्यवहार बड़ा क्रूर होता है। किसी की उससे बनती नहीं। उसके नाम से ही लोग काँपते हैं। गृह-शिक्षकों के साथ सलूक उसका अच्छा नहीं। पहले ही उसने दो को कोड़ों से पीट-पीट के मार डाला है।"

"हे भगवान ! और तुम ऐसे पिशाच की नौकरी करने का साहस कर रहे हो ?"

"लेकिन बाबू जी ! आखिर करूँ क्या ? वह मुझे अच्छी

तनख्वाह दे रहा है—तीन हजार रूबल सालाना! सो भी नगदा-नगद। हो सकता है औरों से मेरी किस्मत अच्छी हो! मेरे एक बुढ़िया माँ है। गुजारे के लिये अपनी तनख्वाह का आधा उसे भेज दूँगा, और बाकी से पाँच साल में एक छोटी सी पूँजी जमा कर लूँगा। यह मेरे स्वतंत्र व्यवसाय के लिये काफी होगी। फिर तो राम-राम करके पैरिस की राह लूँगा, और अपना कोई स्वतंत्र कारोबार शुरू कर दूँगा।"

"त्रयेकुरोफ के घर में तुम्हें कोई पहचानता है?"

"कोई नहीं। मास्को के उसके एक मित्र ने मेरे बारे में उसे लिखा। उसके मित्र का बावर्ची मेरे देश का है। उसी ने मेरी सिफारिश की है। मैं आपसे साफ बता देना चाहता हूँ कि मैं तो मीठी रोटी बनाने की विद्या पढ़ा हूँ, पढ़ाने की नहीं। लेकिन सुना है कि आपके देश में अध्यापक बन जाना बड़ा फायदेमंद है।"

वह अफसर कुछ देर सोचता रहा। फिर फ्राँसीसी से बोला—"देखो भाई! एक शर्त है। यदि तुम्हें नकद दस हजार रूबल मिल जायँ, तो इसी वक्त पैरिस चल दोगे?"

फ्राँसीसी ने अचरज भरी निगाहों से उस अफसर को देखा, और मुस्कराकर अपना सिर हिला दिया।

"घोड़े तैयार हैं।"—अन्दर पैर रखते हुए मुंशी ने कहा और नौकर ने उसकी बात की पुष्टि की।

"मैं आ रहा हूँ। एक मिनट के लिये कमरे से चले जाओ।"—अफसर ने उत्तर दिया।

मुंशी और नौकर बाहर चले गये।

अब अफसर ने फ्रेंच भाषा में कहना आरम्भ किया—"मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। तुम्हें दस हजार रूबल दे सकता हूँ। बदले में केवल तुम्हारी अनुपस्थिति और तुम्हारे कागज-पत्र चाहता हूँ।"

इन शब्दों के साथ उसने सूटकेस से खोलकर नोटों के कई पुलन्दे बाहर निकाले। फ्राँसीसी टकटकी लगाके उसकी ओर देखने लगा। उसकी समझ में कुछ आ नहीं रहा था।

"मेरी अनुपस्थिति···मेरे कागज-पत्र···"—आश्चर्य भरे स्वर में इन शब्दों को फ्रांसीसी ने दुहराया। फिर बोला—"यह लीजिये। लेकिन सचमुच आप मजाक तो नही कर रहे ? मेरे कागज-पत्र लेके आप करेंगे क्या ?"

"इससे तुम्हारा कोई मतलब नहीं। मैं पूछता हूँ कि तुम राजी हो या नहीं ?"

फ्रांसीसी को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उस युवा अफसर को उसने अपने कागज-पत्र दे दिये। अफसर ने उड़ती निगाहों से उन्हें देखा।

"यह तुम्हारा पास-पोर्ट है।···बहुत अच्छा। यह परिचय-पत्र है।···जरा इसे देख लूँ।···यह तुम्हारी जन्म-पत्री है।···बिल्कुल

ठीक।···अच्छा, लो अपने पैसे। लौट जाओ।···नमस्ते!"

फ्रांसीसी बेचारा दंग रह गया था। अफसर फिर एक बार उसकी ओर मुड़ा और बोला—"सबसे महत्व की बात कहना मैं भूल ही गया था। मुझसे शपथ करो कि ये सारी बातें हम दोनों के बीच गुप्त रहेंगी।···शपथ करो!"

"हाँ मैं शपथ करता हूँ। लेकिन मेरे कागज-पत्र? उनके बिना मेरा क्या होगा?"—फ्रांसीसी ने जवाब दिया।

"सबसे पहले के शहर में पहुँचते ही बता देना, दुब्रोफ्स्की ने मुझे लूट लिया है। अधिकारी तुमपर विश्वास कर लेंगे और आवश्यक प्रमाण-पत्र बना देंगे।···नमस्ते! आशा है बहुत शीघ्र पेरिस पहुँचकर तुम अपनी माँ को भली-चंगी देख पाओगे।"

दुब्रोफ्स्की कमरे से निकल पड़ा और गाड़ी में बैठते ही जोर से गाड़ी चलाने का हुक्म दे दिया।

पड़ाव मुंशी खिड़की में से देख रहा था। जब गाड़ी आँखों से ओझल हो गई अपनी पत्नी की ओर मुड़कर वह बोला—"पहो मोठना! तुम्हें मालूम नहीं पड़ा? वह दुब्रोफ्स्की था!"

उसकी पत्नी सीधे खिड़की की ओर दौड़ी आई, लेकिन मौका हाथ से निकल चुका था। दुब्रोफस्की बहुत दूर निकल गया था। अब वह पति को फटकारने लगी—"तुम्हें भगवान का भय नहीं सिदोरिच! तुमने क्यों नहीं कहा? मैं दुब्रोफस्की की जरा झाँकी तो ले लेती। भगवान जाने, फिर कब यहाँ आता है?

बात दरअसल यह है कि तुम अक्ल के पक्के दुश्मन हो।"

फ्रांसीसी गड़े काठ की तरह वहाँ खड़ा था। वे पैसे और उस अफसर के साथ किया गया समझौता, सब उसे सपना मालूम हो रहा था। लेकिन नोटों के बंडल उसके पाकिट में मौजूद थे। उस आश्चर्यजनक घटना की वास्तविकता प्रमाणित करने के वे प्रबल प्रमाण थे।

उसने शहर जाने के लिये किराये पर घोड़े लेने का निर्णय किया। घोड़े लिये। कोचवान कछुए की चाल से चल रहा था। शहर में पहुँचते-पहुँचते रात हो गई।

जब वे शहर के फाटक पर पहुँचे, वहाँ सन्तरी की जगह संतरी के बचाव के लिए बना एक बॉक्स था। फ्रांसीसी ने कोचवान से गाड़ी रोकने को कहा। गाड़ी से उतर कर वह आगे चलता बना और सूटकेस इनाम के तौर पर दे दिया है। उसकी उदारता से कोचवान उतना ही आाचर्यचकित हुआ चितना कि दुब्रोफस्की के पुरस्कार से वह फ्रांसीसो स्वयं हुआ था। लेकिन कोचवान ने अन्ततः यही अर्थ लगाया कि विदेशी बाबू पागल हो गया है, और लम्बे सलाम के द्वारा उसे धन्यबाद दे स्वयं शहर न जाने में ही उसने भलाई समझी। मनबहलाव के एक अड्डे पर चलता बना। अड्डे का मालिक उसका मित्र था। उसने सारी रात वहाँ बिताई और दूसरे दिन सबेरे अपने तीन घोड़ों के साथ वहाँ से चल पड़ा। लेकिन न वह गाड़ी ही उसके पास थी, न वह सूटकेस। चेहरा उसका

सूजा हुआ था। आँखें उसकी लाल थीं।

जैसा कि बता चुके हैं, फ्रांसीसी के कागज-पत्र हथियाकर दुब्रोफस्की बड़े तपाक से त्रयेकुरोफ के सामने उपस्थित हुआ और उसके घर में जा डटा। गुप्त अभिप्राय उसका जो भी रहा हो (बाद में उसका पता चलेगा) उसके आचार-विचार में कोई त्रुटि न थी। यह सच है कि वह उस नन्हे सशा की पढ़ाई में अपने को अधिक लगाये नहीं रहता। बचे समय में लड़के को पूरी स्वतंत्रता दे देता। पाठ आदि के बारे में भी अधिक कड़ाई नहीं करता। लेकिन दूसरी तरफ संगीत में मरिया की प्रगति पर वह अधिकाधिक ध्यान देता। अक्सर उसके साथ पियानों पर घंटों बिता देता। हर आदमी इस युवा-गृह-शिक्षक को चाहता। किरिल पेत्रविच शिकार के मैदान में उसके साहस और हाथ की सफाई के लिये; मरिया किरिलोव्ना उसके अनंत अनुराग और सम्मानपूर्ण तत्परता के लिये; सशा उसकी नरमी के लिये; और नौकर-चाकर उसकी दयालुता और उदारता के लिये जो उसके पद-मर्यादा से बाहर की बात थी। ऐसा लगता कि वह सारे परिवार को चाहता है, और अपने को उसी परिवार का एक सदस्य समझता है।

उसके गृह-शिक्षक बनने तथा उस स्मरणीय उत्सव के आरम्भ होने तक एक महीने का समय बीत गया। किसी को संदेह भी नहीं हुआ कि यह भोला-भाला फ्रांसीसी एक भयानक डाकू है। जिसका नाम आस-पास के जमीनदारों में भय का तूफान उत्पन्न

कर देता है । इस अवधि में दुब्रोफ़स्की पक्रोफ़स्कये गाँव से बाहर नहीं निकला। किंतु उसकी डकैती की अफवाह फैलने से कभी नहीं चूकी । अफवाह के फैलने में ग्रामीण लोगों के उर्वर मस्तिष्क की कल्पना भी कारण थी। हाँ, यह भी सही है कि उसके सहयोगी अपने सरदार की अनुपस्थिति में भी कारगुजारी से सम्भवतः बाज नहीं आ रहे थे।

एक कमरे में उसे एक ऐसे आदमी के साथ रात बितानी पड़ी, जिसे वह ठीक ही अपना वैयक्तिक शत्रु समझता था, जो उसके दुर्भाग्य का कारण था । दुब्रोफ़्स्की लोभ संवरण न कर सका । उस बहुमूल्य बेग के बारे में वह जान गया और उसे हथियाने का उसने निर्णय किया। हम देख ही चुके हैं कि सहसा गृह-शिक्षक से डाकू बनकर उसने बेचारे अन्तन पफ्नुतेयेविच को कितना आश्चर्यचकित कर दिया था !

(१२)

पक्रोफ्स्कये में जिन अतिथियों ने रात बिताई थी, वे नौ बजे सबेरे एक-एक करके बैठक में इकट्ठे होने लगे। वहाँ पहले से ही सामवार खौल रहा था ! मरिया किरिलोव्ना प्रातःकालीन गाउन पहने सामवार के आगे बैठी थी और किरिल पेत्रविच् कंबल का कोट और स्लीपर पहने एक बड़ी प्याली में चाय पी रहा था।

सबके अंत में आने वालों में अंतन पफ़्नुतेयेविच् था। उसका चेहरा इतना बदरंग और उदास था कि देखकर सभी दंग रह गए। किरिल पेत्रविच ने उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में पूछताछ की। अंतन ने ऊटपटांग जवाब दिया। भयभीत आँखों से गृह-शिक्षक को देख रहा था। और गृह-शिक्षक बड़ी लापरवाही से मेज के आगे बैठा दूसरों से वार्तालाप कर रहा था। कुछेक मिनट बाद नौकर से आकर अंतन को बताया कि उसकी गाड़ी तैयार खड़ी है। वह बड़ी जल्दी कमरे से निकलकर चलता बना। त्रयेकुरोफ और दूसरे मेहमानों की समझ में नहीं आ रहा था कि मामला क्या है। उसे क्या हो गया है। अन्त में किरिल पेत्रविच ने यही निर्णय किया कि उसने जरूरत से ज्यादा खा लिया है। सबेरे की चाय और विदा के भोजन के बाद दूसरे अतिथि भी चलते बने। बहुत जल्द पक्रोफ्स्कये में शांति विराजने लगी। सदा की तरह सब काम चलने लगा।

कई दिन बीत चले। कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। पक्रोफ्स्कये का जीवन स्वाभाविक था। किरिल पेत्रविच प्रतिदिन शिकार को जाता, किताबें पढ़ता, सैर करता। मिरिया किरिलोव्ना का समय संगीत में कट रहा था। अपने हृदय को उसने समझना शुरू किया। परेशानी के साथ अपने तईं उसे स्वीकार करना पड़ा कि उस युवा फ्रांसीसी के उत्तम गुणों के प्रति वह निरपेक्ष नहीं है। अपनी ओर से फ्रांसीसी ने सभ्यता के कठोर नियम

और सम्मान की सीमा का उल्लंघन कभी नहीं किया। उसके इस व्यवहार ने मरिया किरिलोव्ना के स्वाभिमान एवं सलज्ज संदेह को कोमल बना दिया। अधिकाधिक विश्वास के साथ उसके साथ रहने की आनन्दमयी आदत की वह वशीभूत होती गई। उसके बिना वह उदास हो जाती। और जब उसके साथ होती प्रतिक्षण उसका मुँह हेरती, हर बात में उसकी राय जानना चाहती, और उसकी प्रत्येक राय से सहमत हो जाती। उसके प्रति उसके हृदय में प्रेम शायद अभी पैदा नहीं हुआ था, किन्तु इतना निश्चित था कि उस प्रेम-पथ पर दुर्भाग्य द्वारा रोड़े अटकाते ही प्रेम की चिनगारी उसके दिल में भभक सकती थी।

एक दिन मरिया किरिलोव्ना अपनी बैठक में प्रविष्ट हुई। वहाँ गृह-शिक्षक पहले से ही उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसके मुरझाए चेहरे पर घबराहट का चिन्ह देख मरिया को बड़ा अचरज हुआ। पिआनो खोलकर उसने संगीत के कुछ स्वर अलापे। किन्तु दुब्रोफ्स्का ने शिर-दर्द का बहाना करके आगेका पाठ पढ़ाने में असमर्थता प्रकट की। संगीत की किताब बन्द कर मरिया को उसने एक पत्र दिया। कुछ सोचने-समझने से पहले ही, उसने चिट्ठी ले ली और उसी क्षण पछताने लगी। किन्तु दुब्रोफ्स्का का अब कमरे में पता न था। मरिया अपने कमरे में चली गई और पत्र खोलकर पढ़ने लगी:—

"आज शाम के सात बजे उस नाले पर के निकुञ्जमें मिलिये।

मुझे आपसे जरूरी बातें कहनी हैं।"

उत्सुकता उसकी बढ़ गई। वह बहुत दिनों से प्रेम के उद्घोष की आशा में थी। वह इसके लिए इच्छुक भी थी, डरती भी थी। इस बात पर उसे प्रसन्नता हो रही थी कि अब तक जो अनुमान वह लगा रही थी उसकी पुष्टि हो जायगी। लेकिन यह भी सोच रही थी कि एक ऐसे व्यक्ति के मुख से प्रेम की प्रार्थना सुनना उसके लिए अनुचित है, जो अपनी लौकिक परिस्थिति के कारण उसको पाणि-ग्रहण की कभी आशा नहीं कर सकता उससे एकान्त में मिलने का निर्णय उसने कर लिया, किन्तु यह निश्चय न कर सकी कि गृह-शिक्षक की प्रणय-प्रार्थना को वह बड़प्पन भरे क्रोध से ग्रहण करेगी, या मैत्रीपूर्ण परामर्श के रूप में या सुन्दर मजाक के रूप में, या मौन सहानुभूति के रूप में। इस बीच घड़ी पर नजर गड़ाये रही। अंधेरा हो गया। कमरे में मोमबत्ती जलाकर रख दी गई। कुछ मेहमानों के साथ किरिल पेत्रविच् वेस्टन खेलने के लिए बैठ गया। भोजनशाला की घड़ी ने पौने सात बजा दिये। मरिया किरिलोव्ना धीरे-धीरे पौढ़ियों से उतरकर इधर-उधर देख चट से बगीचे में दौड़ पड़ी।

रात अंधेरी थी। आकाश बादलों से घिरा था। दो कदम भी आगे सूझ नहीं रहा था। किन्तु अंधेरे में भी परिचित पथ के सहारे मरिया आगे बढ़ती गई और एक मिनट के भीतर निकुंज में पहुँच गई। जरा साँस लेने के लिए खड़ी हो गई, जिससे कि देफोर्गे के आगे वह शान्त और निरपेक्ष भाव से खड़ी

हो सके। किन्तु देफोर्गे वहाँ पहले से ही मौजूद था।

धीमे किन्तु करुण स्वर में देफोर्गे बोला—"मेरी प्रार्थना को न ठुकराने के उपलक्ष में आपको धन्यवाद! मैं बड़ा निराश हो गया होता यदि आप आई न होतीं!"

मरिया किरिलोव्ना ने पहले से ही सोचे वाक्य के द्वारा इसका उत्तर दिया—"आशा है आप मुझे पछतावे में न डालेंगे।"

वह कुछ न बोला। अपने साहस को बटोरता प्रतीत हुआ। अन्त में वह बोला—"परिस्थिति का तकाजा है···मुझे आपसे अलग होना पड़ रहा है। शायद बहुत जल्द ही आप सुन लेंगी··· लेकिन अलग होने से पहले अपने दिल को खोलकर आपके सामने रख देना चाहता हूँ।"

मरिया ने उत्तर नहीं दिया। उसने सोचा कि उसके शब्द उस प्रेम-उद्घोष की भूमिका हैं जिसकी वह आशा कर रही थी।

सिर झुकाए वह कहता गया—"मैं वह नहीं हूँ जो आप समझती हैं। मैं फ्रांसीसी नहीं हूँ। मेरा नाम देफोर्गे नहीं है। मैं दुब्रोफ्स्की हूँ।"

मरिया चीख उठी।

"भगवान के लिए डरो मत! मेरे नाम से डरो मत! हाँ, मैं वही अभागा हूँ जिसका तुम्हारे पिता ने सर्वनाश कर दिया है। उसने मुझे पैतृक घर से निकाल कर डाकुओं का जीवन बिताने को बांध्य कर दिया है। लेकिन तुम्हें डरने की जरूरत नहीं। न

अपने लिये, न अपने पिता के लिए। अब सब कुछ समाप्त हो गया···मैंने उसे माफ कर दिया। सुनो! तुमने ही उसे बचाया है। मैं सबसे पहले उसीका खून करना चाहता था। मैं उसके घर के चारों ओर चक्कर लगाता रहता और सोचता रहता—कहाँ आग लगाई जाय, किस रास्ते उसके शयनागार में घुसा जाय, उसके बच निकलने के सारे साधन कैसे नष्ट कर दिये जायँ। उसी समय एक स्वर्गीय ज्योति की तरह तुम मेरे सामनेसे गुजरीं। मेरे दिल को तुमने जीत लिया। मैं समझ गया कि जिस घर में तुम्हारा वास है, वह मेरे लिए पुण्य भूमि है। एक प्राणी भी, जिसका तुम्हारे साथ रक्त का सम्बन्ध है, मेरे प्रतिशोध का लक्ष्य नहीं बन सकता। मैंने पागलपन का भाँति प्रतिशोध की भावना को तिलांजलि दे दी।

"कई दिनों तक पक्रोफ्स्कये के उपवन का चक्कर मैं लगाता रहा, इस आशा में कि तुम्हारे धवल परिधान की एक झांकी ले सकूँ। तुम असावधान होकर टहलतीं, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चलता, इस झाड़ी से उस झाड़ी में अपने को छिपाता हुआ। मैं इस आनन्दमय विचार में विभोर था कि जहाँ मैं छिपकर विद्यमान हूँ तुम्हें कोई खतरा नहीं।

"अन्त में एक मौका उपस्थित हुआ।···मैंने तुम्हारे घर में पैर जमा लिया। ये तीन हफ्ते मेरे सुख के दिन थे, जिनकी स्मृतियाँ मेरे निराश जीवन को जगाती रहेंगी।···

"आज सबेरे मुझे एक ऐसी खबर मिली कि मेरा अब यहाँ रहना असम्भव बन गया। इसी शाम को इसी क्षण में तुमसे विदा ले रहा हूँ। लेकिन विदा होने के पहले अपना दिल खोलकर तुम्हारे आगे रख देना चाहता हूँ, जिससे कि तुम मुझे अभिशप्त न कर सको। घृणा न कर सको! कभी-कभी दुब्रोफस्कीको याद करना! मुझ पर विश्वास करो कि किसी और ही तरह के जीवन के निमित्त वह पैदा हुआ था, और उसकी आत्मा तुमको प्यार करना जानती थी, जो कि…"

उसी समय किसी के मुँह से सिटी बजने की भारी आवाज सुनाई दी। दुब्रोफस्की दुविधा में पड़ गया। मरिया किरिलोव्ना का हाथ पकड़कर अपने ओठों से सटा लिया। सिटी फिर बजी।

दुब्रोफस्की बोला—"नमस्ते! मुझे बुलाया जा रहा है। एक क्षण की देर भी मेरा सर्वनाश कर देगी।…"

वह चल पड़ा।… मरिया किरिलोव्ना खड़ी रही। दुब्रोफस्की ने फिर वापस आकर उसका हाथ पकड़ लिया। अत्यन्त कोमल एवं करुण स्वर में बोला—"यदि कभी…यदि कभी तुम पर मुसीबत आये, और तुम्हारी रक्षा या मदद करने वाला कोई न हो, तो क्या तुम बचन दे सकती हो कि अपनी रक्षा के लिए मुझे याद करोगी? क्या तुम वचन दे सकती हो कि मेरे अनुराग को घृणा से ठुकराओगी नहीं?"

मरिया किरिलोव्ना चुपके-चुपके रो रही थी। तीसरी बार सिटी बजी।

दुब्रोफ्स्की चिल्लाया—"तुम मेरा सत्यानाश कर रही हो! जब तक तुम जवाब नहीं देतीं, मैं यहाँ से हटता नहीं! बचन दे रही हो या नहीं?"

"मैं वचन दे रही हूँ।"—वह सुन्दर तरुणी निराशाभरे स्वर में चुपके से बोली।"

दुब्रोफस्की से मिलकर मरिया का चित्त अशान्त हो उठा था। वह बगीचे से वापस आ रही थी उसे मालूम पड़ा आँगन में बहुत से लोग खड़े हैं। पौढ़ियों के आगे एक त्रोइका खड़ी थी। जहाँ-तहाँ नौकर-चाकर दौड़ रहे थे। सारे घर में खलबली मच गई थी। दूर से ही किरिल पेत्रविच् की आवाज सुनाई दी। मरिया झट घर के भीतर घुस गई। उसे भय था कि कहीं उसकी अनुपस्थिति भाँप न ली जाय। उसका पिता उससे बैठकखाने में मिला। उसके मेहमान पुलिस-कप्तान को घेरकर खड़े थे और उस पर प्रश्नों की झड़ी लगा रहे थे। पुलिस-कप्तान सफरी पोशाक पहने था। हथियार से पूरी तरह लैस था। रहस्यमयता और गम्भीरता के भाव दर्शाते हुए प्रश्नों के उत्तर दे रहा था।

"कहाँ तुम गई थी माशा? तुमने मोस्ये देफोर्गे को देखा?" —किरिल पेत्रविच् ने पूछा।

मशा ने किसी तरह 'ना' में जवाब दिया।

किरिल पेत्रविच् बोलने लगा—"क्या तुम विश्वास करोगी कि पुलिस-कप्तान उसे गिरफ्तार करने आया है? यह मुझे विश्वास दिला रहा है कि वह दुब्रोफ्स्की है!"

"उसके हुलिये का विवरण बिल्कुल उससे मिलता है सरकार!—" पुलिस-कप्तान सम्मानके साथ बीच में ही बोल पड़ा।

"जाओ जहन्नुम में अपने विवरण के साथ! जब तक मैं स्वयं जाँच नहीं कर लूँगा, अपने फ्रांसीसी को तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता। अन्तन पफनुतेयेविच् की बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता। वह झूठा है! डरपोक है! उसने सपना देखा होगा कि गृह-शिक्षक उसे लूटना चाहता है। उसने क्यों नहीं उसी सबेरे मुझको बताया?"

"फ्रांसीसी ने उसे धमकी दी थी सरकार! और उससे सौगंद ली थी कि वह किसी से नहीं कहेगा।"—कप्तान ने जवाब दिया।

किरिल पेत्रविच् ने कहा—"वाहियात! मैं एक मिनट में सब कुछ साफ किये लेता हूँ।—"अच्छा, गृह-शिक्षक कहाँ है?"—उसने नौकर से पूछा जो उसी समय कमरे में प्रविष्ट हुआ था।

"उनका पता नहीं है सरकार!"—नौकर ने जवाब दिया।

"तो फिर उसका पता लगाओ!"—त्रयेकुरोफ चिल्लाया। उसके मन में सन्देह का अंकुर पैदा होने लगा।......"अच्छा तो उसके हुलिए का वह विवरण तो मुझे दिखाओ जिसपर तुम्हें

इतना गर्व है।"—उसने पुलिस-कप्तान से कहा।"

कप्तान ने उसी क्षण वह कागज का टुकड़ा उसके हाथ में रख दिया।

"हुँः! हुँः!"...उम्र तेइस साल की...इत्यादि इत्यादि। सब कुछ तो ठीक है, लेकिन इससे साबित तो कुछ होता नहीं।...अच्छा शिक्षक कहाँ है?"

"पता नहीं लग रहा है सरकार!"...—फिर जवाब मिला।

किरिल पेत्रविच् की बेचैनी बढ़ने लगी। माशा के चेहरे पर मुर्दनी छा गई।

"तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया है माशा! तुम डर तो नहीं गई?"—उसके पिता ने कहा।

"नहीं पापा! मुझे सिरदर्द हो रहा है।"

अपने कमरे में चली जाओ माशा! फिक्र न करो!"

माशा ने उसका हाथ चूमा और चट अपने कमरे को चल पड़ी। वहाँ जाते ही बिछौने पर धम से लुढ़क पड़ी। मूर्छित होके रोने लगी। दासियाँ दौड़ पड़ीं। उसके कपड़े उतार कर ठंडे जल के छींटें डालने और तरह-तरह के सुगन्धित लवणों का प्रयोग करने पर उन्हें सफलता मिली। उन्होंने मरिया को बिछौने पर सुला दिया। वह निद्रा में निमग्न हो गई।

अब तक फ्रांसीसी का कहीं पता न चला। किरिल पेत्रविच गुस्से की सिसकारी भरता हुआ कमरे में चहल कदमी कर रहा

था। विजयकी बिजली गरज उठी! दर्शकवृन्द आपसमें कानाफूसी कर रहे थे। पुलिस-कप्तान साफ बेवकूफ बन चुका था। फ्रांसीसी का कहीं पता न था। शायद चेतावनी पाकर वह भाग निकलने में सफल हो गया। लेकिन चेतावनी दी किसने? कैसे उसे चेतावनी मिली? यह रहस्य बना रहा।

घड़ी ने ग्यारह बजा दिये, किन्तु किसी ने बिछौने पर जाने का नाम नहीं लिया। अन्त में किरिल पेत्रविच् क्रुद्ध होकर पुलिस कप्तान से बोला—"अच्छा भाई! सबेरा होने तक तुम यहाँ ठहर नहीं सकते! मेरा घर सराय नहीं है! तुम में वह तेजी नहीं कि दुब्रोफ्स्की को पकड़ सको, यदि वह वास्तव में दुब्रोफ्स्की है। अब घर जाओ! आगे के लिए कुछ तेज बनने की चेष्टा करो!" ... फिर अपने मेहमानों की ओर मुड़कर बोला—"आप लोगों के भी घर जाने का समय हो गया है। अपनी-अपनी गाड़ियाँ तैयार करने का आदेश देते जाइये! मुझे नींद आ रही है!"

इस प्रकार बड़ी बेमुरव्वती से त्रयेकुरोफ ने मेहमानों से पिंड छुड़ाया।

(१३

कुछ समय बीत गया। कोई उल्लेख योग्य घटना घटी नहीं। लेकिन आगामी ग्रीष्म के आरम्भ में किरिल पेत्रविच् के पारि-

वारिक जीवन में बहुत से परिवर्तन हुए।

उसके घर से बीस मील पर कुमार वेरेइस्की की फलती-फूलती जमीनदारी थी। कुमार साहब ने जीवन के बहुतेरे वर्ष विदेशों में बिताये थे। एक अवकाश प्राप्त मेजर उनकी जमीनदारी की देख-भाल करता। पक्रोफ्स्कये और अर्वातोवो में कोई सम्बन्ध न था। किन्तु मई के अन्त में कुमार-साहब अपने देहात वाले मकान को लौटे जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। सदा से गोष्ठी जीवन का आदी होने के कारण अकेलापन उनके लिए दुःसह बन गया। अपने अपने तीसरे दिन वे त्रयेकुरोफ के साथ भोजन का आनन्द लेने चल पड़े, जिसे वे वर्षों पहले से जानते थे। कुमार की उम्र पचास के करीब थी, लेकिन देखने में अधिक लगती। हर प्रकार का असंयम उसके स्वास्थ्य को गिराकर अपनी अमिट छाप उस पर छोड़ गया था। वह निरन्तर उचाटपन का अनुभव करता। निरन्तर उसे मनोरंजन की आवश्यकता थी। इन सब बातों के बावजूद उसका चेहरा आकर्षक एवं प्रभावशाली था। सदा गोष्ठी में रहने की आदत ने उसके व्यवहार को सुकोमल बना दिया था, खासकर औरतों के प्रति। किरिल पेत्रविच् उसके आगमन से अत्यन्त कृतज्ञता अनुभव कर रहा था। इसे वह विश्व का ज्ञान रखने वाले एक व्यक्ति की ओर से अपने प्रति प्रदर्शित सम्मान के रूप में समझ रहा था। अपनी आदत के अनुसार अपनी जमीनदारी की बहुतेरी चीजें दिखाकर तथा अपनी श्वान-

शाला का निरीक्षण कराके कुमार का उसने मनोरंजन किया। कुत्तों की दुर्गन्धि से कुमार का दम घुटने लगा। अपनी नाक को सुगन्धित रूमाल से दबाकर वह चट वहाँ से आगे निकल गया। कतरे नींबू के वृक्षों से सज्जित पुराने ढंग का बगीचा, वर्गाकार बावली और नियमित उपपथ उसे पसन्द नहीं आये। अंग्रेजी ढंग के बगीचे और तथाकथित प्रकृति का वह पुजारी था। किन्तु उसने हर चीज की प्रशंसा की, प्रसन्न होने का अभिनय किया। नौकर ने आकर बताया, भोजन तैयार है। वे अन्दर चले गये। कुमार थक गया था। लंगड़ाकर चल रहा था। वहाँ आकर पछता रहा था।

किन्तु भोजनशाला में उसने मरिया किरिलोव्ना को देखा। यह बुड्ढा लंपट उसकी सुन्दरता पर अवाक रह गया। त्रयेकुरोफ ने अपने अतिथि को उसके निकट बैठाया। माशा की उपस्थिति ने कुमार में जान डाल दी। अपनी रोचक कहानियों के द्वारा उसका ध्यान अपनी ओर अधिकाधिक बार आकृष्ट करने में उसे सफलता मिली। भोजन के बाद किरिल पेत्रविच ने उसे घुड़दौड़ के लिये आमंत्रित किया, किन्तु कुमार ने अपने मखमली जूते और गठिया की बीमारी का निर्देश करते हुए क्षमा-प्रार्थना की। उसने गाड़ी-दौड़ का सुझाव पेश किया, जिससे कि उसे उस मनोमोहिनी पड़ोसिन से बिछोह का मौका न मिले। गाड़ी तैयार करने का हुक्म दिया गया। दोनों बूढ़े और वह रूपसी तरुणी गाड़ी में बैठ गये। गाड़ी चल पड़ी। वार्तालाप में जरा भी शिथि-

लता न आई। मरिया किरिलोव्ना बड़े ध्यान से उस विश्वदर्शी व्यक्तिकी चुभती चुटकीली उक्तियाँ सुनती रही।

सहसा किरिल पेत्रविच की ओर मुड़कर वेरेइस्की ने पूछा—यह "जले मलबों का ढेर कैसा है? यह क्या आपकी है?"

किरिल पेत्रविच की भौंएँ तन गईं। उस जले भवन को देखकर जो स्मृतियाँ उसके दिल में जग उठीं वे बड़ी कड़वी थीं। उसने उत्तर में बताया कि यह जमीन इस समय उसी की है, लेकिन पहले दुब्रोफस्की की थी।

"दुब्रोफस्की की? उस प्रसिद्ध डाकू की?"—वेरइस्की ने पूछा।

"उसके पिता की। उसका पिता भी एक प्रकार का डाकू ही था।"—त्रयेकुरोफ ने जवाब दिया।

"अब हमारे इस रिनाल्दो[1] का क्या हाल है? क्या पकड़ा गया? क्या अभी जीवित है?"

"जीवित है, और अब भी उसका उत्पात जारी है। जब तक हमारे इन पुलिस-कप्तानों में चारों ओर बदमाशों की तादाद बनी रहेगी, उसके पकड़े जाने की सम्भावना नहीं। हाँ कुमार साहब! दुब्रोफस्की ने कभी आपके अर्बातोवो पर तो कृपा नहीं की?"

"हाँ। मेरा अनुमान है कि गत वर्ष उसने कुछ चीजें जला दी थीं, और किसी मकान में घुस गया था।"मरिया किरिलोव्ना

[1] एक प्रसिद्ध औपन्यासिक डाकू

जी ! इस अद्भुत वीर व्यक्ति से निकट का परिचय कितना मजेदार होगा ?"

त्रयेकुरोफ ने जवाब दिया—"मजेदार अवश्य होगा। उसे पहले से ही वह जानती है। उसनें इसे तीन हफ्ते संगीत की शिक्षा दी। किन्तु भगवान की दया ! पारिश्रमिक उसने कुछ नहीं किया।"

अब किरिल पेत्रविच् ने उस नकली फ्राँसीसी गृह-शिक्षक की कथा कहनी शुरू की। मरिया किरिलोव्ना बड़ी बेचैनी महसूस करने लगी। वेरेइस्की ने बड़े ध्यान से सुना और कहा कि यह बड़ा अद्भुत है, और चट प्रसंग को बदल दिया। जब पक्रोफ्स्कये वापस आये, उसने अपनी गाड़ी तैयार करने का आदेश दिया। यद्यपि किरिल पेत्रविच् ने अपने घर पर ही रात बिताने का उससे आग्रह किया, किन्तु चाय-पानी करने के तुरन्त बाद ही वह चल पड़ा। चलने से पहले उसने किरिल पेत्रविच से प्रार्थना की, कि मरिया किरिलोव्ना के साथ किसी दिन वे उसके घर पर पधारें। अभिमानी त्रयेकुरोफ ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। उसके कुमार की उपाधि, दो तमगे और तीन हजार पैतृक गुलाम को देखते हुए उसने वेरेइस्की को एक तरह से अपने बराबर का ही समझा।

अपने यहाँ कुमार वेरेइस्की की जिज्ञासा-पुछार के दो दिन बाद किरिल पेत्रविच् अपनी पुत्री के साथ उसके घर गया। जब वह अर्बातोवो के निकट पहुँचा वहाँ के किसानों की साफ-सुथरी झोंपड़ियों तथा अंग्रेजी ढंग पर ईंटों से बने उसके शीश-महल की जी भरकर तारीफ न कर सका। महल के सामने सुन्दर हरी घासों से शोभित एक गोलाकार चरागाह थी जिसमें स्विटजरलैंड से लाई गई गायें चर रही थीं। उनकी गर्दनों में टुनटुनी की मालाएँ मुखरित हो रही थीं। महल चारों ओर से एक बड़े बगीचे से घिरा था।

वेरेइस्की ने पौढ़ियों पर मेहमानों का स्वागत किया, और उस यौवन भरे सौंदर्य को अपनी बाँह का सहारा अर्पित किया। वे एक शानदार भोजनशाला में प्रविष्ट हुए। वहाँ तीन के लिए मेज सजी थी। कुमार मेहमानों को खिड़की के निकट ले गया। उनके सामने नेत्रानंददायी दृश्य उपस्थित हो गया। खिड़की के सामने से कल-कल करती वोल्गा बह रही थी। और लदी नावें अपने पूरे पाल के साथ चली जा रही थीं। मछली का शिकार करने की छोटी-छोटी नौकाएँ जिनका नाम 'ध्वंसक' रखा गया था, यत्र-तत्र चमक रही थीं। नदी के उस पार पहाड़ियाँ और फैली चरागाहें पड़ोस के क्षेत्रों में बसे अनेक गाँवों से सजीवता निखर रही थी। इसके बाद चित्रों के संग्रहालय में प्रविष्ट हुए। इन्हें कुमार विदेशों

से खरीद लाया था। हर चित्र की व्याख्या वह मरिया किरिलोव्ना के आगे करता गया। चित्रकारों के इतिहास सुनाकर उनके कार्य के गुण-दोषों की ओर इंगित किया। चित्रों के सम्बन्ध में उसने जो कुछ कहा वह किसी विद्याभिमानी समालोचक की भाषा न होकर भावुकता और कल्पना से परिपूर्ण थी। मरिया किरिलोव्ना उसे बड़े ध्यान से सुन रही थी। अब वे भोजन के निमित्त पहुँचे। त्रयेकुरोफ ने अपने मेजबान की रंग-बिरंगी शराबों और उसके रसोईये की निपुणता की पूरी खातिर की। मरिया किरिलोव्ना एक ऐसे व्यक्ति से जिससे जीवन में दूसरी बार मिली थी, बातें करने में रंचकमात्र भी संकोच या दुविधा महसूस नहीं कर रही थी।

भोजन के बाद कुमार ने मेहमानों को उपवन के लिए आमन्त्रित किया। एक चौड़ी झील जिसमें जहाँ-तहाँ द्वीप बने थे। उसके तटपर स्थित एक निकुंज में उन्होंने काफी-पान किया। सहसा बाजे का संगीत-स्वर सुनाई पड़ा और एक छः पतवारों की नौका निकुञ्ज के निकट आ लगी। झील में नौका-विहार का आनन्द लिया जाने लगा। नौका द्वीपों से गुजरती गई। कई द्वीपों का निरीक्षण भी किया गया। एक द्वीप में संगमरमर की स्मृति-प्रतिमा, दूसरे में एकान्त गुफा, और तीसरे में एक स्मृति-स्तम्भ जिसपर की गई रहस्यमयी खुदाई ने मरिया की बालिका-सुलभ उत्सुकता उद्वेलित कर दी। कुमार की विनम्र एवं अपूर्ण व्याख्या

से उसकी उत्सुकता शान्त न हो सकी थी। अनजाने समय बीतता गया। अंधेरे ने अपने को दिखाना आरम्भ किया। ओस और शाम की सर्दी से डर कर कुमार ने घर का रास्ता लिया। एक सामवार उनका इन्तजार कर रहा था। कुमार ने मरिया से प्रार्थना की, कि वह बूढ़े ब्रह्मचारी के घर में आज गृहिणी का पार्ट अदा करे। कुमार की नखरे भरी अनंत कहानियाँ सुनती वह प्याले में चाय डालने लगी।······सहसा एक आवाज हुई और एक पटाखे ने आकाश में उजाला कर दिया।······कुमार ने मरिया को एक शाल दी, और त्रयेकुरोफ़ तथा उसे लेकर छत पर पहुँचा। अंधेरे घर के सामने बहुरंगी प्रकाश चमकने लगा। कहीं चक्राकर होकर घूम रहा था, कहीं नीचे की ओर धारा के रूप में प्रवाहित हो रहा था, कहीं वर्षा की बूँदों की भाँति, और कहीं टूटते तारों की तरह, बुझता और फिर जल उठता। देख-देखकर मरिया एक बच्चे की भाँति खुश हो रही थी। उसकी खुशी में वेरेइस्की को मजा आ रहा था। त्रयेकुरोफ़ कुमार से बड़ा खुश हुआ। क्योंकि वह इन चीजों में अपने प्रति सम्मान का भाव और मेहमान को प्रसन्न करने की इच्छा का आभास पा रहा था।

रात्रि का भोजन किसी भी अंश में दिन के भोजन से कम शानदार नहीं था। खा-पीकर अतिथि अपने-अपने शयनागार में गये, और दूसरे दिन सवेरे अपने विनम्र आतिथ्यक से बिदा हुए। और निकट भविष्य में परस्पर मिलते रहने की प्रतिज्ञा भी करते गये।

मरिया किरिलोव्ना अपने कमरे में खुली खिड़की के निकट बैठी बेल-बूटे काढ़ रही थी। उसकी सुई ने बड़ी सफाई के साथ उस डिजाइन को उतार डाला जिसकी वह नकल कर रही थी। किन्तु फिर भी उसके विचार और कार्य में सामंजस्य नहीं था। उसका दिल कहीं दूर चला गया था।

सहसा एक हाथ धीरे से खिड़की के भीतर प्रविष्ट हुआ। उसके बेल-बूटे काढ़ने के पट पर किसी ने एक चिट्ठी डाल दी। मरिया किरिलोव्ना आश्चर्य-चकित हो गई। उसके सम्हलने से पहले ही वह आदमी अदृश्य हो गया। उसी समय किरिल पेत्र-विच का भेजा नौकर उसे बुलाने आया। वह काँपने लगी। उस पत्र को अपने फिशू के पाकेट में डालकर झटपट अपने पिता के कमरे को चल पड़ी।

किरिल पेत्रविच अकेला न था। कुमार वेरेइस्की उसके साथ था। जब मरिया किरिलोव्ना अन्दर आई वह उठ खड़ा हुआ और चुपचाप उसे नमस्कार किया। कुमार के चेहरे पर उस समय अस्वाभाविक घबड़ाहट विद्यमान थी।

किरिल पेत्रविच ने कहा—"इधर आओ माशा ! मैं तुम्हें एक खबर सुनाने जा रहा हूँ। आशा है सुनकर खुश होवोगी। ये हैं

तुम्हारे भावी पति। कुमार साहब ने तुमसे शादी करने का प्रस्ताव किया है।

माशा अवाक हो गई! चेहरा सफेद हो गया। उसपर मुर्दनी छा गई। वह चुप रही। कुमार उसके निकट जाकर उसका हाथ अपने हाथ में ले बड़े ही भावुकता भरे स्वर में बोला—"अपनी सहमति प्रदान कर आप मुझे सुखी बनायेंगी?"

माशा कुछ न बोली।

किरिल पेत्रविच ने कहा—"वह राजी अवश्य है। लेकिन आप तो जानते ही हैं कुमार साहब लड़कियों के लिये रजामन्दी जाहिर करना बड़ा कठिन होता है।...अच्छा बच्चो। एक दूसरे का चुम्बन करो और सुखी बनो!"

माशा निर्जीव प्रतिमा की तरह खड़ी रही। कुमार ने उसके हाथ चूमे। उसके रक्तहीन चेहरे पर आँसुओं की धारा सहसा बह चली। कुमार की भौंएँ कुछ तन गईं।

किरिल पेत्रविच् बोला—"भागो, भागो यहाँ से! अपने आँसू पोंछकर चकई की तरह हँसता चेहरा लेकर यहाँ आओ! सगाई के समय सभी लड़कियाँ रोती हैं।" फिर वेरेइस्की की ओर मुड़ कर बोला—"आप तो जानते ही हैं यह रिवाज है।...अच्छा तो कुमार साहब! अब हम काम की बातें करें। यानी दहेज के बारे में।"

मरिया करलोव्ना ने जाने की अनुमति का बड़ी उत्सुकता से

लाभ उठाया। दौड़ी हुई अपने कमरे में आ गई। भीतर से दरवाजा बंद कर दिया। आँखों में आँसुओं के स्रोत उमड़ पड़े जब उसने अपने को एक बूढ़े कुमार की पत्नी के रूप में कल्पित किया। एकाएक वह घृणित और तुच्छ बनकर उसकी आँखों में दिखाई दिया।...उससे ब्याही जाने के विचार से वह उसी प्रकार भयभीत हो गई, जिस प्रकार हत्यारे की कुल्हाड़ी से और कब्र से कोई डरता है। निराश हो के अपने तईं वह बोली—"नहीं, कभी नहीं। वरन् मर जाऊँगी, किसी मठ में जाकर संन्यासिन बन जाऊँगी, या दुब्रोफ्स्की से ही शादी कर लूँगी..." इतना कहते ही उसे उस पत्र की याद आ गई। बड़ी उत्सुकता से उसे निकाला। उसने अनुमान किया कि दुब्रोफस्की ने ही उसे चिट्ठी भेजी है। और सचमुच दुब्रोफ्स्की ने ही वह चिट्ठी भेजी थी। उसमें केवलमात्र निम्न-लिखित शब्द अंकित थेः—

"आज रात के दस बजे उसी स्थान पर।"

चाँदनी चटक रही थी। देहात की रात निस्तब्ध थी। हवा का हल्का झोंका रह-रहकर आ पहुँचता जिससे बगीचे में खड़-खड़ शुरू हो जाती।

स्वयं-चलती छाया की तरह वह यौवनपूर्ण सुन्दरता निश्चित स्थान को पहुँची। कोई दिखाई नहीं दिया। सहसा निकुञ्ज के पीछे से निकल कर दुब्रोफ्स्की उसके सामने आ खड़ा हुआ।

वह करुणा-पूरित दबे स्वर में बोला—"मुझे सब कुछ पता

है। अपना वचन याद करो!"

माशा बोली—"तुम मुझे बचा लोगे। लेकिन बुरा मत मानो! मुझे तो डर लगता है कि कैसे तुम मेरी मदद करोगे?"

"उस आदमी के चंगुल से जरूर तुम्हें बचा सकता हूँ जिसको तुम घृणा करती हो!"

"भगवान् के लिये, यदि मुझे तुम प्यार करते हो, उसे छूना मत! उसे छूने का साहस करना मत! किसी भयानक दुर्घटना का कारण मैं नहीं बनना चाहती!"

"मैं उसका कुछ भी बुरा न करूँगा। तुम्हारी इच्छा ही मेरे लिये कानून है। तुम्हारे नाम पर उसे जीवन-दान देता हूँ। मेरे अपराध-भरे जीवन में भी तुम विशुद्ध बनी रहोगी। लेकिन कैसे मैं तुम्हें क्रूर पिता के चंगुल से बचाऊं?"

अब भी उम्मीद है। अपने आँसू और निराशा से उनके दिल को पसीजा लूँगी। वे जिद्दी अवश्य हैं, लेकिन मुझे प्यार करते हैं।"

"व्यर्थ की आशा मत करो! तुम्हारे आँसुओं में उन्हें केवल भय और घृणा के भाव दिखाई देंगे, जो उन सभी जवान लड़कियों में पाये जाते हैं, जिनका ब्याह प्रेम का परिणाम न होकर भविष्य का विचार करके होता है। तुम्हारी अनिच्छा के बावजूद यदि तुम्हारी सुख-सुविधा का ख्याल करके वे अपने संकल्प में अटल रहें तब? यदि तुम्हें जबर्दस्ती ब्याह-वेदी पर लाकर उस बूढ़े के हाथ में सौंप दिया गया तब?"

"तब···तब कोई दूसरा चारा नहीं । मेरे सामने तुम आ जाना । मैं तुम्हारी पत्नी बन जाऊँगी ।"

दुब्रोफस्की काँप उठा । उसके पीले चेहरे पर लाली दौड़ गई । और पुनः पहले से भी अधिक पीला बन गया । शिर उठाये कुछ देर वह सोचता रहा ।

"अपने सारे साहस बटोर कर अपने पिताजी का निहोरा करो। उनकी विनती करो ! उनके पैरों पर गिरो ! उनके सामने अपने भावी जीवन की सारी भीषणताओं को चित्रित करो । बताओ कि एक बूढ़े लंपट के साथ तुम्हारा यह यौवन किस प्रकार नष्ट हो जायगा । उनसे कहो कि धन-सम्पत्ति तुम्हें क्षणमात्र भी सुखी न कर सकेगी । अमीरी केवल गरीब कन्या को ही लुभा सकती है—सो भी केवल क्षण भर के लिये । क्योंकि वह उस जीवन की आदी नहीं होती । उनकी प्रार्थना करती जाओ । जब तक आशा की एक किरण भी शेष रहे—उनके क्रोध और धमकियों की परवाह न करो। भगवान के लिये उनका निहोरा करती रहो । लेकिन यदि इन बातों से काम चलता न दीखे, तो यह भयानक बात भी उनको बता देना ! उनसे कह देना कि यदि वे अपना हठ नहीं छोड़ते, तो···तो तुम्हारा एक बड़ा भयानक रक्षक उपस्थित होगा···"

दुब्रोफ़्स्की ने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। उसका गला जैसे रूँध गया । माशा भी रो रही थी ।

एक कड़वी साँस छोड़ते हुए वह बोला—"हाय, हाय मेरे दुर्भाग्य ! मैं तुम्हारे लिये अपने जीवन की बलि दे दूँगा !" दूरसे तुम्हें देखने में, तुम्हारे कोमल हाथों का स्पर्श करने में आनन्द आता था । और अब, जबकि तुम्हें छाती से लगाके यह कहने का मौका मिला है कि—'ओ मेरी स्वर्गीय ज्योति ! चलो दोनों साथ चल बसें !'...हाय ! मुझे पूर्ण आनंद से बचना चाहिये ! मैं शक्तिभर इस आनंन्द को पास फटकने नहीं दूँगा । मुझे साहस नहीं होता कि तुम्हारे चरणों पर गिरकर अपने अनुचित आयोग्य आनंद के लिए ईश्वर को धन्यवाद दूँ ! हाय ! मैं कैसे उससे घृणा करूँ जो...लेकिन अबतो मुझे ऐसा लग रहा है कि घृणा के लिये मेरे दिल में कोई जगह नहीं ।"

उसने अपनी बाहें उसकी पतली कमर में डाल दीं, और उसे धीरे से छाती से लगा लिया । विश्वास के साथ मरियाने अपना मस्तक उस युवा डाकू के कंधे पर डाल दिया । दोनों चुप थे...

काफी समय बीत गया । अंत में माशा बोली—"अब मैं जाऊँगी ।"

दुब्रोफ्स्की मानो सोते से जगा । उसने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर एक अंगूठी उसकी अंगुली में पहना दी । फिर बोला—"यदि तुम मेरी मदद के लिये निर्णय करो, तो इस अंगूठी को इस ओक-वृक्ष के खोर में डाल दो । उसके बाद मैं समझ लूँगा ।"

दुब्रोफ्स्की ने उसका हाथ चूमा और फिर वृक्षों की झाड़ी में अदृश्य हो गया।

(१६)

कुमार वेरेइस्की के ब्याह की बात आस-पास फैलने से बाकी न रही। किरिल पेत्रविच् को बधाइयाँ मिलने लगीं। शादी की तैयारियाँ होने लगीं। माशा निर्णायक व्याख्या को दिन-पर-दिन टालती जा रही थी। इस बीच अपने बूढ़े प्रेमी के प्रति उसका व्यवहार रूखा और उदासीन बनता जा रहा था। कुमार को इसकी परेशानी न थी। वह उसके प्रेम को कतई परवाह नहीं करता। उसके मौन-स्वीकार से वह संतुष्ट था।

लेकिन समय बीतता जा रहा था। अंत में माशा ने कुछ करने का निर्णय किया। उसने कुमार वेरेइस्की को एक पत्र लिखा। उसके हृदय में उदारता की भावना जागृत करने की कोशिश की। बड़ी निष्कपटता के साथ उसने जता दिया कि वह रंचमात्र भी उसे प्यार नहीं करती। उससे प्रार्थना की, वह शादी न करने की घोषणा करदे और उसके पितासे उसकी रक्षा करे। कुमार के हाथ में चुपके से वह चिट्ठी उसने खिसका दी। एकान्त पाकर उसने उसे पढ़ा, किंतु उस बालिका की सरलता का उस पर जरा भी प्रभाव न पड़ा। बल्कि उलटे शादी में शीघ्रता करना उसे आवश्यक

जचा और अपने भावी-ससुर को वह पत्र दिखा देना भी उसने उचित समझा।

किरिल पेत्रविच् का पारा गरम हो गया। कुमार ने बड़ी कठिनाई से उसे राजी किया कि माशा को वह यह न जानने दे कि उसके पत्र के बारे में वह जानता है। किरिल पेत्रविच् राजी हो गया, किंतु उसने समय न खोने का निर्णय करके ब्याह के लिये तीसरा दिन निश्चित कर दिया। कुमार को यह बड़ा उचित मालूम पड़ा। वह माशा के पास पहुँचा और बताया कि उसे उसके पत्र से बड़ा कष्ट हुआ है, किंतु उसे उम्मीद है कि उपर्युक्त समय पर उसका हृदय जीतने में वह सफल होगा। उसको अपने हाथ से जाने देना उसके लिये बड़ा दुखदायी होगा। उसमें इतनी शक्ति नहीं कि अपना मृत्यु-दंड आप स्वीकार कर ले। इसके बाद सम्मान के साथ उसके हाथ चूमकर बाहर चला गया। किरिल पेत्रविच् के निर्णय को उसने उससे बिलकुल गुप्त रखा।

किंतु ज्यों ही कुमार उसके कमरे से निकला कि उसका पिता उसके सामने आ खड़ा हुआ और साफ तौर पर बता दिया कि परसों उसे तैयार रहना चाहिये। मरिया कुमार से अपना भाव स्पष्ट कर चुकी थी। पिता के आगे वह फूट-फूट कर रोने लगी। उसके चरणों पर वह लोटने लगी! बड़े करुणा भरे स्वर में वह चिल्लाई—"पापा! मेरा सत्यानाश न करो पापा! मैं कुमार को प्यार नहीं करती। मैं उसकी पत्नी बनना नहीं चाहती!"

कड़कते स्वर में किरिल पेत्रविच ने कहा—"इसका मतलब ? इसका मतलब क्या है ? अब तक तुमने कुछ नहीं कहा ! बिल्कुल राजी सी दीख रही थी ! और अब, जबकि सब कुछ तै हो चुका है, यकायक बेचैन हो पड़ी हो ! मुकर जाना चाहती हो ! मेहरबानी करके ऐसी बेवकूफी न करो ! इस तरह तुम मुझे नहीं मना सकती !"

वह बेचारी फिर चिल्लाई—"मेरा सत्यानाश मत करो ! क्यों तुम मुझे अपने से दूर भगा रहे हो ? एक ऐसे आदमी के हाथ क्यों सौंप रहे हो जिसे मैं प्यार नहीं करती ? क्या मुझसे तंग आ गये हो ? मैं पहले की तरह ही तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ। पापा ! तुम मेरे बिना दुखी हो जाओगे ! और उससे भी अधिक दुख तुम्हें तब होगा जब पता लगेगा कि मैं दुखी हूँ। जबर्दस्ती मत करो पापा ! मैं ब्याह करना नहीं चाहती !"

किरिल पेत्रविच् का दिल पसीज गया, किंतु उसने अपने भाव छिपा लिये। उसे धकेल कर कड़ाई के साथ वह बोला—"यह सब वाहियात है ! सुन रही हो न ? तुम्हारे सुख के लिये क्या आवश्यक है यह मैं तुमसे अधिक जानता हूँ। आँसू बहाने से कोई लाभ नहीं। तुम्हारी शादी परसों हो के रहेगी।"

माशा चिल्लाई—"परसों ! हे भगवान ! नहीं नहीं, यह असम्भव है ! ऐसा हो नहीं सकता ! सुनो पापा ! अगर तुमने मेरा सत्यानाश करने का निश्चय कर ही लिया है, तो मेरी रक्षा

एक ऐसा व्यक्ति करेगा, जिसके बारे में तुम सोच भी नहीं सकते। तुम देखोगे, और देखकर डर जाओगे! इसके लिये तुमने मुझे बाध्यकर दिया है।"

त्रयेकुरोफ बोला—"क्या? क्या कह रही हो? तुम मुझे धमकी दे रही हो? बेहया लड़की! तुम देख लेना कि मैं तुम्हारे साथ वही व्यवहार करूँगा जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकती! तुम्हारी इतनी हिम्मत कि अपने रक्षक का नाम लेकर मुझे धमकी दो! मैं देख लूँगा कि वह कौन तुम्हारा रक्षक है!"

"ब्लादीमीर दुब्रोफस्की!"—माशा ने निराशा भरे स्वर में जबाव दिया। किरिल पेत्रविच् ने सोचा, वह पागल हो गई है। आश्चर्य भरी आँखों से उसे देखने लगा।

जरा देर रुककर वह बोला—"बहुत अच्छा! तुम किसी भी रक्षक की प्रतीक्षा करो! लेकिन तब तक इसी कमरे में पड़ी रहो! जब तक तुम्हारा ब्याह नहीं हो जाता इसमें से बाहर नहीं निकल सकती।"

इन शब्दों के साथ किरिल पेत्रविच कमरे से बाहर निकल गया और दरवाजा बंद करता गया।

बेचारी बालिका कुछ देर रोती रही। उन विपत्तियों के चित्र खींचती रही जो उसका इंतजार कर रही थीं। लेकिन अपने मनका भाव यकायक व्यक्त कर देने के कारण हृदय उसका हल्का हो गया था। अब वह अपने भविष्य और भविष्य के कार्यक्रम

पर बड़ी शाँति के साथ सोच सकती थी, विचार सकती थी! सबसे मुख्य कार्य था इस घृणित विवाह से छुटकारा पाना। इस दुर्भाग्य की तुलना में एक डाकू की पत्नी का भाग्य उसके लिए स्वर्गीय प्रतीत हो रहा था। दुब्रोफ्स्की जो अँगूठी उसके पास छोड़ गया था, उसपर उसने दृष्टि दौड़ाई। उस निर्णायक क्षण से पहले ही उससे अकेले में मिलने और विचार-विमर्श के लिए वह बड़ी उत्सुक हो उठी। हृदय उसका कह रहा था, संध्या को बगीचे के उसी निकुंज में दुब्रोफ्स्की की वह प्रतीक्षा करते पायगी। उसने निर्णय किया, अन्धेरा होते ही वहाँ चल देगी, उसकी प्रतीक्षा करेगी। संध्या आई। माशा ने जाने की तैयारी की, लेकिन दरवाजा बन्द था। पीछे से दासी ने बताया कि किरिल पेत्रविच् का आदेश है उसे बाहर न निकलने देने का। वह कैद में है। उसके दिल को बड़ी चोट पहुँची। बगैर कपड़े ही खिड़की के निकट वह बैठ गई। निश्चल-निस्पंद भाव से अन्धेरे आकाश को ताकती भोर तक बैठी रही। सवेरे जरा उसकी आँख लगी। किन्तु वह स्वल्प निद्रा अशुभ स्वप्नों से क्षुब्ध हो गई। उगते सूर्य की किरणों ने उसकी निद्रा भंग कर दी।

वह जग पड़ी। उसी क्षण उसकी स्थिति की भीषणता उसके मस्तिष्क के सामने आ प्रकट हुई। उसने घंटी बजाई। दासी आ गई। उसने उसके प्रश्न के उत्तर में बताया कि शाम को किरिल पेत्रविच् असुक स्थान को गया था और काफी रात बीते वापस आया। उसका कड़ा आदेश है कि मरिया कमरे से निकलने न पाये, और न कोई उससे बोले, लेकिन ब्याह की कोई खास तैयारी नहीं हो रही, सिवा इसके कि पादरी को हुक्म दे दिया गया है वह किसी भी बहाने गाँव छोड़ने न पावे। इतना कहने के बाद दासी उससे अलग हो गई, और बाहर से फिर उसने दरवाजा बन्द कर दिया।

उसके शब्दों से उस तरुणी बंदिनी का हृदय कठोर बन गया। उसका माथा गरम हो गया। उसके खून में उबाल आ गया। दुब्रोफ्स्की को खबर देने का उसने निश्चय किया। उस अंगूठी को ओक-वृक्ष के खोढर में डालने के उपाय सोचने लगी। उसी क्षण पत्थर का एक गोल टुकड़ा खिड़की से आ लगा। शीशा झनझना उठा। आँगन की ओर जब उसने दृष्टि दौड़ाई, तो देखा, नन्हा सशा उसकी ओर इशारा कर रहा है। वह अपने प्रति उसके प्रेम को जानती थी। उसे बड़ी खुशी हुई उसको देखकर। उसने खिड़की खोली।

"नमस्ते सशा ! क्यों तुम मेरे पास आये हो ?"

"मैं तुमसे पूछने आ या हूँ कि किसी चीज की तुम्हें जरूरत तो नहीं ? पापा नाराज हैं। उन्होंने सबको मना कर दिया है कि तुम्हारा कहना कोई न माने। लेकिन मुझे तुम कोई भी हुक्म दो, तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हूं।"

"धन्यवाद मेरे प्यारे सशंका ! अच्छा देखो, उस निकुंज के निकटवर्ती खोंढर वाले ओक-वृक्ष को तुम जानते हो न ?"

"हाँ, मैं जानता हूं।"

"अच्छा, अगर तुम मुझे प्यार करते हो, तो अभी दौड़कर वहाँ चले जाओ, और इस अंगूठी को उस खोंढर में डाल आओ। लेकिन देखना, कोई देख न ले !"

इन शब्दों के साथ उसके निकट अंगूठी फेंककर खिड़की उसने बंद कर ली।

लड़के ने अँगूठी उठा ली। अपने पूरे जोर से ओक-वृक्ष की ओर वह दौड़ा। तीन मिनट में जा पहुँचा। खड़ा हो गया और दबे-साँस इधर-उधर ताककर अँगूठी उसने खोंढर में डाल दी। बड़ी सफाई से अपना काम कर लेने के बाद उसने उसी क्षण मरिया को सूचित कर देना चाहा, जबकि उसी क्षण चीथड़ों में लिपटा एक लाल बालों वाला लड़का निकुंज के पीछे से निकलकर एकाएक ओक-वृक्ष की ओर दौड़ पड़ा, और उस खोंढर में हाथ डाल दिया। और सशा गिलहरी की चाल से भी अधिक तेजी से दौड़कर दोनों हाथों से उसे पकड़ लिया।

"तू यहाँ क्या कर रहा है रे ?"—कड़कते स्वर में वह बोला।

"इससे तुम्हारा मतलब नहीं।"—अपने को छुड़ाने की कोशिश करते हुए लड़के ने जवाब दिया।

"छोड़ उस अंगूठी को। सुअर के बच्चे ! नहीं तो घूँसे जमाऊँगा।"—शसा चिल्लाया।

जवाब में लड़के ने उसके मुँह पर एक मुक्का दे मारा। किंतु सशा ने उसे छोड़ा नहीं, बल्कि पूरे जोर से चिल्लाया—"चोर ! चोर ! बचाओ।"

लड़के ने अपने को छुड़ाने की कोशिश की। वह सशा से दो साल बड़ा लग रहा था। उससे अधिक बलवान भी था। लेकिन सशा तेज था। कुछ मिनट तक परस्पर दोनों लड़ते रहे। अंत में लाल बालों वाले लड़के ने सशा को दबा दिया। उसने ठोकर मारकर सशा को नीचे गिरा दिया और उसका गला दबाया। किंतु उसी क्षण एक मजबूत हाथ ने उसके बाल पकड़ लिये। माली स्तेपन ने उसे धरती से एक फुट ऊँचा उठा लिया।

माली ने कहा—"अबे ललकेसा हरामजादे। तेरी इतनी हिम्मत कि छोटे बाबू को मार बैठा ?"

सशा को उठ खड़े होने और सम्हलने का मौका मिल गया। वह सम्हलकर बोला—"तुम मुझे बाँहों के नीचे ले गये। नहीं तो तुम कभी मुझे नीचे नहीं गिरा सकते थे। जल्दी मेरी अँगूठी दो और भाग जाओ।"

"कभो नही।"—ज़ाल-केशा लड़के ने जवाब दिया और यकायक घूमकर स्तेपन के हाथ से अपने बाल छुड़ा लिये। उसने दौड़ना शुरू किया, लेकिन सशा ने से पकड़ लिया। पीछे से उसे धकेल दिया। लड़का मुंह के बल गिर पड़ा। माली ने उसे पकड़ लिया, और अपनी पेटी से उसके हाथ बाँध दिये।

"मेरी अँगूठी दे दो।"—सशा चिल्लाया।

स्तेपन बोला—"जरा ठहरिये मालिक। मैं इसे मैनेजर के पास ले जाऊँगा। वह इससे निबट लेगा।

माली उस कैदी को आँगन में ले आया। सशा ने उसका अनुसरण किया। बेचैनी से अपनी निक्कर को निहारता जा रहा था, जो फट गई थी, और जिसपर घास के दाग लग गये थे। सहसा तीनों ने अपने को किरिल पेत्रविच् के सामने पाया, जो घुड़सालों को देखने जा रहा था।

"यह क्या है?"—उसने स्तेपन से पूछा।

स्तेपन ने संक्षेप में सभी घटना कह सुनाई। किरिल पेत्रविच् ने बड़े ध्यान से सुना। अब सशा की ओर मुड़कर वह बोला—"अच्छा बता तो हरामजादे! तू उससे लड़ क्यों रहा था?"

"खोंढर में से उसने अँगूठी चुरा ली थी पापा। उससे कहो कि मेरी अँगूठी मुझे लौटा दे।"

"कैसी अँगूठी? किस खोंढर से?"

"क्यों? मरिया बहिन ने कहा था··· कि अँगूठी···"

सशा घबड़ा गया। उसकी समझ में आ नहीं रहा था कि क्या बतावे। किरिल पेत्रविच् की भौंएँ तन गईं। माथा हिलाते हुए वह बोला—"इससे मरिया का सम्बन्ध है।...सारी बातें बता दे! नहीं तो छड़ी से पीट-पीटकर अक्ल दुरुस्त कर दूँगा।"

"लेकिन सचमुच पापा! मैं...पापा...मरिया बहिन ने मुझ से कुछ नहीं कहा पापा!"

"स्तेपन! जा और एक अच्छी सी छड़ी तो काटकर ले आ!"

"ठहरो पापा! मैं सारी बातें बता दूँगा। मैं आँगन में दौड़ रहा था। मरिया बहिन ने खिड़की खोल दी। मैं उसके पास दौड़ गया। उसने अंगूठी नीचे गिरा दी, किसी मतलब से नहीं। और मैंने वह खोंढर में छिपा दी। और...और...यह हराम जादा उसे चुराकर ले भागना चाहा।"

"किसी मतलब से अंगूठी नहीं डाली। तूने उसे छिपाना चाहा। स्तेपन! छड़ी तो ले आ!"

"जरा ठहरो पापा। मैं सब बता दूँगा। मरिया बहिन ने मुझसे ओकके निकट दौड़ जाने को, और उसकी खोंढर में अंगूठी छिपा आने को कहा। इसी से मैं दौड़ पड़ा। और वहाँ अंगूठी रख आया। और इस खूँखार लड़के ने..."

किरिल पेत्रविच् अब उस खूँखार लड़के की ओर मुड़ा और कड़कते स्वर में बोला—"तू किसका आदमी है?"

"मैं बाबू दुब्रोफ्स्की का नौकर हूँ।"—उसने जवाब दिया।

किरिल पेत्रविच् का चेहरा स्याह पड़ गया।

"मालूम होता है तू मुझे मालिक नहीं मानता। अच्छा, यह तो बता कि तू बगीचे में क्या कर रहा था?"

"मैं रेजबेरी (एक प्रकार का फल) चुन रहा था।"—लड़के ने बड़ी लापरवाही स जवाब दिया।

"अहा! जैसा मालिक वैसा ही नौकर! क्या मेरे ओक के पेड़पर रेजबेरी पैदा होती है रे? कभी तूने ऐसा सुना भी?"

लड़के ने जवाब नहीं दिया।

"उससे मेरी अंगूठी दिलवा दो पापा!"—सशा ने कहा।

किरिल पेत्रविच् ने कहा—"शान्त रह बच्चे!" फिर उस लड़के से बोला—"भूलना मत कि मैं इसी समय तेरी खबर लेना चाहता हूं। तू बड़ा चालाक मालूम पड़ता है। हरामजादे! अईचालाने! यदि तूने सारी बातें साफ-साफ बता दीं, तो चूतड़ों पर मार खाने से बच जायगा, और तुझे पाँच कोपेक (करीब दो पैसे) मिलेंगे। अँगूठी दे दे और चला जा!"

लड़के ने अपनी मुट्ठी खोली और दिखाया कि कुछ नहीं है।

"नहीं तो मैं तेरी ऐसी खबर लूँगा कि छटी का दूध याद आ जायगा। भला?"

लड़के ने बिल्कुल जवाब नहीं दिया। सिर झुकाये इस प्रकार खड़ा रहा मानो बिल्कुल मूर्ख हो।"

किरिल पेत्रविच् ने कहा—"बहुत अच्छा! किसी कोठरी में इसे बन्द कर दो! देखना कहीं भाग न निकले! नहीं तो तेरी खबर ली जायगी।"

स्तेपन ने लड़के को कबूतर-खाने में ले जाकर बन्द कर दिया। कबूतर-खाने की नौकरानी अगफ्या को ताकीद करता आया कि वह उसपर नजर रखे।

"इसमें जरा भी सन्देह नहीं। उस हरामजादे दुब्रोफ्स्की से वह सम्पर्क बनाये हुई है। क्या वह सचमुच उससे मदद माँग सकती है?"—कमरे में चहलकदमी करते और क्रोध में मुँह की सीटी बजाते हुए किरिल पेत्रविच् सोचने लगा—"शायद मुझे उसका पता मिल गया है। अब वह मेरे चंगुल से निकल नहीं सकता। इस मौके का हमें लाभ उठाना चाहिये।...यह देखो! घंटी बजी। भगवान् को धन्यवाद! यह तो पुलिस-कप्तान है!...उस लड़के को यहाँ ले आओ जो पकड़ा गया है!"

इस बीच गाड़ी आँगन में आ खड़ी हुई। पुलिस-कप्तान धूल-भरा चेहरा लिये कमरे में प्रविष्ट हुआ।

किरिल पेत्रविच् बोला—"बड़ी खुशखबरी है! मैंने दुब्रो-फ्स्की को पकड़ लिया!"

"भगवान् को धन्यवाद सरकार! कहाँ है वह?"—चहकते चेहरे से पुलिस कप्तान ने कहा।

"दुब्रोफ्स्की स्वयं नहीं, बल्कि उसके दल का एक आदमी

पकड़ा गया है। वह सीधे अभी लाया जायगा। अपने सरदार को पकड़वाने में वह हमारी मदद करेगा। वह यहाँ है।"

पुलिस-कप्तान इस आशा में था कि एक भयानक डाकू उसके सामने उपस्थित होगा; किंतु एक दुबले-पतले नाटे कद के तेरह-साला लड़के को देखकर आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह भौंचक्का सा किरिल पेत्रविच् की ओर ताकने लगा। स्पष्ट व्याख्या की प्रतीक्षा करने लगा। किरिल पेत्रविच् ने मरिया का उल्लेख किये बिना प्रातःकाल की घटी घटना कह सुनाई।

पुलिस कप्तान बड़े ध्यान से कहानी सुनता जा रहा था, और प्रतिक्षण उस छोटे शैतान को देखता भी जा रहा था। उस लड़के ने पूरे काठ के उल्लू का स्वांग रचा और ऐसा लग रहा था मानो उसे ध्यान ही नहीं कि आगे-पीछे क्या हो रहा है।

"अकेले में मुझे कुछ कहने की आज्ञा दें सरकार!"—अन्त में पुलिस कप्तान ने कहा।

किरिल पेत्रविच् उसे कमरे में ले गया और दरवाजा बन्द कर दिया।

आधे घंटे में वे फिर उस कमरे में आ गये जहाँ वह छोटा बन्दी अपने भाग्य-निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था।

पुलिस-कप्तान ने उससे कहा—"बाबू जी तुम्हें जेल भिजवाना चाहते थे, कोड़े लगवाना चाहते थे, और उसके बाद काले पानी की सजा दिलवाने की सोच रहे थे। लेकिन मैंने तेरी

ओर से सिफारिश की है। तुझे छोड़ देने के लिये उन्हें राजी कर लिया है। ··· इसके बन्धन खोल दो!"

लड़के का बन्धन खोल दिया गया।

"बाबू जी को दुहाई दो!"— पुलिस-कप्तान ने कहा।

लड़का किरिल पेत्रविच् के निकट गया और उसका हाथ चूम लिया।

किरिल पेत्रविच् ने उससे कहा—"चुपचाप घर चला जा! अब फिर कभी ओक के पेड़ पर रेजबेरी मत चुराना।"

लड़का कमरे से निकल और बड़ी खुशी से उछलकर अगली पौढ़ियों को पार करता हुआ बगैर इधर-उधर देखे सीधे किस्तेन्योफ्का के खेतों की ओर नौ-दो-ग्यारह हो गया। गाँव के निकट पहुँच कर एक छोटी झोंपड़ी के पास खड़ा हो गया। अपनी कतार में वह झोंपड़ी पहली थी। खिड़की को उसने थपथपाया। शीशा ऊपर उठ गया, और एक बूढ़ी औरत बाहर देखने लगी।

लड़का बोला—"दादी रोटी! दिन भर कुछ नहीं खाया। बिल्कुल भूखा हूँ दादी!"

"ओ! तू है मित्या! मगर अब तक तू था कहाँ पिशाच?"

"मैं अभी तुम्हें बताऊँगा दादी! भगवान की कसम, जरा रोटी दो!"

"मगर भीतर तो आ!"

"मेरे पास वक्त नहीं है दादी। मुझे दौड़कर एक जगह और

जाना है दादी ! ईसा की कसम ! जरा रोटी दो !"

बुढ़िया भनभनाई—"कैसा बेसब्र है ! अच्छा ले, एक टुकड़ा तेरे लिये भी है ।"— और उसने काली रोटी का एक टुकड़ा खिड़की के बाहर गिरा दिया ।

लड़के ने बड़ी क्षुधा से रोटी को दाँत से काटा और चबाते हुए आगे चल पड़ा ।

अंधेरा शुरू होने वाला था । मित्या खलिहानों और घर की बाड़ियों से होकर किस्तिन्योफ्का के जंगल की ओर बढ़ा जा रहा था । द्वार पर प्रहरी की भाँति खड़े उन दो देवदारु-वृक्षों के निकट पहुँचकर वह खड़ा हो गया । अपने चतुर्दिक उसने एक दृष्टि दौड़ाई, और मुँह की छोटी सी सीटी बजाकर स्वयं चौकन्ना होकर सुनने लगा । उत्तर में एक धीमी किंतु लम्बी सीटी सुनाई देने लगी । कोई जंगल में से बाहर निकलकर उसकी ओर बढ़ा ।

(१८)

किरिल पेत्रविच् अपने बैठकखाने में चहल कदमी कर रहा था । उसके मुँह की सीटी और दिनों की अपेक्षा अधिक जोर से बज रही थी । सारे घर में तहलका मचा हुआ था । नौकर-चाकर इधर-उधर दौड़ रहे थे । दासियाँ सरगर्म थीं । गाड़ी तैयार की जा रही थी । आँगन में लोगों की भीड़ थी । मरिया किरिलोव्ना

के कमरे में दासियों से घिरी एक महिला दुलहिन का सजा रही थी हीरे-जवाहरों के बोझ के नीचे दुलहिन का सिर निर्जीव की तरह झुका जा रहा था। लापरवाही के कारण जब एक सुई उसे चुभ गई वह जरा चौंकी, लेकिन बोली कुछ नहीं। न देखती आँखों से वह दर्पण देखती रही।

"क्या तुम्हें देर है अभी ?"—दरवाजे पर से किरिल पेत्रविच् ने पूछा।

"एक मिनट और।"—उस महिला ने जवाब दिया। फिर वह मरिया से बोली— "मरिया किरिलोव्ना ! जरा खड़ी होके देख तो लो कि सब कुछ ठीक है या नहीं।"

मरिया किरिलोव्ना ! खड़ी हो गई, किंतु जवाब न दे सकी। दरवाजा खुल गया। महिला पेत्रविच् से बोली—"दुलहिन तैयार है। उनसे कह दें कि गाड़ी में अपनी-अपनी जगह बैठ जाँय।"

किरिल पेत्रविच् ने कहा—"भगवान के नाम पर !माशा जरा नजदीक आओ !" फिर मेज पर से ईसा की मूर्ति को हाथ में लेकर भावुकता भरे स्वर में वह पुत्री से बोला—"मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ।···"

बेचारी बालिका पिता के पैरों पर गिर पड़ी और सिसक-सिसककर रोने लगी। आँसुओं के बीच भर्राये स्वर में वह बोली—"पापा !··· पापा ···"

किरिल पेत्रविच् ने आशीर्वाद देने में जल्द बाजी की। फर्श पर पड़ी बालिका उठाकर सीधे गाड़ी में रख दी गई। उसकी बगल में एक महिला और एक दासी जा बैठी। गाड़ी सीधे गिर्जे को चली। दुलहा वहाँ पहले से ही इनके इंतजार में था। दुलहिन से मिलने वह बाहर आया, लेकिन दुलहिन के रूखे एवं अद्भुत वार्तालाप से अवाक रह गया। एक साथ वे सर्द और सूने गिर्जे में प्रविष्ट हुए। दरवाजे बन्द कर दिये गये। पुरोहित आया और उसी क्षण विवाह की विधि उसने आरम्भ कर दी। मरिया किरिलोव्ना ने देखा, किंतु सुना कुछ नहीं।

आज सबेरे से केवल एक ही विचार उसके दिल में जमा हुआ था। वह दुब्रोफ्स्की का इन्तजार कर रही थी। क्षण भर के लिये भी निराश न हुई। जब पुरोहित नियमित प्रश्नों के साथ उसकी ओर मुड़ा वह काँप उठी। भय के मारे ठंडी पढ़ गई। किंतु फिर भी उसने देर की। अब भी उसे आशा थी। उसके उत्तर की निष्फल प्रतीक्षा के बाद अंत में पुरोहित ने अपने अकाट्य शब्दों की घोषणा कर दी।

विवाह-विधि समाप्त हुई। उस पति के शीत चुम्बन का उसने अनुभव किया जिसे वह प्यार नहीं करती थी। उपस्थित लोगों की खुशामद भरी बधाइयाँ भी उसने सुनी, लेकिन तब भी उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसका जीवन सदा के लिये एक जंजीर से जकड़ा जा चुका है।

दुब्रोफ्स्की ने उसकी मदद नहीं की। कुमार ने कुछ कोमल शब्द उच्चारे जिन्हें वह समझ न सकी।

वे गिर्जे से विदा हुए। पक्रोफ्स्कये के किसान पौढ़ियों पर खड़े थे। मरिया ने एक चलती निगाह उन पर डाली। उसकी आँखों में वे ही पहले के करुणा भाव समा रहे थे। वर-वधू गाड़ी में बैठ गये। गाड़ी नियमित स्थान को चल पड़ी। किरिल पेत्रविच् वहाँ पहले ही पहुँच चुका था जिसमें कि वह उनसे मिल सके। अपनी तरुणी पत्नी को एकान्त में पाकर भी कुमार उसकी रुखाई से रंच मात्र भी विचलित न हुआ। अपने नागवार उद्घोषों और उपहास जनक आनन्दातिरेक के द्वारा उसने उसे तंग नहीं किया। उसकी बातें साधारण थीं, जिनके उत्तर आवश्यक नहीं थे।

इसी प्रकार लगभग सात मील का रास्ता उनका तै हुआ। घोड़े कच्ची सड़क पर जा रहे थे। अँग्रेजी स्प्रिंग पर गाड़ी बहुत कम हिल-डुल रही थी। सहसा पीछा करने की आवाजें सुनाई दीं। गाड़ी खड़ी हो गई। हथियार बन्द लोगों की भीड़ ने उसे घेर लिया। मुँह पर नकाब डाले एक आदमी आगे बढ़ा और उस तरफ का दरवाजा खोल दिया जिधर कुमार की तरुणी पत्नी बैठी थी, और बोला—"अब तुम आजाद हो! बाहर निकलो!"

"इसके मानी क्या हैं? तुम कौन हो?"— कुमार चिल्लया।

"यह दुब्रोफ्स्की है !"—कुमार की पत्नी बोली।

उपस्थित बुद्धि का परित्याग न करते हुए कुमार ने बगल के पाकेट से अपनी सफरी पिस्तौल निकाल उस नकाब पोश डाकू पर दाग दी। कुमार की पत्नी चीत्कार कर उठी। मारे डर के हथेलियों में उसने मुँह छिपा लिया। दुब्रोफ्स्की कंधे से घायल हो गया। खून की धारा बह निकली। एक क्षण भी बरबाद किये बिना कुमार ने दूसरी बार पिस्तौल सम्हाली, लेकिन उसे शूट नहीं करने दिया गया। गाड़ी के दरवाजे खोल दिये गये। बहुतेरे मजबूत हाथों ने उसे बाहर खींच लिया। उसकी पिस्तौल छीन ली। अब उसके ऊपर छुरे चमकने लगे।

"उसको मत छुओ !"— दुब्रोफ्स्की चिल्लाया और उसके सहयोगी निराश हो पीछे हट गये। वह पुनः बेचारी कुमार-पत्नी को संकेत करके बोला— "तुम आजाद हो !"

"नहीं ! अब मौका जाता रहा। मैं ब्याही जा चुकी हूँ। अब मैं कुमार वेरेइस्की की पत्नी हूँ !" उसने जवाब दिया।

निराश होकर दुब्रोफ्स्की चिल्लाया— "तुम क्या कह रही हो ? नहीं, तुम उसकी पत्नी नहीं हो। तुम्हारे साथ जबर्दस्ती की गई है। तुम कभी राजी नहीं हो सकती थीं ....."

उसने दृढ़ता से उत्तर दिया— "मैं राजी हो गई ! मैं वचन बद्ध हो चुकी हूँ। कुमार साहब मेरे पति हैं। अपने आदमियों से कहो उन्हें छोड़ दें, मुझे उनके साथ जाने दें। मैंने तुम्हें धोका

नहीं दिया। अन्त तक तुम्हारा इन्तजार करती रही ···· लेकिन अब, अब मैं कह देना चाहती हूँ कि मौका निकल गया। हमें छोड़ दो।"

लेकिन दुब्रोफ्स्की देर तक सुन न सका। घाव की पीड़ा और घातक भावोद्रेक ने उस पर काबू जमा लिया। गाड़ी के पहिये के निकट वह धम् से गिर पड़ा। डाकुओं ने उसे घेर लिया। उनसे कुछेक शब्द कहने में वह सफल हो सका। डाकुओं ने उसे उठाकर जीन पर रख दिया। दो आदमियों ने सहारा दिया, और तीसरा घोड़े की बागडोर पकड़े आगे चला। बाकी व्यक्ति बगल के रास्ते चंपत हो गये।

कुमार की गाड़ी सड़क पर पड़ी रही। घोड़े गाड़ी से अलग थे। नौकर बँधे पड़े थे। अपने सरदार के घायल होने के प्रति-शोध में डाकुओं ने खून की एक बूँद भी नहीं बहाई।

(१९)

घने जंगल के बीच! एक खुली-सँकरी जगह एक छोटा सा किला! उसमें बचाव के स्थान बने थे। बहुतेरी कोठरियाँ और झोंपड़ियाँ, जो चतुर्दिक एक खाई से घिरी थी। बहुत से आदमी हथियारों से लैस होकर घास पर बैठे थे। उन्हें देखते ही जाना जा सकता था कि वे रास्ते पर लूट-मार मचाकर अभी आये ही

हैं। उनके सिर खुले थे। एक विशाल बरतन के चारों ओर बैठे खाना खा रहे थे। एक छोटी सी तोपकी बगल में रक्षा-स्थान पर संतरी बैठा, अपने कपड़े पर पैवन्द लगा रहा था। उसकी सुई कलापूर्ण गति से चल रही थी, जिससे मालूम पड़ रहा था कि वह एक निपुण दरजी है। साथ-साथ वह अपनी तेज निगाह भी चारों ओर दौड़ा दिया करता।

यद्यपि पान-पात्रों में कई बार शराब उड़ेली जा चुकी थी, किन्तु उस समूह में एक अद्भुत नीरवता विराज रही थी। डाकुओं ने खाना समाप्त किया। मौन प्रार्थना करते एक-एक कर के उठते गये। कुछ अपनी झोंपड़ियों में चले गये कुछ दूर जंगल में सैर करने लगे, और कुछ रूसी खोज के अनुसार जरा नींद लेने के ख्याल से वहीं लेट गये।

संतरी ने अपना काम समाप्त किया। अपने पैबन्द लगे कपड़े को हिलाया। अपनी हस्तकला पर वह बड़ा खुश हो रहा था। इसके बाद अपनी सुई आस्तीन में घुसेड़ तोप के दोनों तरफ टाँगें फैलाकर वह खड़ा हो गया, और पूरे जोर से यह पुरानी करुण गाथा गाने लगा:—

"माँ वन देवि! हरित पत्र की वेणी मत हिला अभी"
न डाल विघ्न-बाधा वीर पुत्र की विचार-धारा में।..."

उसी क्षण एक झोंपड़ी का दरवाजा खुला। साफ-सुथरे कपड़ों में सजी सफेद टोपी पहने एक बुढ़िया दरवाजे पर आई और क्रोध

भरे स्वर में बोली—"स्त्योप्का ! चुप ! मालिक आराम कर रहे हैं, और तू इस तरह चिल्लाये जा रहा है ! तुम लोगों में विचार या दया का छूत नहीं !"

स्त्योप्का बोला—"मुझे दुख है पेत्रोव्ना ! बहुत अच्छा । अब मैं नहीं गाऊँगा । उन्हें सोने दो ! वे अच्छे हो जायँ । उन्हें आशीर्वाद दो ।"

बुढ़िया चली गई । स्त्योप्का रक्षा-स्थान के निकट चहल-कदमी करने लगा ।।

एक झोंपड़ी के पिछले कमरे में दुब्रोफस्की घायल हो बिछौने पर पड़ा था। उसी झोपड़ी में से बुढ़िया निकली थी । सामने मेज पर दुब्रोफस्की की पिस्तौल पड़ी थी । बिछौने के ऊपर तलवार लटक रही थी । फरश और दीवालें बहुमूल्य दरियों से ढकी थीं । एक महिला की चाँदी की ड्रेसिंग मेज और एक बड़ा आइना एक किनारे रखा था । दुब्रोफस्की के हाथ में एक खुली किताब थी, लेकिन उसके नेत्र बन्द थे । कमरे के पिछले भागसे बुढ़िया उसके चेहरे को निरन्तर देख रही थी, किन्तु यह समझ नहीं रही थी कि वह निद्रित है या विचारों में खोया हुआ ।

सहसा दुब्रोफ्स्की हिला । किले में खलबली मच गई । स्त्योप्का ने खिड़की में अपनी गर्दन पैठा दी । बड़े जोर से चिल्लाया—'बाबू व्लादीमीर अंद्रेयेविच ! अपने आदमियों ने संकेत किया है ! हमारा पीछा किया जा रहा है !"

दुब्रोफस्की बिछौने से उछल पड़ा। अपनी तलवार और पिस्तौलें लेकर बाहर आ गया। शोर-गुल मचाते आँगन में डाकू इकट्ठे हो गये। दुब्रोफस्की को देखते ही सबने चुप्पी साध ली।

"तुम सब आ गये?"—दुब्रोफस्की ने पूछा।

"सड़क पर गये हुओं के सिवा सब आ गये हैं।"—उन्होने जवाब दिया।

"तैयार हो जाओ!"—दुब्रोफस्की चिल्लाया। सब डाकू अपनी अमनी जगह चले गये।

उसी समय तीन आदमी दौड़ते हुए फाटक तक आ पहुँचे। इन्हें सड़क पर नियुक्त किया गया था। दुब्रोफस्की उनसे मिलने आगे बढ़ा।

"यह क्या मामला है?"—उसने पूछा।

"जंगल में सैनिक हैं! वे हमें घेर रहे हैं।"—उन्होंने जवाब दिया।

दुब्रोफस्की नें फाटक बन्द करने का आदेश दिया। स्वयं तोप की परीक्षा करने चला गया। जंगल में बहुत सी आवाजें एक साथ सुनी जा रही थीं डाकुओं का दल चुपचाप प्रतीक्षा कर रहा था। अचानक जंगल में से तीन-चार सैनिक प्रकट हुए और उसी क्षण पीछे छिप भी गये। अपनी बंदूकें हिलाकर अपने साथियों से उन्होंने संकेत किया।

"युद्ध के लिये तैयार हो जाओ !—दुब्रोफस्की ने कहा।

भीड़ में जरा खलबली मच गई। फिर शाँति बिराजने लगी। अपनी ओर बढ़ते शत्रुओं का शोर गुल वे सुन रहे थे। वृक्षों की झाड़ियों में यकायक हथियार चमक उठे। डेढ़ सौ के करीब सैनिक चिल्लाते हुए जंगल में से निकले और रक्षा-स्थान पर चढ़ दौड़े। दुब्रोफ्स्की ने बारूद गरम किया। निशाना सफल रहा। एक सैनिक का सिर धड़ से उड़ गया। दो घायल हुए। सैनिकों में घबड़ाहट फैल गई। लेकिन सेना-नायक आगे बढ़ा। सैनिक उसके पीछे पीछे चले और दौड़कर खाई में पहुँच गये। द्वन्द्व-युद्ध छिड़ गया। सैनिक रक्षा-स्थान पर पहले ही पहुंच चुके थे। डाकुओं का पलड़ा हल्का पड़ता जा रहता था। लेकिन दुब्रोफ्स्की स्वयं सना नायक के आगे आया। उसकी छाती में पिस्तौल गाड़कर उसने शूट कर दिया. सेना नायक पीठ के बल गिर पड़ा। कुछ सैनिक उसे उठाकर दौड़ते हुए जंगल में ले चले। अपने नायक से हाथ धोकर दूसरे सैनिक चुपचाप खड़े हो गये। उनकी क्षणिक घबड़ाहट से उत्साहित होकर डाकुओं ने उन्हें पीछे की ओर खाई में धकेल दिया। सैनिक भाग खड़े हुए। कोलाहल करते हुए डाकुओं ने उनका पीछा किया विजय निर्णायक रही।

जब दुब्रोफ़्स्की को विश्वास हो गया कि शत्रु पूर्ण-रूपेण विनष्ट कर दिया गया अपने आदमियों को पीछे लौटने का उसने आदेश दिया। उन्हें घायलों को सम्हालने का हुक्म दिया। स्वयं

किले में बंद हो गया। संतरियों की संख्या दूनी कर दी। किसी को वहाँ से जाने की मनाही कर दी।

इन घटनाओं ने दुब्रोफस्की की साहसिक डकैती की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। उसके पते के सम्बन्ध में जाँच पड़ताल की गई। उसे मृत या जीवित पकड़ने के लिये सेना की एक टुकड़ी भेजी गई। उसके दल के बहुतेरे पकड़े गये। लेकिन उन सबों ने बताया कि दुब्रोफस्की अब उनके बीच नहीं रहता उस युद्ध के कुछ दिन बाद दुब्रोफस्की ने सभी अनुयायियों को एकत्र किया। उनको बताया कि वह सदा के लिये उनसे अलग हो रहा है। और अपने जीवन यापन का मार्ग बदल देने के लिये उन्हें निम्नलिखित सलाह दी:—

"मेरे कमान के अन्दर तुम लोग धनवान बन गये हो तुनमें से हर एक के पास पासपोर्ट है। उसके सहारे आसानी से किसी सुदूर प्राँत में निकल जा सकते हो। वहां ईमानदारी का काम करके बचे जीवन को सुख से बिता सकते हो। लेकिन तुम सब बदमाश हो। शायद इस काम को छोड़ना नहीं चाहोगे।" इस वक्तव्य के बाद वह उनसे बिदा हो गया। केवल एक आदमी को उसने साथ लिया। किसी को पता नहीं कि उसका क्या हुआ।

पहले तो इस वक्तव्य की सचाई में संदेह मालूम पड़ा। अपने सरदार के प्रति डाकुओं की वफादारी सुप्रसिद्ध थी। लोग सोचते वे अपने सरदार को बचाने की चेष्टा कर रहे हैं, लेकिन परवर्ती

घटनाओं से उनके शब्द सही साबित हुए। भयानक हमले, आगजनी, और राहजनी सब बंद हो गये। सड़कें पुनः सुरक्षित बन गईं। अन्य सूत्रों से मालूम पड़ा कि दुब्रोफ्स्की तब तक रूस छोड़ चुका था।

